लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–17

ओरियन्ट की कहानियों की किताब

विलहैल्म हौफ़

1855

अंग्रेजी अनुवाद जी पी क्वैकनबौस – **1855**

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

जून **2019**

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-17
Book Title: Orient Ki Kahaniyon Ki Kitab (The Oriental Story Book)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Arabia

विंडसर, कैनेडा

जून 2019

Contents

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2000 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। इनमें से भी सब पुस्तकों का अनुवाद नहीं मिलता और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में निम्न प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें और
2. 19वीं सदी और उससे पहले की लोक कथाओं की पुस्तकें

ये पुस्तकें पुस्तकों के रूप में ही अनुवादित हैं लेकिन कवर टू कवर नहीं। उनमें लिखी हुई केवल कहानियों का अनुवाद किया गया है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
ऐप्रिल **2019**

ओरिऐन्ट की कहानी की किताब

ये लोक कथाऐं एक पुस्तक का अनुवाद है।[2] ओरियन्टल देशों में अरब ईरान ईराक भारत आदि देश आते हैं। इससे पहले हमने अरब देश की एक पुस्तक जो चार्ल्स जौन टिबिट्स की लिखी हुई थी का अनुवाद प्रकाशित किया था।[3] उस पुस्तक को चुनने का कारण केवल यही नहीं था कि वह सन् **1900** से पहले की लिखी हुई थी बल्कि उसको अनुवाद के लिये चुनने का एक कारण और भी था। और वह था कि उसमें सिद्दी कुर की कहानियाँ अंग्रेजी में पहली बार प्रकाशित की गयी थीं। इसका अर्थ यह हुआ कि सिद्दी कुर की कहानियाँ पहली बार उसी पुस्तक में मिलती हैं और उसी पुस्तक के द्वारा संसार भर में फैलीं।। आज से ये कहानियाँ आपको हिन्दी में भी मिलेंगी। ये कहानियाँ हमारे भारत के विकम बेताल की कहानियों से बहुत मिलती जुलती हैं।

ओरिऐन्ट यानी अरब से ले कर मंगोलिया तक भारत के ऊपर से जाने वाली पट्टी में जो देश आते हैं उनकी कहानियों का यह एक और संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। यह रास्ता पुराने समय में सिल्क रोड कहलाती थी। यह संग्रह भी एक पुस्तक का अनुवाद है जो टिबिट्स की पुस्तक से भी बहुत पुरानी है – **34** साल पुरानी। इसमें केवल सात लम्बी कहानियाँ दी गयी हैं। ये कहानियाँ भी अरेबियन नाइट्स, पैन्टामिरोन, स्ट्रापरोला की रातें और डैकामिरोन पुस्तकों की शैली पर ही लिखी गयी है।

इसमें एक कारवाँ है जिसमें पाँच सौदागर और एक शाही परिवार का आदमी यात्रा कर रहे हैं। रेगिस्तान में दिन में बहुत गरम होता है सो यात्रा करना कठिन होता है सो लोग अक्सर रात को यात्रा करते हैं। तो इस पुस्तक में दोपहर के समय को हँसी खुशी काटने के लिये सात कहानियाँ सुनायी जाती हैं। सातों कहानियाँ पाँच सौदागर और एक शाही परिवार का आदमी सुनाते हैं। पहली कहानी शाही परिवार का आदमी सुनाता है और फिर उसके बाद बचे हुए पाँच सौदागर अपनी अपनी कहानी सुनाते हैं।

हमारे लिये यह गर्व की बात है कि आज हम इतनी पुरानी लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं। ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी। तो लीजिये प्रस्तुत हे आपके हाथों में **165** साल पुरानी कथाऐं।

---

[2] "The Oriental Story Book", by Wilhelm Hauff. Translated into English by GP Quakenbos. NY: D Applrton. 1855. 7 Folktales. Available on the following Web Site : https://www.worldoftales.com/Oriental_story_book.html

[3] "Folk-lore and Legends : Oriental. By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889. 13 Folktales. Available in English at the following Web Sites : https://www.worldoftales.com/Oriental_folktales.html **and** http://www.sacred-texts.com/asia/flo/index.htm **and at** https://fairytalez.com/cobbler-astrologer/ presented in a different order.
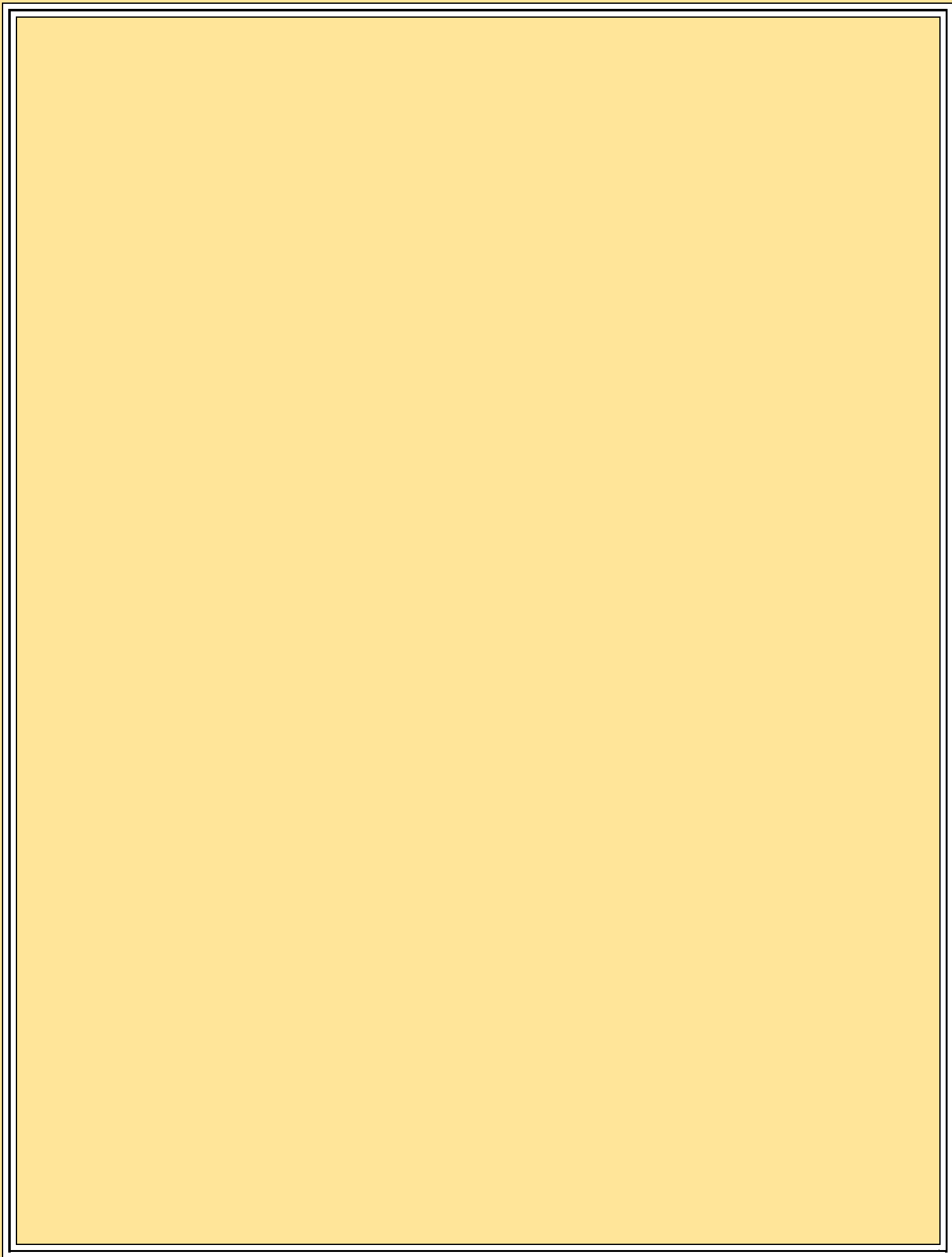
कारवॉ–परिचय[4]

एक बार बहुत दूर के एक राज्य में जहॉ के लिये यह कहा जाता है कि उस राज्य में सूरज कभी नहीं डूबता था समय के शुरू से अब तक रानी फैन्टैसी[5] राज करती थी। कई सौ सालों तक वह अपनी जनता पर अपनी कृपा लुटाती रही। जो उसको जानते थे वे उसको बहुत प्यार करते थे उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे।

रानी का दिल इतना बड़ा था कि वह किसी को अपने राज्य में आने से मना कर ही नहीं सकती थी। वह खुद भी अपनी शाही पोशाक में सज कर आसमान से उतरती थी। वह हमेशा सुन्दर और नौजवान बनी रहने वाली थी।

क्योंकि उसने उन लोगों की कहानियॉ सुनी थीं जो अक्सर दुखी रहते थे तो उसने अपने राज्य से उन लोगों को भेंटें भी भेजी थीं। और जबसे वह सुन्दर रानी धरती पर आयी थी लोग अपना काम खुशी से करते थे और अपनी अपनी ज़िन्दगियों से खुश थे।

उसके बच्चे जो उसी की तरह सुन्दर थे उनको भी उसने धरती पर चारों तरफ खुशी फैलाने के लिये भेज रखा था।

---

[4] Caravan

[5] Phantasie – name of the Queen

एक दिन उसकी सबसे बड़ी बेटी मैरख़ैन[6] या मार्चैन धरती से उसके पास जल्दी जल्दी दौड़ी आयी। उसने देखा कि उसकी बेटी बहुत दुखी है। कभी कभी उसको लगता कि ऑसुओं ने उसकी ऑखों को बहुत छोटा कर दिया है।

रानी ने उससे प्यार से पूछा — "मेरी प्यारी बेटी क्या बात है जबसे तू वहॉ गयी है तभी से तू दुखी है। क्या तू अपना दुख अपनी मॉ को नहीं बतायेगी?"

मैरख़ैन बोली — "ओह मॉ। मैं तुम्हें यह बात कभी नहीं बताती अगर मुझे यह पता होता कि मेरा दुख तुम्हारा भी है।"

सुन्दर रानी बोली — "बता बेटी बता। दुख एक पत्थर की तरह होता है। जो आदमी उसको अकेले ढोता है वह उसको और दबाता है जबकि दो लोग उसको आसानी से ले जाते हैं।"

मैरख़ैन बोली — "अगर तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो सुनो। यह तो तुम जानती हो कि मैं कितनी ख़ुशी से आदमियों के साथ मिलजुल जाती हूॅ। मैं गरीबों की झोंपड़ियों के सामने भी कितनी ख़ुशी से बैठी रहती हूॅ।

पहले उनके काम करने के बाद जब भी मैं वापस आती थी तब वे पहले मुझे सलाम करते थे और बाद में मेरी तरफ देखते थे और

[6] Marchen – name of Queen's eldest daughter. Märchen is the German diminutive of the obsolete German word Mär, meaning "news, tale". It may refer to: A fairy tale, a type of short story that typically features folkloric characters, such as fairies, goblins, elves, trolls, dwarves, giants or gnomes, and usually magic or enchantments. This word was first used for folktale n 1871.

जब मैं चली जाती थी तब मुस्कुराते थे और सन्तुष्ट दिखायी देते थे। पर आजकल ऐसा नहीं होता।"

रानी ने मैरख़ैन के गीले गाल को सहलाते हुए कहा जिस पर उसके ऑसू की एक बूॅद ठहरी हुई थी — "लेकिन ऐसा भी तो हो सकता है तुझे बस ऐसा लगा हो।"

मैरख़ैन फिर बोली — "मेरा विश्वास करो मॉ। मैं वह सब जानती हूॅ। वे लोग मुझे अब वैसा प्यार नहीं करते हैं। अब मैं जिधर भी जाती हूॅ लोग मुझे अनजानी निगाहों से देखते हैं। कोई मुझे देख कर खुश नहीं होता। जो मुझे पहले प्यार से मिलते थे वे अब मुझे देख कर हॅसते हैं और चालाकी से नजरें बचा जाते हैं।"

रानी ने आगे झुक कर अपना सिर उसके हाथें में रखा और कुछ पल चुप रही फिर बोली — "और मैरख़ैन फिर यह हुआ कैसे कि नीचे के लोग इतना बदल गये।"

मैरख़ैन बोली — "ओ रानी फैन्टैसी। लोगों ने जगह जगह पहरेदार रख दिये हैं जो हर उस चीज़ को अपनी तेज़ नजरों से देखते और जॉचते है जो तुम्हारे राज्य से वहॉ जाती है। और अगर कोई ऐसी चीज़ वहॉ पहॅुचती है जो उनके मन को नहीं भाती तो वे ज़ोर से चिल्लाते हैं और उसको मार देते हैं।

या फिर उनको दूसरे लोगों को सौंप देते हैं जो उनकी बोली समझते हैं। फिर उनको उनसे कोई प्यार नहीं मिलता कोई विश्वास

नहीं मिलता। ओह मेरे भाई लोग सपने कितने खुशकिस्मत हैं कि वे खुशी से कूद जाते हैं और धीरे से जमीन पर उतर जाते हैं।

वे उन चालाक लोगों की भी कोई परवाह नहीं करते जो उन्हें बुनते हैं और रंगते हैं। वे केवल उनके दिलों को खुश करते हैं और उनकी ऑखों में चमक लाते हैं।"

रानी बोली — "तेरे भाइयों के पॉव बहुत हल्के पड़ते हैं। और मेरी बच्ची तुझ उनसे जलने की तो कोई वजह ही नहीं है। मैं इन सीमा पर खड़े हुए लोगों को अच्छी तरह जानती हूँ। वे लोग उन लोगों को बाहर भेजने में कोई गलत काम नहीं कर रहे।

वहॉ कितने सारे तो अपनी शान बघारने वाले आये जो यह कहते थे कि वे मेरे राज्य से आये हैं पर वे हमें बहुत नीचा देखते हैं जैसे वे किसी पहाड़ से हमें देख रहे हों।"

मैरख़ैन रोते हुए बोली — "पर इस बात के लिये उन्हें मुझे, तुम्हारी अपनी बेटी को क्यों तंग करना चाहिये। आह काश तुम जानतीं कि उन्होंने मेरे साथ किस तरीके का व्यवहार किया। उन्होंने मुझे बूढ़ी नौकरानी बोला और धमकी दी कि वे मुझे फिर अन्दर नहीं आने देंगे।"

यह सुन कर रानी के गाल गुस्से से लाल हो गये। वह बोली — "क्या कहा मेरी बच्ची कि वे तुझे फिर अन्दर नहीं आने देंगे? पर यह तो मैंने पहले ही देखा हुआ है कि जब भी ऐसा कुछ होता है तो हमारी नीच बहिन ने हमको बहुत बदनाम किया है।"

मैरख़ैन बोली — “क्या कहा फैशन? यह तो हो ही नहीं सकता। वह तो हमेशा ही हमसे दोस्ताना बरताव करती थी।

रानी बोली — “मैं उसे जानती हूँ वह झूठी है। पर मेरी बेटी, उसको उसके इस व्यवहार के बावजूद एक बार और परख। जो आदमी भला करना चाहता है उसे आराम नहीं करना चाहिये।”

मैरख़ैन बोली — “ओह मॉ पर मान लो अगर उन्होंने मुझे फिर से वापस भेज दिया तो। या फिर मुझ पर उन्होंने इलजाम लगाया तो ताकि लोग मुझे एक कोने में डाल दें मेरा अपमान करें।”

“अगर बड़े लोग जो फैशन में सब कुछ भूले हुए हैं तेरी कोई कीमत नहीं लगाते तब वे तुझे एक जवान स्त्री में बदल देंगे क्योंकि वे मेरे बहुत प्यारे लोग हैं। मैं उनको तेरे भाई सपनों के हाथ बहुत सुन्दर सुन्दर तस्वीरें भेजती हूँ।

मैं खुद भी कई बार उनके ऊपर घूमती रहती हूँ और उनके साथ मजेदार खेल खेलती रहती हूँ। मैंने देखा है कि किस तरह से वे रात को मेरे सितारों को देख कर हँसते हैं। और सुबह को जब सारे संसार में मेरी चमकती हुई किरनें फैलती हैं तो वे किस तरह से ताली बजाते हुए खुश होते हैं।

इसके अलावा जब वे ज़्यादा बड़े हो जाते हैं तभी भी वे मुझे प्यार करते हैं। तब मैं सुन्दर सुन्दर लड़कियों से भिन्न भिन्न तरह के फूलों की मालाऐं बनवाती हूँ। खेलने कूदने वाले लड़के शान्त हो जाते हैं। और तब मैं पहाड़ की चोटी पर उनके पास बैठती हूँ।

दूर नीले पहाड़ों की कोहरे भरी दुनियाँ में शाम के लाल रंग में रंगे हुए बादलों में घुड़सवारों की और तीर्थयात्रा पर जाने वालों की तस्वीर बनाती हूँ ”

मैरख़ैन यह सुन कर बहुत प्रभावित हुई और बोली — “ऐसा ही हो। मैं उनके साथ एक बार और कोशिश करके देखती हूँ।”

रानी बोली — “ठीक है मेरे अच्छे बच्चे। तुम उनके पास जाओ। बल्कि मैं तुमको और बहुत अच्छे कपड़े पहना देती हूँ ताकि तुम छोटे छोटे बच्चों को और अच्छी लग सको और बूढ़े लोग भी तुम्हें दूर न भगा सकें। देखो मैं तुमको अब यह आलमनाक[7] वाली पोशाक देती हूँ।”

“माँ आलमनाक वाली पोशाक? मुझे तो इस तरह वहाँ सब लोगों के सामने परेड करने में शरम आयेगी।”

तब रानी ने इशारा किया और उसके नौकर आलमनाक की बहुत कीमती पोशाक ले आये। उसका कपड़ा बहुत ही चमकीले रंगों के धागों से बुना हुआ था और उसके अन्दर बहुत सारी तस्वीरें बनी हुई थीं।

उसकी दासियों ने उसके लम्बे बालों की चोटी बनायी। उसके पैरों में सुनहरे जूते पहनाये और उसको कपड़े पहनाये। जब यह सब हो गया तो बेचारी सीधी सादी मार्चेन तो अपना सिर भी ऊपर न उठा सकी।

---

[7] Almanach or almanac is a kind of calendar normally for farmers.

पर उसकी मॉ उसको देख कर बहुत सन्तुष्ट थी। उसने उसको अपनी बॉहों में ले लिया और बोली — "जा बेटी जा। मेरा आशीर्वाद तेरे साथ है। अगर वे तेरा अपमान करें तो तू तुरन्त ही मेरे पास चली आना। हो सकता है कि बाद की पीढ़ियॉ जो प्रकृति को ज़्यादा पसन्द करती हों फिर तुझे भी ज़्यादा पसन्द करें।"

फ़ैन्टैसी ने यह सब मैरख़ैन से कहा और मैरख़ैन नीचे की तरफ चल दी। धड़कते दिल से उसने एक शहर में प्रवेश किया जहॉ चालाक पहरेदार रहते थे।

उसने अपना सिर धरती की तरफ किया अपने बढ़िया कपड़े अपने शरीर के चारों तरफ कस कर लपेटे और कॉपते कदमों से शहर के फाटक के अन्दर कदम रखा।

तभी कोई अपनी खुरदरी आवाज में बोला — "वह देखो वह एक नयी आलमनाक आ रही है।"

जैसे ही मैरख़ैन ने यह सुना तो वह तो कॉप गयी। बहुत सारे बूढ़े लोग उसकी तरफ दौड़े। उनकी मुट्ठियों में तीखे चुभने वाले पंख थे।

एक झुंड उसकी तरफ आ गया और अपने खुरदरे हाथों से उसको ठोढ़ी से पकड़ लिया और कहा — "ज़रा अपना सिर तो उठाओ मिस्टर आलमनाक। ताकि हम तुम्हारी ऑखों में देख कर यह बता सकें कि तुम ठीक हो या नहीं।"

मैरख़ैन ने शरमाते हुए अपना छोटा सा सिर ऊपर उठाया और अपनी काली काली आँखें उठा कर ऊपर देखा। उसको देखते ही पहरेदार चिल्लाये — "मैरख़ैन। हमें यह शक क्यों होना चाहिये कि यहाँ कोई और था। अब तुम इस पोशाक में कैसे?"

मार्चेन बोली — "माँ ने मुझे यह पोशाक पहनायी है।"

पहरेदारों ने अपने अपने नुकीले पंख ऊपर उठाते हुए कहा — "इसका मतलब है कि वह तुम्हें हमारे अन्दर छिपा कर भेजना चाह रही है। पर इस बार ऐसा नहीं होगा। तुम हमारे रास्ते से हट जाओ तुम यहाँ से चली जाओ।"

मैरख़ैन ने उनसे विनती की — "पर अबकी बार में केवल बच्चों के पास जाऊँगी। मुझे यकीन है कि आप लोग मुझे इसकी इजाज़त जरूर दे देंगे।"

एक बोला — "तुम वहाँ ठहरना नहीं। हमारी धरती पर ये छोटी छोटी चीज़ें बस अब बहुत हो गयीं। ये सब हमारे बच्चों के लिये बेकार की चीज़ें हैं।"

दूसरा बोला — "अच्छा चलो देखते हैं कि इस बार यह क्या जानती है।"

इस पर बाकी के लोग चिल्लाये — "ठीक है तो अब तुम बताओ कि तुम क्या जानती हो। पर जल्दी करो क्योंकि हमारे पास तुम्हारे लिये बहुत समय नहीं है।

मैरख़ैन ने अपने हाथ फैलाये और अपनी पहली उँगली से हवा में कई शक्लें बनायीं। धीरे धीरे वे शक्लें हिलीं – कारवाँ, बढ़िया घोड़े, बहुत अच्छे कीमती कपड़े पहने घुड़सवार, रेत पर बहुत सारे तम्बू, चिड़ियें, तूफानी समुद्र पर झूलते हुए जहाज़, शान्त जंगल, घनी बसी बस्तियाँ, चौड़ी चौड़ी सड़कें, लड़ाइयाँ, शान्ति से इधर उधर घूमती हुई जनजातियाँ। जैसे उनके सामने कई तस्वीरें ज़िन्दा हो उठी हों।

मैरख़ैन ने जिसने अपनी उत्सुकता में ये सब तस्वीरें बनायी थीं यह ध्यान ही नहीं दिया कि इस बीच फाटक पर खड़े पहरेदार एक के बाद एक सब सोते चले जा रहे थे।

इसके बाद जब वह कुछ और नयी बात उन्हें बताने जा रही थी कि एक आदमी दोस्ती के इरादे से उसकी तरफ बढ़ा और उसका हाथ पकड़ कर उसको सोते हुए लोगों को दिखाते हुए बोला — "इधर देखो मैरख़ैन। इन लोगों के लिये तुम्हारी बनायी हुई इन भिन्न भिन्न प्रकार की चीज़ों की कोई कीमत नहीं।

अब तुम चुपचाप दरवाजे से अन्दर खिसक जाओ। उनको यह शक भी नहीं होगा कि तुम यहाँ शहर में हो और तुम आसानी और शान्ति से अपने रास्ते जा सकोगी।

मैं तुम्हें अपने बच्चों के पास ले जाऊँगा। मैं तुम्हें अपने घर में शान्ति से रखूँगा जहाँ तुम आराम से अपनी मरजी से रह सकोगी। जब कभी मेरे बच्चों ने अपने अपने पाठ पढ़ लिये होंगे तो मैं उनको

तुम्हारे पास खेलने भेज दूँगा और तुम्हारी सेवा भी करूँगा। क्या तुम इस बात पर राजी हो?”

मैरख़ैन बोली — “ओह मुझे तुम्हारे बच्चों के साथ रहने में कितनी ख़ुशी होगी। तुम देखना कि मैं उनके साथ कितनी ख़ुशी के साथ खेलूँगी। मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगी कि वे ख़ुश रहें।”

भले आदमी ने दोस्ताना अन्दाज़ में अपना सिर हिलाया और उसको हाथ पकड़ कर उसे सोते हुए आदमियों के पैरों के ऊपर से निकाल कर ले गया।

जब मैरख़ैन सुरक्षित रूप से वहाँ से निकल गयी तो उसने मुस्कुरा कर अपने चारों तरफ देखा और फाटक के अन्दर खिसक गयी।

1 कारवाँ[8]

एक बार की बात है कि कहीं से एक बहुत बड़ा कारवाँ गुजरा। उस जमीन के ऊपर जहाँ केवल रेत और आसमान ही दिखायी देता था केवल ऊँटों की छोटी छोटी घंटियों की आवाज और घोड़ों की चाँदी की घंटियों की आवाज ही सुनायी पड़ रही थी।

और वहाँ था कि बहुत घना रेत का बादल जिससे उनके आने की सूचना मिलती थी। जब कोई हवा का झोंका उस बादल को फाड़ देता तो उसमें चल रहे लोगों के चमकदार हथियार और चमकीली पोशाकों की चमक से आँखें चौंधिया जाती।

एक आदमी ने ऐसा ही एक कारवाँ देखा। वह अपने घोड़े पर तिरछा भागा चला जा रहा था। वह एक सुन्दर अरबी घोड़े पर सवार था। उस घोड़े पर चीते की खाल पड़ी हुई थी। उसके गहरे लाल रंग की पट्टी से चाँदी की घंटियाँ लटकी हुई थीं और उसके सिर पर हैरों चिड़िया के पंखों का एक मुकुट सा था।

यह घुड़सवार एक शाही परिवार से आता था और इसकी पहनी हुई पोशाक आदि सब इसके घोड़े की शान से मिलती जुलती थी। उसके सिर पर सफेद पगड़ी थी जो सुनहरे काम से चमक रही थी। उसकी चौड़ी पतलून[9] चमकीले लाल रंग की थी। उसकी कमर से

---

[8] The Caravan. (Tale No 1)

[9] Pantaloon is an old word for modern pants.

एक चमकती हुई तलवार लटक रही थी जिसकी मूठ बहुत शानदार थी।

उसकी पगड़ी उसके माथे पर नीचे की तरफ कुछ झुकी हुई रखी हुई थी। उसकी काली घनी भौंहों के नीचे उसकी काली आँखें चमक रही थीं। उसकी लम्बी दाढ़ी उसकी झुकी हुई नाक के नीचे लटक रही थी। इस सबसे वह एक लापरवाह सा आदमी लग रहा था।

जब वह करीब **50** कदम और आगे आ गया तो कारवाँ में सबसे आगे चलने वाले लोग उसके पास आ गये। बस उसने घोड़े को एक एड़ लगायी तो वह तो कारवाँ के आगे ही पहुँच गया।

कारवाँ वाले लोगों के लिये यह एक बड़ी नयी सी बात थी कि एक अकेला घुड़सवार रेगिस्तान से हो कर यात्रा कर रहा था। गार्ड को लगा कि उनके ऊपर हमला होने वाला है सो उन्होंने अपने अपने भाले सँभाल लिये।

घुड़सवार ने जब अपने लिये उनका इस तरह का बरताव करते देखा तो बोला — “इसका क्या मतलब है? क्या तुम लोग यह सोच रहे थे कि एक अकेला आदमी एक कारवाँ पर हमला करेगा?”

अपने व्यवहार पर झिझकते हुए उन्होंने अपने भाले नीचे कर लिये। घुड़सवार ने उनसे पूछा — “तुम्हारा सरदार कौन है?”

वे बोले — “इसका कोई एक सरदार नहीं है। यह कारवॉ तो कई सौदागरों का मिल कर है जो मक्का[10] से अपने देश जाते हैं। हम रेगिस्तान में उनके साथ जाते हैं। क्योंकि जाते समय उनको अक्सर ऐसे बदमाश मिल जाते है जो उनको रास्ते में बहुत तंग करते हैं।”

घुड़सवार बोला — “तो चलो मुझे तुम उन्हीं के पास ले चलो।”

दूसरा बोला — “पर यह अभी नहीं हो सकता क्योंकि हमें जल्दी ही यहॉ से आगे चले जाना चाहिये। क्योंकि सौदागर लोग अभी भी हमसे चौथाई मील पीछे हैं। अगर तुम हमारे साथ तब तक चलने को तैयार हो जब तक कि हम दोपहर के आराम के लिये रुकें तो तुम हमारे साथ चल सकते हो।”

अजनबी घुड़सवार कुछ नहीं बोला। उसने एक लम्बा सा पाइप निकाला जो उसके घोड़े की जीन के साथ लगा हुआ था और उसको धीरे धीरे पीते हुए उस आदमी के साथ चलना शुरू कर दिया।

अब उस आदमी की समझ में न आये कि वह उस अजनबी के बारे में क्या सोचे। उसकी तो उससे उसका नाम पूछने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी। दोनों बात करने लगे तो आदमी ने अजनबी घुड़सवार से कहा — “तुम जो यह तम्बाकू पी रहे हो यह तो बड़ा अच्छा तम्बाकू है।” या फिर “तुम्हारा घोड़ा तो बहुत अच्छी नस्ल

[10] Mecca is an important city in Saudi Arabia

का है।" घुड़सवार भी उसकी ऐसी बातों के केवल हॉ हॉ में सादे से जबाब देता रहा।

चलते चलते वे उस जगह पर आ गये जहॉ उनको दोपहर में आराम करना था।

सरदार ने अपने कुछ आदमियों को उस जगह को देखने भालने के लिये भेजा जबकि वह खुद कारवॉ का इन्तजार करते हुए उस अजनबी घुड़सवार के साथ ही रहा।

पहले **30** ऊँट सामने से गुजरे जिनकी हथियारबन्द लोग रक्षा कर रहे थे। इनके बाद पॉच घोड़ों पर सवार पॉच सौदागर आये जिनका वह कारवॉ था।

ये सब उम्र में बड़े थे गम्भीर थे हालॉकि एक उनमें से सबसे छोटा था खुश था और ज़्यादा चुलबुला नजर आ रहा था। और सबसे पीछे बहुत सारे ऊँट और घोड़े चले आ रहे थे।

आराम करने वाली जगह पर आ कर तम्बू लगाये गये घोड़ों और ऊँटों को चारों तरफ बॉध दिया गया। बीच में नीले रेशम का एक तम्बू था जिसमे सौदागरों ने अजनबी से मुलाकात की। काले दास उनके लिये खाने पीने की चीज़ें ला रहे थे।

नौजवान सौदागर ने सरदार से पूछा — "तुम हमारे पास किसको ले कर आये हो?"

सो इससे पहले कि सरदार कुछ भी जवाब देता अजनबी बोला — "मेरा नाम सलीम बरूच[11] है और मैं बगदाद[12] का हूँ। मैं जब मक्का जा रहा था तब डाकुओं के एक गिरोह ने मुझे बन्दी बना लिया था पर तीन दिन पहले ही मैं किसी तरह से उनसे आजाद होने में कामयाब हो गया।

अपने ताकतवर मुहम्मद साहब[13] ने मुझे बहुत दूर का सुनने की ताकत दी है इससे मैं तुम लोगों के कारवॉ के ऊँटों की छोटी छोटी घंटियों की आवाज सुन सका और इस तरह से मैं तुम लोगों के पास चला आया। मेहरबानी करके मुझे अपने साथ यात्रा करने की इजाज़त दे दो।

अगर तुम मेरे बारे में कुछ ऐसा वैसा सोचते हो तो तुम यह सोच लेना कि तुम लोग यह सुरक्षा किसी ऐसे वैसे आदमी को नहीं दे रहे। जब हम बगदाद पहुँच जायेंगे तो मैं तुम्हें बहुत सारा धन इनाम में दूँगा क्योंकि मैं बड़े वजीर का भतीजा हूँ।"

उन सौदागरों जो सबसे बड़ा सरदार था उसने बात को आगे बढ़ाया और बोला — "तुम्हारा स्वागत है सलीम बरूच। यह हमारे लिये बड़ी खुशी की बात है कि हम तुम्हारी सहायता कर सके। पर सबसे पहले आओ बैठ कर हमारे साथ खाना खा लो।"

---

[11] Selim Baruch – name of the stranger horse rider

[12] Bagadad is the capital of Iraq.

[13] Used for the word "Prophet", since Muhammad Sahab was the Prophet of Islam that is why the name of Muhammad Sahab is used here.

सो सलीम बरूच उन सौदागरों के साथ बैठ गया और खाया और पिया। खाना खाने के बाद दासों ने उन सबके सामने से मेजें हटा दीं और लम्बे लम्बे पाइप[14] और तुर्क के मीठे शरबत के गिलास ले आये।

सौदागर लोग कुछ देर शान्त बैठे रहे और हुक्के से नीले काले रंग का धुँआ उड़ाते रहे और उन्हें हवा में गायब हो जाते देखते रहे।

आखिर यह शान्ति नौजवान सौदागर ने तोड़ी — "हम लोग यहाँ तीन दिन रुकेंगे – घोड़े की पीठ पर और मेजों पर, बिना कुछ किये धरे बस यूँ ही समय गुजारने के लिये। मुझे तो यह सब थका देने वाला काम लग रहा है क्योंकि मुझे तो खाना खाने के बाद नाच गाना देखने सुनने की आदत है। क्या तुम लोग ओ दोस्तों यह समय गुजारने का कोई और अच्छा रास्ता नहीं जानते?"

चार बड़े सौदागरों ने अपने मुँह से धुँए के छल्ले उड़ाये और लगा कि वे लोग इस बात को गम्भीरतापूर्वक सोचने लगे।

कि इतने में अजनबी बोल पड़ा — "अगर मुझे बोलने की इजाज़त दी जाये तो मेरे पास आप सबके लिये एक बहुत अच्छी सलाह है। इस आराम की जगह में हममें से एक आदमी दूसरों का मन बहलाने के लिये कुछ

[14] Translated for the words "Long Pipes" – they may mean Hukkah also. See its picture above.

सुनाये। मेरा ख्याल है कि इस तरह से हमारा समय जल्दी और आनन्द से गुजर जायेगा।"

उम्र में सबसे बड़ा सौदागर अश्मत[15] बोला — "सलीम बरूच यह तुमने ठीक बोला। तुम्हारी सलाह हमें मंजूर है।"

सलीम बोला — "मुझे यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि मेरी सलाह तुम्हें पसन्द आयी। और तुम यह भी देखना कि यह कोई बुरी सलाह भी नहीं रही इसलिये सुनाने का यह काम पहले मैं ही शुरू करता हूँ।"

यह सुन कर पाँचों सौदागर बहुत खुश हुए और और पास आ कर बैठ गये। अजनबी को उन्होंने अपने बीच में बिठा लिया। दासों ने उनके प्याले भर दिये उनके हुक्के भर दिये उनके लिये आग फिर से जला दी गयी।

सलीम ने अपना गला साफ किया शरबत का एक बड़ा सा घूँट पिया अपनी लम्बी दाढ़ी पर हाथ फेर कर बोला तो लो सुनो खलीफा बगुले की कहानी[16]।

[15] Achmet – name of the oldest merchant

[16] The History of Caliph Stork – told by Selim

2 खलीफा बगुले की कहानी[17]

एक बार की बात है कि बगदाद[18] में एक खलीफा रशीद[19] हुआ करते थे। एक दिन वह अपने सिंहासन पर बैठे हुए थे। क्योंकि दिन बहुत गरम था सो वह कुछ देर सो कर अभी अभी उठे थे। इस सोने के बाद वह अब काफी तरोताजा और खुश लग रहे थे।

वह अपनी गुलाब की लकड़ी का बना हुआ हुक्का[20] पी रहे थे। कभी कभी कौफी का एकाध घूँट पी लेते थे जो अभी अभी उनका एक दास उनके लिये रख कर गया था। कभी कभी अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर लेते थे और काफी सन्तुष्ट सा लग रहे थे क्योंकि उनको कौफी की खुशबू बहुत अच्छी लग रही थी।

अगर एक शब्द में कहा जाये तो खलीफा बहुत खुश मूड में थे। इस समय उनसे कोई भी कुछ भी कह सकता था। क्योंकि इस समय वह हमेशा ही बड़े हल्के मूड में रहा करते थे इसलिये उनका बड़ा वजीर मंसूर[21] उनसे रोज इसी समय मिला करता था।

उस शाम भी वह उनसे मिलने आया हुआ था पर वह कुछ गम्भीर सा लग रहा था जो उसकी आदत के खिलाफ था।

---

[17] The History of Caliph Stork. (Tale No 1) Told by Selim.

[18] Bagadad is the capital of Iraq

[19] Caliph Chasid – Caliph is called Khalifa in Urdu ans they are the kings in Iraq.

[20] Translated for the word "Long Pipe" – in Urdu it is called Hukkah – see its picture above.

[21] Grand-Vizier Mansor – Prime Minister Mansur

खलीफा ने एक पल के लिये अपने हुक्के का पाइप अपने मुँह से निकाला और अपने वजीर से बोले — “बजीर साहब आप इतने दुखी से क्यों हैं। किस विचार में खोये हुए हैं?”

मंसूर ने अपने हाथ अपनी छाती पर रखे और खलीफा के सामने सिर झुका कर बोला — “सरकार मैं आपको विचारों में खोया हुआ लग रहा हूँ या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता पर महल में नीचे एक सौदागर खड़ा है जिसके पास बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ें हैं जिनको देख कर मुझे अपने ऊपर इतना अफसोस हो रहा है कि मेरे पास इतना पैसा क्यों नहीं है जो उनमें से कुछ मैं भी खरीद सकूँ।”

यह सुन कर खलीफा ने जो हमेशा ही अपने वजीर का ख्याल रखते थे अपने एक काले दास को महल में नीचे भेजा कि वह उस सौदागर को ऊपर ले आये। तुरन्त ही वे दोनों ऊपर आ गये।

वह एक नाटा मोटा सा आदमी था जिसने फटे से कपड़े पहन रखे थे। उसके पास एक सन्दूकची थी जिसमें उसके मोती, अँगूठियाँ, बढ़िया पिस्तौलें, शराब पीने के गिलास और कंघियाँ रखे हुए थे।

खलीफा और उसके वजीर ने उन सबको देखा और बाद में खलीफा ने उससे अपने और मंसूर के लिये कुछ बढ़िया पिस्तौलें और मंसूर की पत्नी के लिये एक कंघी खरीद लीं।

जब वह सौदागर अपनी सन्दूकची बन्द करने को था तो खलीफा को उसमें एक छोटी सी ड्रौर दिखायी दे गयी तो उसने सौदागर से पूछा कि "क्या उसमें भी कुछ रखा है?"

सौदागर ने ड्रौर को खोला और एक बक्से को बाहर निकाला जिसमें एक तो काला पाउडर रखा हुआ था और दूसरा एक कागज रखा हुआ था जिस पर कुछ अजीब से अक्षर बने हुए थे। उन अक्षरों को न तो खलीफा ही और न मंसूर ही पढ़ सके।

सौदागर बोला — "मैंने यह सामान कुछ समय पहले एक और सौदागर से खरीदा था। उसको यह मक्का के बाजार में मिला था। मुझे नहीं मालूम कि इसके अन्दर क्या था। पर मैं यह आपके लिये बहुत ही कम दाम पर देने के लिये तैयार हूॅ क्योंकि मैं इसका क्या करूॅगा।"

खलीफा जिसकी अपनी ही लाइब्रेरी में बहुत सारे हस्तलेख[22] रखे हुए थे, हालॉकि वह उनको पढ़ नहीं सकता था फिर भी उसने उस बक्से और कागज को खरीद लिया और सौदागर को विदा किया।

सौदागर के जाने के बाद खलीफा बहुत देर तक यही सोचता रहा कि उस कागज में क्या लिखा था। उसने अपने वजीर से भी कह रखा था कि वह अगर ऐसे किसी आदमी को जानता हो जो

[22] Translated for the word "Manuscript"

उसे पढ़ कर यह बता सके कि उसमें क्या लिखा हुआ है तो वह उसको उसके पास ले कर आये।

वजीर बोला — "ओ मेरे लायक मालिक। बड़ी मस्जिद के पास सलीम नाम का एक विद्वान रहता है जिसको सारी भाषाऐं आती हैं। हम उसको बुला लेते हैं हो सकता है वह इन अजीब से अक्षरों को पढ़ सके।"

विद्वान सलीम को तुरन्त बुलाया गया। विद्वान सलीम खलीफा के पास आया तो खलीफा ने उससे कहा — "विद्वान सलीम। लोगों का कहना है कि तुम बहुत अक्लमन्द हो तो ज़रा तुम इस हस्तलेख को देखो और इसे पढ़ कर बताओ कि इसमें क्या लिखा है।

अगर तुम इसे पढ़ लोगे तो मैं तुम्हें त्यौहार पर पहनने वाला एक नया जोड़ा दूँगा। और अगर नहीं पढ़ सकोगे तो मैं तुम्हारे गाल पर **12** थप्पड़ मारूँगा औए **25** तुम्हारे पैरों के तलवों पर। और उस हालत में तुम ओ विद्वान सलीम गलत साबित होगे।"

सलीम ने सिर झुका कर कहा — "आपका हुकुम सिर माथे।"

तुरन्त ही वह हस्तलेख मॅगवाया गया। सलीम बहुत देर तक इधर उधर देख कर उसको पढ़ने की कोशिश करता रहा फिर अचानक बोला — "यह तो लैटिन है सरकार। अगर न हो तो मैं फॉसी पर लटका दिया जाऊँ।"

खलीफा बोले — "अगर यह लैटिन है तो मुझे बताओ कि इसमें क्या लिखा है।"

सलीम उसको पढ़ते हुए बोला — "आदमी जिसे भी यह हस्तलेख मिल जाये उसको अल्लाह का गुण गाना चाहिये। जो भी कोई इस पाउडर को सूँघेगा और उसी समय यह कहेगा "मूटाबोर" वह किसी भी जानवर में बदल जायेगा और फिर उसी जानवर की भाषा भी समझने लगेगा। अगर वह फिर से आदमी की शक्ल में वापस आना चाहे तो उसको तीन बार पूर्व की तरफ झुक कर वही शब्द फिर से कहना चाहिये।

पर ख्याल रहे कि जब तू बदल जाये तो तू हँसे नहीं नहीं तो वह शब्द तेरी याद से हमेशा के लिये चला जायेगा और तू हमेशा के लिये एक जानवर ही बना रह जायेगा।"

जब सलीम ने यह सब पढ़ा और खलीफा ने इसे सुना तो खलीफा तो बहुत खुश हुआ। उसने सलीम को यह कसम खिलवायी कि वह यह राज़ किसी को बतायेगा नहीं। उसने अपने वायदे के अनुसार उसको एक बहुत बढ़िया पोशाक भी दी और उसे विदा किया।

फिर खलीफा ने अपने बड़े वजीर से कहा — "मंसूर इसे मैं अपनी सबसे अच्छी खरीद कहता हूँ। अब जब तक मैं एक जानवर नहीं बन जाता तब तक मुझे चैन कैसे आ सकता है। कल सुबह तुम मेरे पास आना। तब हम लोग दोनों एक साथ किसी गाँव में चलेंगे इस बक्से में से कुछ पाउडर सूँघेंगे और फिर वह सुनेंगे जो

कुछ हवा में कहा जा रहा है या पानी में कहा जा रहा है या फिर जंगल में या फिर खेतों में कहा जा रहा है।"

अध्याय दो

अगली सुबह खलीफा रशीद बस अपना नाश्ता करके तैयार हुए ही थे कि उनका बड़ा वजीर मंसूर जैसा कि खलीफा ने उसको हुकुम दिया था उसके साथ चलने के लिये तैयार हो कर वहाँ हाजिर हो गया।

खलीफा ने जादुई पाउडर का डिब्बा अपनी कमर की पेटी से लटका लिया और अपने पीछे आने वालों को अपने पीछे ही रहने के लिये कह कर वह अपने वजीर मंसूर के साथ अपने काम पर चल दिया।

पहले वे खलीफा के बहुत बड़े फैले हुए बागीचे में गये पर वहाँ उनके कोई ऐसा ज़िन्दा प्राणी ही दिखायी नहीं दिया जिस पर वे अपना प्रयोग कर सकें।

वजीर ने खलीफा को फिर और आगे जाने की सलाह दी जहाँ एक तालाब था और वहाँ वह अक्सर बहुत सारे बगुले देखा करता था जो अपने गम्भीर व्यवहार और बोलने के कारण उसको बहुत आकर्षित करते थे। खलीफा ने अपने वजीर की सलाह मानी और तालाब की तरफ ही चल दिया।

वहॉ पहुॅच कर उनको एक मादा बगुला गम्भीरता से इधर से उधर घूमती हुई नजर आ गयी। वह मेंढकों की खोज में थी और अपने सामने किसी को देख कर कुछ बोल रही थी। उसी समय उन्होंने दूर एक बगुला भी हवा में उड़ता हुआ देखा।

बड़े वजीर ने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए कहा — "ओ मेरे लायक सरकार। मैं अपनी दाढ़ी दॉव पर लगाता हूॅ कि यह दोनों लम्बी टॉग वाले आपस में बात कर रहे हैं। क्या ही अच्छा हो कि हम अगर बगुलों में बदल जायें?"

खलीफा बोले — "यह तो तुमने बहुत अच्छी बात बतायी पर पहले हमको यह सोच लेना चाहिये कि हम फिर वापस आदमी कैसे बनेंगे। ठीक है न? हम पूर्व की तरफ तीन बार झुकेंगे और तीनों बार बोलेंगे "मुतबुर"। तब मैं फिर से खलीफा बन जाऊॅगा और तुम वजीर बन जाओगे। खुदा के लिये हॅसना नहीं वरना हम गये।"

जब खलीफा इस तरह बात कर रहे थे तो ऊपर वाला बगुला उन दोनों के सिर के ऊपर से पर थोड़ा नीचे की और झुकता हुआ उड़ा। उसने तुरन्त ही अपनी कमर की पेटी से पाउडर का बक्सा निकाला उसमें से एक चुटकी पाउडर निकाला। उसने उसको खुद सूॅघा और फिर अपने वजीर को भी सूॅघने के लिये दिया। फिर दोनों ने एक साथ कहा "मूटाबोर"।

तुरन्त ही उनकी टॉगें सिकुड़ीं और लाल और लम्बी हो गयीं। खलीफा के पीले रंग के सुन्दर जूते बगुले के बेढंगे पंजे बन गये।

उनकी बॉहें पंखों में बदल गयीं। गरदन कन्धों से ऊपर उठ गयी और एक एल[23] लम्बी हो गयी। उनकी दाढ़ियॉ गायब हो गयीं। उनके सारे शरीर मुलायम पंखों से ढक गये।

काफी देर तक आश्चर्य में पड़े रहने के बाद खलीफा बोले — "वजीर तुम्हारी चोंच तो बहुत सुन्दर लग रही है। धर्मदूत[24] की कसम मैंने इतनी सुन्दर चीज़ पहले कभी नहीं देखी।"

वजीर नम्रता से बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। पर अगर मैं कुछ कहने की हिम्मत करूॅ तो मैं विश्वास के साथ कह सकता हूॅ कि हिज़ हाईनैस तो बगुले के रूप में भी उतने ही सुन्दर लग रहे हैं जितने खलीफा के रूप में लग रहे थे।

पर अगर आपको अच्छा लगे तो यह देखने के लिये कि हम अब वास्तव में बगुले बन गये हैं अब हमको अपने साथियों की बातें सुननी चाहिये।"

इस बीच दूसरा बगुला अब जमीन पर आ गया था। उसने अपनी चोंच से अपने पंजे साफ किये अपने पंख चिकने किये और मादा बगुले की तरफ बढ़ा। यह देख कर नयी चिड़ियें भी उनके पास खिसक आयीं। उनका आश्चर्य तो बहुत बढ़ गया जब उन्हें वह सब कुछ समझ में आने लगा जो वे आपस में बात कर रहे थे।

[23] Ell is a measuring means for length. 1 ell = 18".
[24] Translated for the word "Prophet" – means Muhammad Sahab

"ओ मैडम लम्बी टॉग गुड मौर्निंग। आज इतनी सुबह सुबह तालाब पर?"

"प्रिय बोलने वाले धन्यवाद। मैं बहुत अच्छी हूँ। मैं अपने साथ कुछ नाश्ता ले कर आयी हूँ। क्या तुम बतख का एक चौथाई टुकड़ा या छोटे मेंढक की जॉघ खाना पसन्द करोगे?"

ऊपर वाला बगुला बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। पर आज की सुबह मुझे ज़रा भूख कम लगी है। मैं तो आज इस तालाब पर किसी दूसरी ही वजह से आया हूँ। मुझे आज अपने पिता के मेहमान के सामने नाचना है और मैं अकेला ही अकेले में उसका अभ्यास करना चाहता हूँ।"

तुरन्त ही मादा बगुला मैदान में कूद गयी। खलीफा और उनका वजीर मंसूर दोनों बड़े आश्चर्य से यह सब देख रहे थे। मादा बगुला एक टॉग पर एक बहुत ही सुन्दर पोज़ बना कर खड़ी हो गयी साथ में अपने पंखों को पंखे की तरह हिलाने लगी।

दोनों नयी चिड़ियें अब अपने आपको न रोक सकीं सो दोनों अपनी चोंच खोल कर हॅसने लगीं। खलीफा पहले होश में आया तो वह बोला — "यह तो क्या ही बढ़िया मजाक था जिसे सोना भी नहीं खरीद सकता था। यह हमारी बेवकूफी थी कि हम हॅस पड़े और उन चिड़ियों को भगा दिया वरना निश्चित रूप से वे अब तक यहॉ गाती रहतीं।"

पर वजीर के साथ तो अब यह हो चुका था वरना रूप बदलने के समय में उनको हँसना मना था। उसने खलीफा से इस बारे में अपनी चिन्ता बतायी — "मक्का और मदीना की कसम। अगर मुझे हमेशा के लिये बगुला ही रहना है तो वह तो एक बहुत ही अफसोस भरा मजाक था। अब आप अपनी सोचें। याद करिये उस बेवकूफ शब्द को जिससे हम लोग फिर से आदमी बन जायें। क्योंकि अब मैं तो उसको याद भी नहीं कर सकता।"

खलीफा ने याद करना शुरू किया — "हमको तीन बार पूर्व की तरफ झुकना चाहिये और कहना चाहिये मूटा... मूटा... मूटा... ।"

वे पूर्व की तरफ घूमे और फिर इतना झुक गये कि उनकी चोंच जमीन को छूने लगी पर कितने अफसोस की बात है कि वह जादुई शब्द उनको याद नहीं आया।

हालाँकि खलीफा बार बार बार बार पूर्व की तरफ तीन बार झुका साथ ही वजीर ने भी तीनों बार याद करने की कोशिश की "मूटा... मूटा... मूटा..." पर इस बारे में तो अब उनकी सारी यादें खत्म हो चुकी थीं। बेचारा रशीद और उसका वजीर मंसूर अब बगुला ही बने रहे।

अध्याय तीन

अब ये जादू पड़े जीव चारों तरफ मैदानों में घूमते रहे। अपनी मुसीबत के समय में यह भी नहीं जान पा रहे थे कि अब उन्हें सबसे पहले क्या करना चाहिये।

वे शहर तो वापस जा नहीं सकते थे क्योंकि वहाँ तो उनको पहचानेगा कौन। और अगर वे उनको बतायें भी कि वह इससे पहले खलीफा और उनके वजीर थे तो कौन उनका यह विश्वास करेगा कि इससे पहले वे खलीफा और उसके वजीर थे। और अगर वे वहाँ चले भी गये और पहचान भी लिये गये तो कौन ऐसी चिड़िया को अपना राजा बनायेगा।

सो कई दिनों तक वे बेचारे इधर उधर मैदानों में पड़ा हुआ अनाज खाते हुए मारे मारे फिरते रहे। वे भी अपनी लम्बी चोंच की वजह से ठीक से खा नहीं पाते थे। बतखें और छोटे छोटे मेंढकों की उनको भूख नहीं थी क्योंकि उनको लग रहा था ऐसी छोटी छोटी चीज़ें खा खा कर कहीं उनका पेट खराब न हो जाये।

इस हालत में उनको केवल एक ही तसल्ली थी कि वे उड़ सकते थे सो अक्सर वे यह देखने के लिये बगदाद के ऊपर उड़ जाते थे कि चलो चल कर देखें कि वहाँ क्या हो रहा है।

पहले दिन बगदाद की सड़कों पर उनको बहुत हलचल दिखायी दी। आते जाते लोग दुखी थे पर उनके रूप बदलने के चौथे दिन वे अचानक अपने महल के ऊपर से उड़ रहे थे कि उनको वहाँ की

सड़कों पर बाजे गाजे के साथ एक जुलूस जाता हुआ दिखायी दिया।

उस जुलूस में एक बहुत ही सजे सजाये घोड़े पर एक आदमी बैठा देखा जिसने सोने का काम किया गया लाल रंग का एक शाल ओढ़ रखा था। उसके आस पास चलने वाले नौकरों ने भी बहुत बढ़िया बढ़िया कपड़े पहन रखे थे।

करीब करीब आधा बगदाद "मिज़रा[25] की जय हो बगदाद के राजा की जय हो।" के नारे लगाता हुआ उसके पीछे दौड़ रहा था। उन दोनों बगुलों ने महल की छत से यह दृश्य देखा तो खलीफा रशीद चिल्लाये।

"वजीर देखो तो हम लोगों पर यह जादू क्यों डाला गया है। यह मिज़रा तो हमारे जानी दुश्मन जादू टोना करने वाला कशनूर[26] का बेटा है जिसने किसी बुरी घड़ी में मुझसे बदला लेने की कसम खायी थी। फिर भी मैं आशा नहीं छोड़ सकता।

आओ मेरे बुरे समय के वफादार साथी। हम धर्मदूत की कब्र पर जायेंगे और वहॉ जा कर कुछ कोशिश करेंगे। हो सकता है कि वहॉ उस पवित्र जगह में हमें इस जादू से छूटने का कोई उपाय मिल जाये।"

---

[25] Mizra – name of the son of Sorceror Kaschnur

[26] Son of the Sorceror Kaschnur

ऐसा कह कर वे महल की छत से ऊपर उठ कर आसमान में उठ गये और मदीना[27] की तरफ उड़ चले। अपने पंखों का इस्तेमाल करने में उन्हें थोड़ी परेशानी तो हुई क्योंकि दोनों बगुलों को अभी इतनी ज़्यादा दूर उड़ने की आदत नहीं थी।

दो घंटे उड़ने के बाद वजीर बोला — "सरकार मैं अब और नहीं उड़ सकता। आप तो बहुत तेज़ उड़ते हैं। इसके अलावा अब शाम भी हो आयी है सो हमें रात को आराम करने के लिये जगह भी चाहिये।"

खलीफा रशीद ने अपने वजीर की बात सुनी। उन्होंने नीचे झुक कर देखा तो वहाँ उनको रहने के लिये एक सुरक्षित जगह दिखायी दे गयी सो वे उधर ही चल दिये। वह जगह जहाँ वे रात को रहने के लिये उतरे पहले कभी कोई किला रहा होगा।

उसके बड़े बड़े खम्भे कूड़े में बाहर निकले दिखायी दे रहे थे और उसके बहुत सारे कमरे जो अभी कुछ ठीक सी हालत में थे बता रहे थे कि कभी यह इमारत बुलन्द थी शानदार थी। रशीद और उसका वजीर आराम करने के लिये उसके बरामदों में से हो कर एक सूखी जगह पहुँच गये।

अचानक वजीर मंसूर रुक गया। वह बहुत धीरे से फुसफुसाया — "मालिक। क्या एक वजीर के लिये, और एक बगुले के लिये

[27] Medina is the place in Saudi Arabia from where Muhammad Sahab conquered all Arabia after fleeing from Mecca (622 AD). A piligrimage is made to his tomb in the citiy's chief mosque (Masjid).

तो और भी ज़्यादा, यह बेवकूफी की बात नहीं है कि वह इस दृश्य को देख कर डर जाये। पर मुझे तो यहॉ बहुत बेचैनी हो रही है। क्योंकि यहॉ पास में ही मुझे आहें भरने की और कराहने की आवाजें साफ साफ आ रही हैं।"

यह सुन कर खलीफा बिल्कुल शान्त खड़े हो गये और उन आवाजों को सुनने की कोशिश करने लगे। उन्होंने भी बहुत ही धीमी आह भरने की आवाज साफ साफ सुनी। उनको यह आवाज किसी जानवर की आह की आवाज के किसी आदमी की आह की आवाज ज़्यादा लगी।

इस आशा के साथ कि वे देखें कि उस सुनसान जगह में कौन आदमी आह भर रहा है वे उस आवाज की तरफ बढ़े जहॉ से वह आवाज आ रही थी।

पर वजीर ने खलीफा को अपनी चोंच से उसके पंखों से पकड़ लिया और उनसे प्रार्थना की कि वह अब किसी और नये और अनजान खतरे में न पड़ें। पर खलीफा का बहादुर दिल तो उनके पंखों के नीचे बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था।

पर बेकार। खलीफा अचानक अपना एक पंख खोते हुए गैलरी में घुसे। पल भर में ही वह एक दरवाजे पर पहुॅचे जो लगता था कि ताला लगा बन्द था। वहॉ उन्होंने साफ साफ आह भरने की आवाजें सुनीं।

उन्होंने अपनी चोंच से दरवाजे को खोला तो आश्चर्य से वहीं उस कमरे की देहरी पर ही खड़े रह गये। उस खंडहर कमरे में बहुत ही धीमी रोशनी हो रही थी। वहीं उन्होंने फर्श पर एक बहुत बड़ी मादा उल्लू बैठी देखी। वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी और उसकी बड़ी बड़ी गोल गोल ऑखों से ऑसू बह रहे थे।

जैसे ही उसने खलीफा और वजीर को देखा तो वह खुशी से ज़ोर से चिल्ला पड़ी और धीरे धीरे उनकी तरफ बढ़ी। उसने बड़ी सफाई से अपने कत्थई धारी वाले पंखों से अपने ऑसू पोंछे और उनको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ जब वह आदमियों की आवाज में अरबी भाषा में बोली।

"बगुलो। आपका यहॉ स्वागत है। आप लोग मेरे लिये अल्लाह के भेजे हुए वे दूत हैं जो उसने मुझे आजाद करने के लिये भेजे हैं। क्योंकि एक बार मेरे बारे में यह कहा गया था कि बगुलों के द्वारा तेरा बहुत भला होगा।"

जब खलीफा का आश्चर्य थोड़ा खत्म हुआ तो उसने उसके सामने अपनी लम्बी गरदन झुकायी। अपनी टॉगें सीधी कीं और बोला — "ओ उल्लू। तुम्हारी बात सुन कर मुझे यह विश्वास हो रहा है कि इस बदकिस्मती में भी हमें तुम एक साथी के रूप में मिल गयी हो। पर हमारे द्वारा तुम यहॉ से आजाद हो पाओगी यह तो सोचना भी बेकार है।

जब तुम हमारी कहानी सुनोगी तब तुम अपने आप ही इस बात को समझ जाओगी।"

तब मादा उल्लू ने बगुले से विनती की कि वह उसको अपनी कहानी सुनाये। खलीफा ने तब सीधे खड़े हो कर उसे वह सब बताया जो हम पहले से ही जानते हैं।

अध्याय 4

जब खलीफा ने मादा उल्लू को अपनी कहानी सुना चुका तो मादा उल्लू ने उसे धन्यवाद दिया और उससे कहा — "मेरे पिता भारत के राजा हैं। मैं उनकी अकेली बदकिस्मत बेटी लूसा[28] हूँ। वही जादूगर कशनूर जिसने आपकी शक्ल बदली है उसी ने मुझे भी इस कष्ट में डाल दिया है।

एक दिन वह मेरे पिता के पास आया और उसने अपने बेटे मिज़रा के लिये मेरा हाथ माँगा। मेरे पिता मुझे बहुत प्यार करते थे और मेरी शादी उससे नहीं करना चाहते थे सो उन्होंने उसे सीढ़ियों से नीचे फेंक दिया। वह नीच आदमी फिर से मेरे पास आने में सफल हो गया, पर इस बार किसी और शक्ल में।

एक दिन मैं अपने बागीचे में ताजा हवा के लिये घूम रही थी कि वह मेरे पास मेरी एक दासी के रूप में आया और मुझे कोई दवा

[28] Lusa – name of the female owl – the daughter of the King of India

पिला गया जिसने मुझे इस बुरी शक्ल में बदल दिया। मैं तो डर के मारे बेहोश ही हो गयी थी।

उसी हालत में वह मुझे यहाँ ले आया और अपनी डरावनी आवाज में मुझसे कहा — "ओ डरावनी। तू जंगली जानवरों के होते हुए भी अपने मरने के समय तक यहीं बैठी रहेगी। या फिर तब तक जब तक कि कोई दूसरा न आ जाये और तुझे अपनी मरजी से अपनी पत्नी न बना ले। इस तरह मैं तुझसे और तेरे ताकतवर पिता से अपना बदला लूँगा।

उसके बाद से कई महीने गुजर गये। तबसे मैं यहीं दुनियाँ की नजरों से दूर इन दीवारों के अन्दर एक साधु की तरह से अकेली बैठी हूँ। बेरहम शिकारी भी मुझे नहीं मारते।

मैं सुन्दर प्रकृति को भी नहीं देख सकती क्योंकि उल्लू होने की वजह से मैं दिन में अन्धी हो जाती हूँ। जब चाँद अपनी हल्की रोशनी इस खंडहर के ऊपर फेंकता है तभी भी मैं बहुत थोड़ा ही देख पाती हूँ।"

मादा उल्लू ने उस तरह से अपनी कहानी खत्म की फिर उस कहानी सुनाते हुए जो उसकी आँखों में आ गये थे उन्हें अपने पंखों से पोंछा।

खलीफा राजकुमारी की कहानी सुन कर बहुत सोच और ध्यान में पड़ गये। फिर कुछ देर बाद बोले — "अगर मुझे यह धोखा न

दिया जाता तो तुम देखतीं कि मेरा यह धोखा भी ऐसे ही कुछ बदले की वजह से है। पर अब मुझे इस पहेली की चाभी कहाँ से मिले।"

मादा उल्लू बोली — "मेरे मालिक। मुझे यह भी साफ ही नजर आता है क्योंकि एक बार जब मैं जवान थी तो मुझे एक अक्लमन्द स्त्री ने बताया था कि एक बगुला तुम्हारे लिये बहुत खुशियाँ ले कर आयेगा। सो शायद हम अब यह जान सकें कि हम कैसे बच सकते हैं।"

खलीफा को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ और उससे पूछा कि उसके यह कहने का मतलब क्या था।

मादा उल्लू बोली — "वह जादूगर जिसने हमें इस बुरी हालत में डाला है वह इन खंडहरों में हर महीने आता है। इस कमरे में कुछ ही दूर पर एक बहुत बड़ा कमरा है जिसमें वह अपने साथियों के साथ खाना खाता है।

मैंने अक्सर उन सबको यहाँ देखा है। वे सब अपने अपने शर्मनाक काम एक दूसरे को बताते रहते हैं। शायद वह अपना वह जादुई शब्द भी वहाँ बोलता हो जो शायद आप भूल गये होंगे।"

खलीफा तुरन्त ही बोला — "ओह प्यारी राजकुमारी तुम हमें तुरन्त ही बताओ कि वह अब यहाँ कब आयेगा और वह बड़ा कमरा कहाँ है।"

राजकुमारी कुछ पल चुप रही फिर बोली — "बुरा मत मानियेगा पर केवल एक शर्त पर ही मैं आपको वह शब्द बता सकती हूँ।"

खलीफा रशीद चिल्लाये — "बोलो बोलो। बस तुम उसे कह दो चाहे वह कुछ भी हो मैं उसे मानने के लिये तैयार हूँ।"

मादा उल्लू बोली — "उसे बताते ही मैं बेहोश हो जाऊँगी और उसी समय आजाद भी हो जाऊँगी पर ऐसा मेरे साथ तभी होगा जब आप दोनों में से कोई एक मुझसे शादी करने का वायदा करेगा।"

यह सुन कर दोनों बगुले तो आश्चर्य में पड़ गये। फिर खलीफा ने अपने साथी वजीर को अपने साथ अकेले में आने के लिये कहा। खलीफा उसको दरवाजे तक ले गये और वहाँ जा कर बोले — "वजीर। हालाँकि यह एक उलझन भरा मामला है पर मुझे यकीन कि तुम इसे अच्छी तरह से सुलझा सकते हैं।"

"कैसे?"

खलीफा फिर बोले — "वह ऐसे कि जब मैं घर पहुँचूँगा तो यह सुन कर मेरी पत्नी तो मेरी आँखें ही निकाल लेगी। इसके अलावा मैं एक बूढ़ा आदमी भी हूँ जबकि तुम अभी भी नौजवान हो और कुँआरे हो। इसलिये तुम ज़्यादा अच्छे तरीके से एक सुन्दर और नौजवान राजकुमारी से शादी कर सकते हो।"

वजीर एक उसाँस ले कर दुख से अपने पंख नीचे गिराते हुए बोला — "ओह तो यह बात है। पर यह आपसे किसने कहा कि

वह सुन्दर और नौजवान है। यह तो एक ऐसी बिल्ली खरीदने जैसी बात हो गयी जो एक थैले में बन्द हो।"

वे दोनों बहुत देर तक इस मामले पर आपस में बात करते रहे। पर आखीर में जब खलीफा ने देखा कि उनका वजीर मंसूर तो ज़िन्दगी भर बगुला बने रहने के लिये तैयार है पर एक उल्लू से शादी करने के लिये तैयार नहीं है तो उन्होंने सोच लिया कि वह खुद ही मादा उल्लू की शर्त मानने के लिये तैयार हो जायेंगे।

मादा उल्लू तो बहुत खुश हो गयी। उसने उनको बताया कि वे लोग बहुत जल्दी ही आने वाले होंगे। हो सकता ही कि वे उसी रात वहाँ आ जायें।

सो मादा उल्लू ने दोनों बगुलों के साथ वह कमरा छोड़ दिया और उनको उस बड़े कमरे की तरफ ले चली जिसमें वे खाना खाते थे। वे उन ॲधेरे रास्तों से काफी दूर तक चलते चले गये।

आखिर वे एक आधी टूटी दीवार में से हो कर एक ज़्यादा तेज़ रोशनी वाले कमरे में पहुॅच गये। जब वे सब वहाँ पहुॅच गये तो मादा उल्लू ने उनको चुपचाप वहीं रुक जाने के लिये कहा। क्योंकि इस समय जहाँ वे खड़े हुए थे वहाँ से वे लोग उनको आसानी से देख सकते थे।

उस बड़े कमरे में चारों तरफ खम्भे लगे हुए थे जो बहुत सजे हुए थे। उनमें बहुत सारे रंगों के बहुत सारे लैम्प लगे हुए थे जिससे वहाँ दिन की सी रोशनी हो रही थी।

उस कमरे के बीच में एक गोल मेज रखी हुई थी जिस पर बहुत तरीके के मॉस सजे हुए थे। मेज के चारों तरफ कुछ सोफे पड़े हुए थे जिन पर आठ लोग बैठे हुए थे। उन आठों आदमियों में से एक आदमी को बगुलों ने सौदागर की तरह पहचान लिया जो उनको सामान बेचने आया था।

उसका पड़ोसी उसको अपनी नयी वाली चाल बताने वाला था तो उसने भी दूसरों के साथ साथ खलीफा और उसके वजीर के साथ किया गया अपना कारनामा सुना दिया।

उसके पास बैठे तीन जादूगरों ने उससे पूछा कि उसने उन्हें वह क्या शब्द बताया जिसे कह कर वे आदमी बन सकते थे।

"एक लैटिन शब्द "मूटाबोर"।"

अध्याय पॉच

जब बगुलों ने उस शब्द को दीवार के पार से सुना तो वे तो आपे से बाहर ही हो गये। वे अपनी लम्बी टॉगों से खंडहर के दरवाजे की तरफ इतनी जल्दी जल्दी भागे कि मादा उल्लू तो उनके साथ भाग ही नहीं सकी।

इस पर खलीफा उससे बोला — "ओ मेरी और मेरे दोस्त की ज़िन्दगी की रक्षा करने वाली। जो कुछ भी तुमने हमारे लिये किया है उसके धन्यवाद के रूप में मैं तुमसे शादी करूँगा।"

तब उसने पूर्व की तरफ अपना मुँह किया सूरज के सामने तीन बार अपनी लम्बी गरदन नीचे झुकायी और साथ में तीन बार "मूटाबोर" कहा। बस पल भर में ही वे दोनों बगुलों से बदल कर खलीफा और वजीर बन गये। अब वे दोनों एक दूसरे से लिपट कर कभी हँस रहे थे कभी रो रहे थे।

पर उन दोनों का आश्चर्य कौन बखान कर सकता है जब उन्होंने अपने चारों तरफ देखा कि वहाँ तो एक बहुत ही सुन्दर लड़की खड़ी है जिसने रानियों की पोशाक पहन रखी है। मुस्कुराते हुए उसने अपना हाथ खलीफा के हाथ में दे दिया और बोली — "क्या आप अब अपनी मादा उल्लू को नहीं पहचानते?"

"ओह तो यह है वह।" खलीफा उसकी सुन्दरता और खुश खुश रहने से इतना प्रभावित हुआ कि बस उसके मुँह से एक चीख निकलने से रह गयी कि यह शायद उसकी ज़िन्दगी का सबसे खुशकिस्मत पल था जब वह बगुला बना था।

अब तीनों साथ साथ बगदाद चले। खलीफा की जेब में अब न केवल काला जादुई पाउडर था बल्कि उसके पैसों का थैला भी था। उस पैसे से उसने पास के गाँव से अपनी आगे की यात्रा के लिये जरूरी सामान खरीदा।

जल्दी ही वे शहर के दरवाजे के सामने आ गये तो यहाँ तो खलीफा के शहर में आने से तो सबको बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि लोगों ने तो उसे मरा हुआ ही समझ लिया था। पर अब उसके आने

से वे सब बहुत खुश हो गये थे। बल्कि वे इतने ज़्यादा खुश हो गये थे कि मिज़रा के लिये उनके दिल में जितनी नफरत थी वह भी सब खत्म हो गयी थी।

वे महल की तरफ गये और उन्होंने जादूगर और उसके बेटे को पकड़ लिया। जादूगर को उन्होंने उसी कमरे में भेज दिया जहाँ उसने राजकुमारी को मादा उल्लू बना कर रखा हुआ था और वहाँ उसको फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

जहाँ तक उसके बेटे मिज़रा का सवाल है वह अपने पिता की कोई कला नहीं जानता था सो उससे कहा गया कि या तो वह मर जाये और या फिर उसके पास रखे काले पाउडर को सूँघे।

सो उसने काले पाउडर को सूँघने को चुना तो वजीर ने उसको वह बक्सा उसको दे दिया। एक बड़ी सी चुटकी पाउडर और जादू के शब्द से खलीफा ने उसको बगुला बना दिया। फिर उसको लोहे के एक पिंजरे में बन्द करके अपने बागीचे में टाँग दिया।

खलीफा रशीद और उसकी पत्नी बहुत दिनों तक हँसी खुशी रहे। खलीफा के लिये उसका सबसे अच्छा समय वही होता जब दोपहर बाद उनका वजीर आता। और जब भी कभी खलीफा अच्छे मूड में होते तो वह अपने आपको मंसूर के सामने इतना झुका लेते जितना कि बगुला और पूछते कि वह बगुला बने कैसे लगते हैं।

कभी कभी वह अपनी टाँगों को बिल्कुल सीधा करके चलते और बगुले जैसी आवाज निकालते। अपनी बाँहें पंखों की तरह

हिलाते और दिखाते कि किस तरीके से वह पूर्व की तरफ नीचे झुके थे।

फिर वजीर उसको धमकाता कि वह उसकी रानी पर वह भेद खोल देगा जो उन्होंने उल्लू के कमरे के बाहर एक दूसरे से कहा था।"

जब सलीम बरूच ने अपनी कहानी खत्म कर ली तो सौदागर बोले कि उसकी कहानी बहुत अच्छी थी। उनमें से एक ने तम्बू को ढकने वाला कपड़ा उतार कर बोला — "कितना अच्छा रहा कि दिन का यह तीसरा प्रहर बिना पता चले ही गुजर गया। शाम की हवा ठंडी हो गयी है तो अब हम लोग कुछ देर तक और आगे जा सकते हैं।"

उसके सब साथियों ने उसकी बात मान ली। तम्बू उखाड़े गये और फिर सब उसी तरह से चले जैसे वे सब आये थे। वे लगभग सारी रात चलते रहे क्योंकि हवा ठंडी थी और रात तारों भरी थी जबकि दिन बहुत नमकीन और गरम था।

अजनबी का बहुत ख्याल रखा जा रहा था। उसको वे सब एक अच्छे मेहमान की तरह से रख रहे थे। एक उसको तकिया दे रहा था तो दूसरा उसको ओढ़ने के लिये कुछ दे रहा था तो तीसरा दास उसको उन सब चीज़ों को उसको देने की कोशिश कर रहा था जिनका वह अपने घर में आदी था।

दिन का सबसे गरम समय आ पहुँचा था जब वे सब जागे। यहीं उन्होंने शाम तक रुकने का इन्तजार किया। उन्होंने सबने खाना खाया और फिर एक बार सब एक साथ बैठ गये।

सबसे छोटे सौदागर ने सबसे बड़े सौदागर से कहा — "कल सलीम बरूच ने हमारा तीसरा प्रहर बहुत ही आनन्ददायक तरीके से बिताया। अब अश्मत आप कुछ कहें। चाहे वह आपकी लम्बी ज़िन्दगी की कोई घटना हो जिसने बहुत सारी हिम्मत वाली चीज़ें देखी हैं या फिर सुन्दर मार्चेन की।"

यह सुन कर अश्मत कुछ देर तक तो चुप रहा। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह यह सोच रहा हो कि वह यह सुनाये या फिर वह सुनाये। फिर उसने बोलना शुरू किया।

"मेरे प्यारे दोस्तो इस यात्रा में तो तुम सब लोग बड़े वफादार रहे हो। सलीम भी मेरे विश्वास के काबिल है तो अब मैं तुम्हें अपनी ज़िन्दगी की एक घटना सुनाता हूँ जो दूसरे हालातों में किसी को नहीं सुनाता।

3 भूतिया जहाज़ की कहानी[29]

सो अश्मत ने कहना शुरू किया — “बलसोरा[30] में मेरे पिता की एक दूकान थी। वह न तो बहुत ज़्यादा अमीर ही थे और न ही बहुत ज़्यादा गरीब ही थे। पर वह ऐसे थे जो कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहते थे क्योंकि वह डरते थे कि जो कुछ थोड़ा भी उनके पास है उसको वह कहीं खो न दें।

उन्होंने मुझे बड़े सादे ढंग से पाला पोसा पर बहुत गुण सिखाये। जल्दी ही मैं इतना आगे बढ़ गया कि मैं उनके काम में उनको सलाह भी देने लगा और सहायता भी करने लगा।

जब मैं **18** साल का हुआ तब उन्होंने अपना पहला पहला मुख्य सट्टा लगाया था पर उसके बीच में ही वह चल बसे। शायद समुद्र में **1000** सोने के सिक्के के सट्टे लगाने के खतरे की सोच कर।

उनकी इस भाग्यशाली मौत के जल्दी ही बाद यानी कुछ ही हफ्तों में सूचना देने वाले आ पहुँचे। उन्होंने बताया कि वह जहाज़ जिसको मेरे पिता ने अपना सामान दिया था टूट गया था।

यह दुर्भाग्य मेरी जवानी के उत्साह को नहीं रोक पाया। मेरे पिता ने जो कुछ भी छोड़ा था मैंने उसको बेच कर पैसा बना लिया और विदेश में अपनी किस्मत बनाने के लिये निकल पड़ा।

[29] The History of the Spectre Ship. (Tale No 2) Told by Ashmet – the eldest merchnat

[30] Balsora – name of a place

मैंने अपने परिवार के एक पुराने नौकर को अपने साथ ले लिया क्योंकि वह हमारे घर में बहुत दिनों से काम करता था तो वह मुझे अकेला छोड़ना नहीं चाहता था।

बलसोरा के बन्दरगाह पर हम एक जहाज़ में चढ़े। जिस जहाज़ में हम अपनी यात्रा करने वाले थे वह भारत जा रहा था। हमको साधारण रास्ते पर चलते चलते **15** दिन हो चुके थे कि एक दिन जहाज़ के कप्तान ने तूफान आने की सूचना दी।

उसको उस तूफान से चिन्ता लगी हुई थी। ऐसा लगता था कि वह उस तूफान के बारे में जानता था। वह यह भी जानता था कि उस जगह समुद्र बहुत गहरा नहीं था ताकि वह जहाज़ को सुरक्षित रूप से जहाज़ को तूफान से बचा सके।

उसने काम करने वालों को सारे पाल खोल देने के लिये कहा और हम लोग बहुत धीरे धीरे चलने लगे। रात साफ थी ठंडी थी। कि कप्तान ने यह सोचना शुरू कर दिया कि उसने अपने चेहरे पर डर के भाव लाने में कुछ जल्दी की।

तभी अचानक एक जहाज़ हमारे जहाज़ के पास आ गया जिसको हमने अभी तक देखा ही नहीं था। लोग डैक पर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगे। इस चिन्ता भरे समय में तूफान से पहले इस चिल्लाने पर मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। पर कप्तान का चेहरा पीला पड़ गया। वह डर के मारे चिल्लाया — "मेरा जहाज़ तो रास्ता भूल गया है। यह तो हमारे साथ साथ मौत चल रही है।"

इससे पहले कि मैं उससे इन शब्दों के बारे में कुछ पूछता कि उसके कहने का क्या मतलब था कि सारे नाविक रोते चिल्लाते अन्दर की तरफ भागे। वे कह रहे थे — "क्या तुमने उसे देखा है? वह तो हमारे साथ ही है।"

कप्तान कुरान में से धीरज के कुछ शब्द पढ़ रहा था और जहाज़ के किनारे पर बैठा था। पर सब बेकार। समुद्र की लहरें बहुत ऊपर तक उठ रही थीं। एक घंटा बीतने से पहले पहले ही जहाज़ टकरा गया और धरती में धॅस कर रह गया।

नावें जहाज़ से नीचे उतारी गयीं और मुश्किल से आखिरी नाविक उनमें से एक नाव में उतरा होगा कि जहाज़ समुद्र में अन्दर डूब गया। और मैं एक भिखारी की तरह समुद्र के ऊपर पानी में तैर गया। पर हमारा दुर्भाग्य अभी खत्म नहीं हुआ था।

समुद्र की लहरें भयानक रूप से थपेड़े मार रही थीं। नाव भी सॅभाले नहीं सॅभल रही थी। मैंने अपने पुराने नौकर को कस कर जकड़ लिया। हम दोनों ने यह वायदा किया कि हम दोनों कभी अलग नहीं होंगे।

आखिर दिन निकला पर दिन की लाल रोशनी के साथ ही हवा के थपेड़े आये और हमारी नाव को जिसमें हम बैठे हुए थे पूरी तरह से हिला गये।

उसके बाद मैंने अपने जहाज़ के साथियों को नहीं देखा। यह देख कर तो मैं बेहोश ही हो गया। जब मैं होश में आया तो मैंने

अपने आपको अपने वफादार नौकर की बॉहों में पाया जिसने अपने आपको नाव पर किसी तरह से बचा लिया था और मुझे ढूँढ लिया था क्योंकि वह तो पलट ही गयी थी।

तूफान हल्का पड़ गया था। हमारे जहाज़ का कोई हिस्सा हमें दिखायी नहीं दे रहा था। पर हमने हमसे थोड़ी ही दूरी पर एक और जहाज़ साफ साफ देखा जिसकी तरफ समुद्र की लहरें हमें भगाये लिये जा रही थीं।

जैसे ही हम उस जहाज़ के पास पहुँचे तो मैंने वह जहाज़ पहचान लिया। यह तो वही जहाज़ था जो हमको कल रात दिखायी दिया था और जिसने हमारे कप्तान को इतना परेशान कर दिया था। सो उस जहाज़ को देखते ही मुझे भी एक तरह का अजीब सा डर महसूस होने लगा। यह डर कप्तान की परेशानी की याद करके कुछ ज़रा ज़्यादा ही महसूस हो रहा था।

जैसे जैसे हम उस जहाज़ के पास ज़्यादा आते जा रहे थे हमारी चीखने चिल्लाने की आवाजें और तेज़ होती जा रही थीं। क्योंकि उस जहाज़ पर कोई भी नहीं था इससे मुझे और डर लग रहा था। पर हमारे पास अब यही एक चारा था सो हमने मुहम्मद साहब की पूजा करनी शुरू कर दी जिसने हमारी इस चमत्कारी ढंग से रक्षा की थी।

जहाज़ के अगले हिस्से से एक लम्बा तार लटक रहा था सो उसको पकड़ कर हम हाथ पैर मार कर तैर गये और उस जहाज़ पर

चढ़ने में सफल रहे। मैं बहुत ज़ोर से चिल्लाया पर बदले में कोई आवाज लौट कर नहीं आयी। जहाज़ पर सब कुछ शान्त था।

तब हम रस्सी का सहारा ले कर जहाज़ के ऊपर चढ़े। मैं क्योंकि सबसे छोटा था सो मैं सबसे आगे जा रहा था। पर उफ़। जैसे ही मैं डैक पर पहुँचा तो मैंने तो वहाँ क्या ही डरावना दृश्य देखा। सारा फर्श खून से ढका हुआ था और लाल हो रहा था। उस डैक पर **20–30** लाशें पड़ी हुई थीं जिन्होंने तुर्क पोशाक पहनी हुई थी।

बीच में मस्तूल के सहारे एक आदमी खड़ा हुआ था जिसने बहुत ही कीमती पोशाक पहनी हुई थी। उसके हाथ में एक तलवार थी। उसका चेहरा पीला और बेजान सा लग रहा था और टेढ़ा हो रखा था। उसके माथे में एक भाला घुसा हुआ था जिससे वह मस्तूल से चिपका हुआ था। वह मर चुका था।

मेरे तो डर के मारे पैर जम से गये थे। मुझसे तो साँस भी नहीं ली जा रही थी। मेरा साथी भी जो मेरे बराबर में ही खड़ा था डैक के उस दृश्य को देख कर घबरा गया था जहाँ कोई ज़िन्दा चीज़ नजर ही नहीं आ रही थी बस इतनी सारी डरावनी लाशें ही लाशें दिखायी दे रही थीं।

अपनी आत्मा को सन्तुष्ट करने के लिये मुहम्मद साहब की प्रार्थना करने के बाद हम थोड़ा और आगे बढ़े। हर कदम पर हम चारों तरफ देखते जाते थे कि शायद कहीं कुछ और ज़्यादा भयानक

दिखायी दे पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। हमारे सिवा वहाँ और कोई ज़िन्दा चीज़ नहीं थी। और चारों तरफ समुद्र था।

इस डर से कि कहीं मस्तूल से चिपका हुआ मरा हुआ कप्तान हमारी तरफ अपनी दाँयी आँख खोल कर न देख ले हम एक बार भी ज़ोर से नहीं बोल सके। या फिर कोई लाश अपना सिर घुमा कर हमको देखने न लग जाये।

चलते चलते हम एक सीढ़ी के पास आ गये जो हमको एक कमरे में ले जाती थी। वहाँ पहुँच कर हम किसी अनजान ताकत से अपने आप ही रुक गये और एक दूसरे की तरफ देखने लगे क्योंकि हम दोनों में से कोई भी अपने विचार कह नहीं सका।

मेरे वफादार नौकर ने कहा — “मालिक। लगता है कि यहाँ पर कुछ अजीब सा हो चुका है। फिर भी अगर यह जहाज़ नीचे कातिलों से भरा हुआ है तो बजाय इसके कि मैं इन लाशों के साथ रहूँ मैं तो अपने आपको उनके हाथों हवाले कर दूँगा फिर चाहे वे मुझसे दया का बरताव करें और या फिर मुझे मारें।”

मैं राजी हो गया। हमने अपना अपना दिल मजबूत किया और कुछ कुछ सोचते हुए नीचे उतर गये। पर यहाँ भी मौत ही खेल रही थी। यहाँ पर भी सीढ़ी से उतरने से होने वाली हमारे कदमों की आहट के सिवा और कोई आवाज नहीं थी। हम एक कमरे के दरवाजे के सामने खड़े थे।

मैंने कान लगा कर सुनने की कोशिश की पर वहॉ से भी कोई आवाज नहीं आ रही थी। मैंने उस कमरे का दरवाजा खोला तो वह तो बहुत ही अजीब सी हालत में था।

वहॉ कपड़े हथियार और दूसरी चीज़ें सब इधर उधर अस्त व्यस्त पड़ी हुई थीं। लगता था कि जहाज़ के लोग या फिर कम से कम जहाज़ का कप्तान वहॉ खाना खा रहा होगा क्योंकि वहॉ खाने का सामान लगा पड़ा था।

उसके बाद हम फिर एक कमरे से दूसरे कमरे में गये तो हमको वहॉ शाही किस्म की सिल्क मोती और दूसरे किस्म की कीमती चीज़ें पड़ी हुई मिलीं। मैं तो उस दृश्य को देख कर बहुत खुश हो गया। मुझे लगा कि क्योंकि उस जहाज़ पर कोई नहीं था तो वह सब चीज़ें अब मैं इस्तेमाल कर सकता था।

पर इब्राहीम[31] ने मेरा ध्यान खींचा कि हम लोग तो धरती से अभी बहुत दूर थे और वहॉ हम बिना किसी आदमी की सहायता के नहीं पहुँच सकते थे।

हम लोगों ने कुछ मॉस खा कर और कुछ पी कर अपने आपको तरोताजा किया जो हमें वहॉ के भंडारघर में काफी मिल गया था। फिर हम लोग डैक पर ऊपर चढ़ आये पर फिर उन लाशों को देख कर हमारा जी घबराने लगा।

[31] Ibrahim – name of the servant

हम लोगों ने सोचा कि हम उस वातावरण से कहीं अलग हो जायें सो हमने सोचा कि हम उन लाशों को समुद्र में फेंक देते हैं। पर जब हम ऐसा करने लगे तो हम तो यह देख कर फिर एक बार हक्का बक्का रह गये कि उनमें से कोई भी लाश हमसे हिल भी नहीं पा रही थी।

वे सब लाशें जहाज़ के डैक के फर्श से कुछ इस तरह चिपकी पड़ी थीं कि अगर हमें उन्हें हटाना पड़े तो हमको डैक के तख़्ते निकालने पड़ते जिसके लिये औजार चाहिये थे।

कप्तान जो मस्तूल से चिपका खड़ा था उसको भी हटाना मुश्किल था। न हम उसके तने हुए हाथ से तलवार ही निकाल सके।

हमारा सारा दिन अपनी दुखी हालत पर विचार करते करते गुजर गया। जब रात होने लगी तो मैंने इब्राहीम को सोने के लिये कहा और कहा कि मैं डैक पर बैठता हूँ और इस हालत से निकलने का कोई रास्ता ढूँढता हूँ।

जब चॉद और तारे निकले तब समय का अन्दाजा लगा कर कि शायद इस समय रात के **11** बजे होंगे कि तभी मुझ पर नींद ने काबू कर लिया और मैं एक डिब्बे के पीछे की तरफ गिर पड़ा।

असल में मैं सोया नहीं था बस अलसाया सा हो रहा था क्योंकि मैंने समुद्र की लहरों को जहाज़ से साफ साफ टकराते सुना। मैंने उसके पाल भी टूटते सुने और हवा में सीटी की आवाज भी सुनी।

इतने में मुझे लगा कि मैंने शायद कुछ आवाजें भी सुनी। डैक पर कुछ लोगों के चलने की आवाजें। मैं यह देखने के लिये उठना चाह रहा था कि देखूँ कि क्या हो रहा है पर किसी अनदेखी ताकत ने जैसे मेरे सारे जोड़ों में से जान निकाल ली थी।

मैं तो अपनी ऑखें भी नहीं खोल सका लेकिन वे आवाजें और साफ होती जा रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे जहाज़ पर काम करने वाले खुश खुश इधर उधर घूम रहे थे। इस बीच मैंने कमान्डर की आवाज अलग से पहचान ली थी। उसके बाद रस्सियों और पालों की आवाजें आयीं।

धीरे धीरे मेरे होश हवास जाते रहे। मैं बहुत ही गहरी नींद सो गया। पर उस नींद में भी मुझे हथियारों की आवाजें आती रहीं।

मैं जब उठा तो दिन ही नहीं निकल आया था बल्कि दोपहर हो गयी थी। सूरज की गरम किरनें मेरे चहरे पर पड़ रही थीं। आश्चर्य से मैंने अपनी तरफ देखा अपने आपको देखा तो तूफान जहाज़ लाशें और जो कुछ रात को मैंने सुना था तो वह मुझे सब कुछ एक सपना सा लगा।

पर जब मैंने अपने चारों तरफ देखा तो वहाँ तभी भी वैसा ही था जैसा कल रात को था। लाशें अभी भी वहीं फर्श पर चिपकी हुई पड़ी थीं। कप्तान अभी भी मस्तूल से कस कर चिपका हुआ था।

मैं अपने सपने पर हॅस पड़ा और अपने साथी की खोज में चल पड़ा। इब्राहीम एक कमरे में दुखी हालत में बैठा हुआ था। जैसे ही

मैं उस कमरे में घुसा तो वह बोला — "मालिक। मैं इस जादुई जहाज़ पर दूसरी रात गुजारने की बजाय संसार के सबसे गहरे समुद्र की तली में बैठना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

मैंने उससे पूछा कि क्या हुआ तो वह बोला — "मैं यहाँ आ कर जब सो गया तो करीब एक घंटे के बाद ही मेरी आँख खुल गयी। मैंने अपने पास ही आती जाती आवाजें सुनीं। मुझे लगा कि शायद आप होंगे पर यहाँ तो करीब करीब 20 आदमी घूम रहे थे।

मैंने बातचीत और चिल्लाने की आवाजें भी सुनी। फिर मैंने सीढ़ियों पर किसी के चलने की आवाज सुनी और उसके बाद तो मैं बेहोश ही हो गया।

कभी कभी मुझे कुछ ऐसा लगता था कि जैसे वही आदमी जो मस्तूल से कीलों से जड़ा हुआ था मेज पर बैठा हुआ था। वह पी रहा था और गा रहा था। और उसके पास ही पड़ा हुआ एक आदमी जो लाल रंग का शाल ओढ़े था उसके पास बैठा हुआ था और वह उसको पीने में सहायता कर रहा था।"

ऐसा मेरे बूढ़े नौकर ने मुझसे कहा। तुम लोग मेरा विश्वास करो मेरे दोस्तों कि मुझे लग रहा था कि मेरा दिमाग ठीक काम नहीं कर रहा था पर ऐसा नहीं था क्योंकि इसमें कोई शक ही नहीं था कि मैंने भी लाशों को बोलते सुना था।

इस तरह की हालत में यह जहाज़ी यात्रा मुमकिन नहीं थी। बहुत भयानक थी। खैर इब्राहीम फिर से कुछ सोचने लग गया।

अचानक वह बोला — "अब समझ में आया।"

उसको एक कविता की एक लाइन याद आ गयी थी जो उसके अक्लमन्द और होशियार बाबा ने उसको सुनायी थी। वह लाइन किसी भी तरह के भूत से लोगों को आराम दिलवा सकती थी।

वह बोला कि अगली रात हम लोग जो जबरदस्ती से सो गये थे उस नींद को कुरान के उस वाक्य को बार बार और तेज़ तेज़ बोलने से आने से रोक सकेंगे।

उस बूढ़े की सलाह मुझे पसन्द आयी। आने वाली मुसीबत की आशा की चिन्ता में हमने रात आती देखी। उसके केबिन के पास ही एक छोटा सा कमरा था सो हमने उसी कमरे में सोने का तय किया।

हमने दरवाजे में कई छेद किये ताकि हम उस केबिन के अन्दर का सारा दृश्य देख सकें और फिर उसे जितनी मजबूती से बन्द कर सकते थे बन्द कर लिया। इब्राहीम ने उस कमरे के चारों कोनों में मुहम्मद साहब का नाम लिख लिया। और फिर उस भयानक दृश्य का इन्तजार करने लगे।

उस दिन भी रात के 11 ही बजे होंगे कि मुझे बहुत ज़ोर की नींद आने लगी। मेरे साथी ने मुझसे कुरान के कुछ वाक्य बोलने के लिये कहा। उन वाक्यों ने मुझे मेरी नींद पर काबू पाने में सहायता की।

तुरन्त ही मेरे सिर के ऊपर जैसे सब कुछ ज़िन्दा हो गया। रस्सियॉ चटकीं। डैक के ऊपर चलने की आवाज सुनायी दी। कई आवाजें साफ साफ सुनायी देने लगीं।

कुछ देर तक तो हम बहुत परेशान रहे क्योंकि हमने ऐसी आवाज सुनी जैसे कोई सीढ़ियॉ उतर रहा हो। इब्राहीम ने जब यह आवाज सुनी तो उसने वे शब्द दोहराने शुरू कर दिये जिन्हें उसके बाबा ने उसको जादू टोने और भूतों को भगाने के लिये सिखाये थे।

“आओ तुम हवा में से नीचे उतर कर आओ। आओ तुम समुद्र के नीचे से निकल कर आओ। तुम वहॉ से निकलो जहॉ से आग की लपटें निकल रही हैं। तुम कब्र में घुस जाओ। सब जगह अल्लाह का राज है। सब उसी का गीत गाओ। ओ आत्माओं उसी की शरण में जाओ। उसी को सिर झुकाओ।”

मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे इन लाइनों में कोई विश्वास नहीं था पर मेरे रोंगटे खड़े हो गये जब कमरे का दरवाजा खुला और वही शाही आदमी उसके अन्दर घुसा जो मस्तूल में बिंधा खड़ा था। भाला अभी भी उसके माथे से हो कर गुजर रहा था पर उसकी तलवार उसकी म्यान में थी।

उसके पीछे एक आदमी और घुसा जो उससे थोड़े से कम कीमती कपड़े पहने था। मैंने उसको भी डैक पर लेटे देखा था। कप्तान के चहरे का रंग अभी भी पीलापन लिये हुए था। उसकी

बड़ी काली दाढ़ी थी। बड़ी बड़ी गोल घूमती हुई आँखें थीं जिनसे वह सारा कमरा छान रहा था।

मैंने उसको साफ साफ देखा क्योंकि वह मेरे सामने ही घूम रहा था। पर ऐसा लगा जैसे उसने हमारे कमरे के बन्द दरवाजे की तरफ गौर नहीं किया जिसके पीछे हम छिपे हुए थे। वे दोनों एक मेज पर बैठ गये जो केबिन के बीच में पड़ी थी।

वहाँ बैठ कर वे ज़ोर ज़ोर से बातें कर रहे थे। मैं उनकी बात नहीं समझ पा रहा था क्योंकि वे किसी अनजान भाषा में बात कर रहे थे। धीरे धीरे उनकी आवाज ऊँची होती जा रही थी। कुछ देर बाद कप्तान ने मुट्ठी से मेज को धक्का मारा जिससे कि सारा का सारा जहाज़ हिल गया।

दूसरा आदमी बहुत ज़ोर से हँसते हुए वहाँ से उठ गया और कप्तान से अपने पीछे आने के लिये कहा। कप्तान उठा उसने अपनी तलवार निकाली और दोनों वहाँ से चले गये। उनके जाने के बाद हमारी साँस में साँस आयी पर हमारी चिन्ता बहुत देर तक नहीं गयी।

डैक पर शोर बढ़ता जा रहा था। हमने सुना कि लोग डैक पर दौड़ भाग रहे थे चिल्ला रहे थे हँस रहे थे। काफी देर बाद एक बहुत ही भयानक आवाज आयी कि हमको लगा कि डैक और पाल आदि सब हम पर गिरने वाले हैं। हथियार बज रहे थे लोग चीख रहे थे।

पर अचानक ही सब शान्त हो गया। बहुत देर बाद हमने ऊपर जाने की हिम्मत की तो हमने देखा कि सब कुछ वहाँ पहले जैसा ही था। कोई चीज़ अपनी जगह से ज़रा भी नहीं हिली थी। सब वैसे ही सख़्त थे जैसे लकड़ी की मूर्तियाँ।

इस तरह जहाज़ पर यात्रा करते करते हमें कई दिन निकल गये। हमारा जहाज़ धीरे धीरे पूर्व की तरफ बढ़ रहा था। मेरे अन्दाज़ के अनुसार उधर धरती थी।

पर दिन में वह जितनी दूर उधर जाता दिखायी देता तो लगता कि रात को वह वहीं वापस आ जाता जहाँ से चला था। क्योंकि हमको हमेशा इसलिये ऐसा लगा कि वह वही जगह थी क्योंकि वह वहीं आ जाता था जहाँ सूरज डूबता था।

हम इस बात को किसी तरह भी नहीं समझा सकते थे कि ऐसा कैसे होता था सिवाय इसके कि कि लाशें उसको रात को वापस उसी जगह ले आती थीं।

इस चीज़ को रोकने के लिये एक शाम हमने उसके सारे पाल रात होने से पहले ही उतार लिये। और उसी तरीके से जो हमने केबिन के दरवाजे के लिये इस्तेमाल किया था अपना काम किया।

हमने पेड़ की छाल पर मुहम्मद साहब का नाम लिखा और साथ में वे लाइनें भी लिखीं जो इब्राहीम के बाबा ने उसको बतायी थीं और उस टुकड़े को उन पालों के साथ कस कर बाँध दिया जो हमने

लपेट कर सँभाल कर रखी थीं। इसके बाद अब हम अपने कमरे से इसका असर देखने के लिये बहुत उत्सुक थे।

इस बार भी वे भूत फिर से प्रगट हुए पर वे इतने ज़्यादा गुस्से में नहीं थे। और देखो कि अगली सुबह वे पालें वहीं की वहीं उसी हालत में मौजूद थीं जिनमें हमने उन्हें पिछली शाम छोड़ा था।

दिन में हम लोग केवल उतना ही बढ़े जितना कि हमको बढ़ना चाहिये था। सो पाँच दिन में हम लोग वहाँ से काफी दूर तक चले आये।

आखिर छठे दिन की सुबह हमें जमीन दिखायी दी। हमने अल्लाह और उसके धर्मदूत को हमें इस परेशानी से निकालने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया। सो इस दिन और इस रात जहाज़ को हम किनारे किनारे खेते रहे।

अगली सुबह सातवें दिन हमको लगा कि हमने पास में ही एक शहर देखा है। बड़ी मुश्किल से हमने वहाँ जहाज़ का लंगर डाल दिया। वह जल्दी ही समुद्र की तली तक पहुँच गया। फिर हमने एक नाव जो डैक पर रखी थी समुद्र में उतारी और उसे अपनी पूरी ताकत के साथ शहर की तरफ खेने लगे।

आधे घंटे तक नाव खेने के बाद हम एक नदी में आ गये जो वहाँ समुद्र में आ कर मिलती थी। हम किनारे पर उतरे और एक दरवाजे पर पता किया कि वह कौन सा शहर था। पता चला कि

वह एक भारतीय शहर था। यह शहर उस जगह से ज़्यादा दूर नहीं था जहाँ मैं पहले जाना चाहता था।

वहाँ हम एक सराय में गये और इस साहसी समुद्री यात्रा के बाद तरोताजा हुए। फिर वहाँ सराय के मालिक से किसी ऐसे अक्लमन्द आदमी के बारे में पूछताछ की जो कुछ जादू टोना जानता हो।

उसने हमें दूर एक घर दिखाया जहाँ आ कर हमने उसका दरवाजा खटखटाया। एक आदमी हमें अन्दर ले गया और कहा कि हम केवल "मूले"[32] को ही पूछें।

घर में एक छोटा सा बूढ़ा मेरे पास आया जिसकी उलझी हुई दाढ़ी थी लम्बी नाक थी। उसने मुझसे पूछा कि मुझे क्या काम है तो मैंने कहा कि मुझे अक्लमन्द मूले से काम है। उसने कहा कि "मैं ही मूले हूँ। कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।"

तब मैंने उससे पूछा कि मैं उन लाशों का क्या करूँ और उनको जहाज़ में से कैसे उतारूँ।

वह बोला इन लोगों पर शायद समुद्र में किये गये किसी अपराध की वजह से जादू डाल दिया गया है। उसका विचार था कि जब उनको जमीन ले आया जायेगा तब उनका वह जादू अपने आप टूट जायेगा। मैंने कहा पर वे सब तो जहाज़ के डैक पर चिपके पड़े हैं हिलते भी नहीं हम उन्हें ला कैसे सकते हैं। तब उसने कहा कि हमको जिन तख्तों पर वे पड़े हैं उन्हीं को निकाल कर लाना पड़ेगा।

---

[32] Muley – name of the sorceror

उसने यह भी कहा कि भगवान की दृष्टि में और न्याय के अनुसार वह जहाज़ और उस पर रखा सामान मेरा है क्योंकि मैंने उसे पाया है। और अगर मैं इस बात को बिल्कुल छिपा कर रखूँगा और थोड़ी सी सम्पत्ति उसमें से उसको भी दे दूँगा तो वह उन लाशों को डैक पर से हटाने में मेरी सहायता करेगा।

मैंने उसको बहुत सारा इनाम देने का वायदा किया और हम उसके पाँच दास ले कर जहाज़ की तरफ चल दिये। उनके पास आरियाँ और कुल्हाड़ियाँ थीं। रास्ते में मूले से हमारे इस खुश खुश काम की कोई ज़्यादा प्रशंसा नहीं हो सकी जो उसको हमारे उन पालों के बाँधने की करनी चाहिये थी। उसने कहा कि केवल यही एक साधन है जिससे हम अपने आपको बचा सकते हैं।

सो अगले दिन सुबह जल्दी ही हम सब जहाज़ पर पहुँच गये और तुरन्त ही काम करना शुरू कर दिया। एक घंटे के अन्दर अन्दर हमने चार लाशों को नाव में रख दिया और उन्हें जमीन पर ले गये। कुछ दासों ने उन लाशों को वहाँ गाड़ भी दिया।

जब वे नाव पर लौटे तो उन्होंने हमसे कहा कि उन लाशों ने उनके दफ़नाने में उन्हें ज़रा भी परेशान नहीं किया क्योंकि जैसे ही उन्होंने उन्हें जमीन पर रखा तो वह धूल में मिल गयीं।

हम लोग बड़े ध्यान से उन लाशों का वहाँ से ले जाना देखते रहे। शाम से पहले पहले डैक से सारी लाशें जमीन पर भिजवा दी

गयीं जब तक कि वहाँ केवल एक आदमी जो मस्तूल से भाले से बिंधा खड़ा था वही रह गया।

हम उस भाले को उस आदमी के शरीर से निकालने की बहुत कोशिश करते रहे पर हमारी कोई भी कोशिश उसको बाल बराबर भी नहीं हिला सकी।

मैं नहीं जानता था कि अब मैं क्या करूँ क्योंकि अभी हम पाल लगा कर भी उसे किनारे पर नहीं ला सकते थे कि तभी मूले हमारी सहायता के लिये आ गया।

उसने एक दास को जमीन पर भेज कर वहाँ से एक बरतन मिट्टी लाने के लिये कहा। जब वह दास मिट्टी ले आया तो उसने उसके ऊपर अपने जादू के कुछ शब्द पढ़े और उस मिट्टी को उस मरे हुए आदमी के सिर पर डाल दिया।

तुरन्त ही उसने अपनी आँखें खोल दीं। एक गहरी साँस ली और भाले से जो उसके माथे पर घाव बन गया था उसमें से खून बहने लगा। हमने उसे धीरे से बाहर निकाला तो वह घायल आदमी हमारे एक दास की बाँहों में गिर पड़ा।

जब वह थोड़ा सा होश में आया तो वह बोला — "मुझे यहाँ कौन लाया?"

मूले ने मुझे इशारा किया और मैं उसकी तरफ आगे बढ़ा। वह बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद ओ अजनबी। तुमने मुझे बहुत लम्बी तकलीफ से बचा लिया वरना 50 साल तक मेरा यह शरीर

समुद्र की इन लहरों पर घूमने वाला हो रहा था। मेरी आत्मा को यह शाप था कि वह हर रात इस शरीर में आती।

पर अब क्योंकि मिट्टी ने मेरे सिर को छू लिया है तो मेरा अपराध खत्म हो गया। मैं अब अपने पुरखों के पास जा सकता हूँ।"

यह सुन कर मैंने उससे विनती की कि वह मुझे बताये कि वह उस हालत में कैसे आया था। तब उसने मुझे यह कहानी सुनायी।

"पचास साल पहले मैं एक बहुत ही बड़ा और शानदार आदमी था। मेरा दबदबा चारों तरफ फैल हुआ था। मैं अल्जीरिया[33] में रहता था। कुछ कमाने की इच्छा से मैं जहाज़ पर यात्रा करने के लिये तैयार हुआ और एक समुदी डाकू[34] बन गया। मैं यह काम पहले भी कर चुका था।

उस समय ज़ैन्टे[35] में मैंने एक दरवेश[36] को अपने साथ ले लिया। वह केवल यात्रा के लिये जहाज़ पर रहना चाहता था। अब मैं और मेरे साथी तो सब बुरे आदमी थे सो हम किसी भी आदमी की पवित्रता की कोई इज़्ज़त नहीं करते थे। खास करके मैं उसका बहुत मजाक बनाया करता था।

---

[33] Algiers or Algeria is an African country situated in far North side on the shore of Mediterranean Sea.

[34] Translated for the word "Pirate"

[35] Zante – name of a place

[36] Dervise

एक बार उसने अपनी पवित्रता में मुझे मेरे बुरे कामों के लिये डॉटा। पर उसी शाम जब मैंने अपने नाविक के साथ केबिन में काफी पी ली थी मुझे बहुत ज़ोर का गुस्सा आ गया।

यह सोचते हुए कि दरवेश ने मुझसे कुछ ऐसा कहा था जो मैं एक सुलतान से भी नहीं सुन सकता था मैं डैक पर भागा और अपना चाकू उसकी छाती में मार दिया। मरते हुए उसने मुझे और मेरे जहाज़ पर सब काम करने वालों को शाप दिया कि न तो हम मरें और न हम ज़िन्दा ही रहें जब तक कि हमारा सिर मिट्टी को न छुए।

उसके बाद दरवेश तो मर गया और हमने उसे समुद्र में फेंक दिया। पर उसी रात जब हम उसकी नीच बातों पर हॅस रहे थे तो उसके शब्द सच हो गये। मेरे साथ काम करने वालों का एक हिस्सा मेरे खिलाफ हो गया।

हम उनसे हिम्मत से लड़ते रहे जब तक कि मेरे सारे दोस्त लोग मर नहीं गये और मुझे मस्तूल से एक भाले से ठोक नहीं दिया गया। दूसरे लोग भी घायल होने की वजह से मर गये। और जल्दी ही मेरा जहाज़ एक चलती फिरती कब्र बन गया।

मेरी ऑखें बन्द हो गयीं मेरी सॉस रुक गयी। मुझे लगा कि मैं मर रहा हॅू पर मेरी बेहोशी की सी हालत ने मुझे मस्तूल से बॉधे रखा।

अगली रात उसी समय जिस समय हमने दरवेश का शरीर समुद्र में फेंका था मैं अपने सब साथियों सहित जाग गया। हम सब ज़िन्दा

हो गये थे पर हम न तो कुछ और कर सकते थे न कुछ और कह सकते थे सिवाय उसके जो हम लोग उस मरने वाली रात को कह रहे थे या कर रहे थे।

इस तरह से हम उसी जहाज़ में बिना जिये और बिना मरे **50** साल तक समुद्र में घूमते रहे। क्योंकि इस तरह से तो हम जमीन पर भी नहीं पहुँच सकते थे।

बस हम इसी बात की आशा करते रहे कि शायद कभी कोई तूफान आ जाये और हमें किसी पहाड़ी से टकरा दे और हमारे हाथ समुद्र की तली से छू जायें। पर इसमें भी हम कभी सफल नहीं हो पाये। अब मैं शान्ति से मर जाऊँगा।

ओ मुझे बचाने वाले अनजान। फिर से तुमको लाख लाख धन्यवाद। अगर यहाँ का खजाना तुम्हारे इस भले काम का इनाम हो तो मेरा यह जहाज़ तुम इसके इनाम के तौर पर रख लो।"

इतना कह कर कप्तान का सिर लटक गया और वह मर गया। उसका शरीर भी उसके साथियों के शरीर की तरह से मिट्टी हो गया। उस मिट्टी को हमने एक बरतन में इकट्ठा कर लिया और किनारे पर ला कर गाड़ दिया।

फिर शहर से मैंने कुछ कारीगर लिये और उनको उस जहाज़ को ठीक करने पर लगाया। उसके बाद मैंने उस जहाज़ पर रखा सारा सामान काफी फायदे पर बेच दिया और दूसरा सामान खरीद

लिया। मैंने अपने साथ करने वाले भी नये रख लिये। मूले को बहुत सारा इनाम दिया और फिर अपने देश को चल दिया।

मैंने एक गोल गोल जाने वाला रास्ता लिया। इस रास्ते पर मैं कई टापुओं पर रुका कई देशों में गया और वहॉ अपना सौदा बेचा खरीदा। धर्मदूत ने मुझे आशीर्वाद दिया।

कई सालों बाद मैं बलसोरा लौटा। अब मैं पहले से दोगुना अमीर था जैसा कि मुझे वह मरा हुआ कप्तान बना गया था। शहर में मेरे साथी लोग मुझे इतना अमीर देख कर बहुत हैरान थे।

वे मेरी किसी भी बात पर विश्वास नहीं कर रहे थे सिवाय इसके कि मुझे कहीं कोई सिनबाद जैसी हीरे की खान मिल गयी थी जिसने मुझे इतना सब कुछ दिया। सो मैंने उनको वैसा ही सोचते छोड़ दिया।

उसके बाद बलसोरा के जवान बच्चे जब **18** साल की उम्र तक पहॅुचे तो मैंने उनको दुनियॉ देखने के लिये और अपनी किस्मत आजमाने के लिये उकसाया।

मैं उसके बाद शान्ति से रहा और हर पॉच साल बाद अल्लाह को अपने ऊपर कृपा रखने के लिये धन्यवाद देने के लिये और उस मरे हुए कप्तान और उसके साथियों को स्वर्ग मे जगह देने के लिये प्रार्थना करने के लिये मक्का आता जाता रहा।

अब कारवॉ अगले दिन बिना किसी रोकटोक के आगे चला और जब वे रुके तो अजनबी सलीम ने सबसे छोटे सौदागर मूले से कहा कि अब वह अपनी कोई कहानी बताये।

सलीम ने कहा — "तुम हम सबमें छोटे हो फिर भी तुम हमेशा एक नये उत्साह में रहते हो सो अब तुम हमको कोई ख़ुशी की कहानी सुनाओ ताकि हम सब इस गरमी से कुछ छुटकारा पा सकें।"

मूले बोला — "निश्चित रूप से मैं आपको बड़ी आसानी से एक ऐसी कहानी सुना सकता हूँ जो आपको हँसायेगी भी और फिर भी वह बहुत शालीन भी होगी। इसलिये मेरे बड़े लोग उसे एक उदाहरण बना सकते हैं।

ज़ाल्यूकोस[37] तो हमेशा गम्भीर और थोड़ा चुप ही रहते है क्या उनको हमें यह नहीं बताना चाहिये कि उन्होंने अपनी ज़िन्दगी इतनी गम्भीर क्यों बना रखी है। शायद हम इनका दुख कुछ बॉट सकें। अगर हम ऐसा कर सके तो हम जरूर ही इनके भाई का काम करेंगे चाहे ये दूसरे धर्म के ही क्यों न हों।"

जिस आदमी से यह कहा गया था वह अधेड़ उम्र का एक यूनानी[38] सौदागर था। वह सुन्दर था और मजबूत काठी का था पर बहुत ही गम्भीर किस्म का आदमी था।

---

[37] Zaleukos

[38] From Greece

वह मुसलमान तो नहीं था पर सब लोग उसको बहुत प्यार करते थे। उसका सारा व्यवहार उन सबको इस बात के लिये प्रेरित करता था कि वे उसकी इज़्ज़त करें और उसमें भरोसा रखें।

उसका एक हाथ नहीं था से उसके कुछ साथी उसके बारे में कुछ कुछ कहा करते थे। शायद इसी ने उसके चरित्र को यह रूप दे रखा था कि वह गम्भीर और सकुचा सकुचा सा रहता था।

यह सुन कर ज़ाल्यूकोस बोला — "मैं तुम सबके विश्वास को देख कर बहुत ही गर्व महसूस कर रहा हूँ। मुझे कोई दुख नहीं है जिससे तुम लोग मुझे छुटकारा दिला सको। फिर भी जब मूले ने मुझसे यह कहा है कि मैं गम्भीर रहता हूँ तो मैं तुम सबको कुछ ऐसा सुनाता हूँ जो यह साबित करे कि मैं दूसरों से ज़्यादा गम्भीर क्यों हूँ।

तुम सबको पता है कि मेरा बॉया हाथ नहीं है। ऐसा मैं जन्म से ही नहीं था। इसमें मेरी कोई गलती थी, या मैं ज़्यादा गम्भीर होने के लिये गलत हूँ, या फिर मेरी ज़िन्दगी की हालत ने मुझे ऐसा बना दिया है यह सब अब तुम ही निश्चित करो।

4 कटे हुए हाथ की कहानी[39]

मेरा जन्म कौन्सटैन्टीनोपिल[40] में हुआ था। मेरे पिता ओटोमान बन्दरगाह पर एक दुभाषिये का काम करते थे। इसके अलावा उनका इत्र और सिल्क का भी अच्छा व्यापार था।

उन्होंने मुझे बहुत अच्छा पढ़ाया लिखाया और क्योंकि वह खुद भी पढ़े लिखे थे तो उन्होंने मुझे खुद भी पढ़ाया और हमारे पुजारी जी से भी पढ़वाया।

पहले तो उन्होंने यह सोचा कि मैं उनका व्यापार सँभाल लूँ पर उन्होंने देखा कि मेरे अन्दर उनकी आशा से कुछ ज़्यादा ही होशियारी है तो अपने दोस्तों की सलाह से उन्होंने मुझे डाक्टरी पढ़ाने का सोचा ताकि बाद में मैं डाक्टर बन जाऊँ। काश वह यह जानते होते कि कौन्सटैन्टीनोपिल में तो कोई भी यह काम कर सकता था।

हमरे घर फ्रांस से बहुत सारे लोग आया करते थे। उनमें से एक आदमी ने मेरे पिता को मुझे अपने देश फ्रांस में पेरिस[41] भेजने पर मना लिया जहाँ मैं अपना काम बहुत अच्छी तरह से सीख सकता

[39] The Story of the Hewn-off Hand. (Tale No 4) Told by Zaleukos – a Greek merchant

[40] Constantinople was the capital of Roman and Byzantine Empires from 395 BC to 1453 AD. It is modern Turkish Istanbul, formerly known as Constantinople, ancient Byzantium, largest city and principal seaport of Turkey. The old walled city of Istanbul stands on a triangular peninsula between Europe and Asia. See its location on next page.

[41] Paris is the capital of France.

था। उसने कहा कि अबकी बार जब वह वहॉ से लौटेगा तो वह मुझे अपने साथ अपने खरचे पर वहॉ ले जायेगा।

मेरे पिता अपनी जवानी में खुद भी एक यात्री रह चुके थे सो वह राजी हो गये और उस फ्रेंच ने मुझसे कहा कि तीन महीने में उसके साथ जाने के लिये तैयार रहूॅ।

यह जान कर मैं तो खुशी से फूल गया कि अब मुझे विदेश की धरती देखने को मिलेगी। मुझसे उस पल का इन्तजार नहीं हो पा रहा था जब मैं वहॉ जाऊॅगा। आखिर उस अजनबी का काम खत्म हो गया और वह मुझे ले जाने के लिये तैयार था।

अपनी समुद्री यात्रा शुरू करने के दिन के पहले वाली शाम मेरे पिता मुझे अपने सोने वाले कमरे में ले गये। वहॉ मैंने एक मेज पर बढ़िया कपड़े और हथियार रखे देखे। पर जिसने मेरी ऑखों को

सबसे ज़्यादा आकर्षित किया वह था सोने का एक बड़ा ढेर। क्योंकि मैंने इतना सारा सोना एक साथ पहले कभी देखा नहीं था।

मेरे पिता ने मुझे गले लगाया और कहा — "देखो बेटा। मैंने तुम्हारी यात्रा के लिये ये कपड़े निकाल कर रखे हैं। ये हथियार भी तुम्हारे ही हैं। ये वे हथियार हैं जो तुम्हारे बाबा ने मुझे तब दिये थे जब मैं विदेश जा रहा था।

मुझे मालूम है कि तुम इन्हें इस्तेमाल कर सकते हो पर इनको तब तक इस्तेमाल नहीं करना जब तक कि तुम पर कोई हमला न हो। और देखो हमेशा अच्छी नीयत से काम करना।

मेरे पास कोई बहुत ज़्यादा पैसा नहीं है। मैंने इसको तीन हिस्सों में बाँट दिया है। इसका एक हिस्सा तुम्हारा है इसका दूसरा हिस्सा मेरे लिये है और जो पैसा बच गया है वह मुसीबत के समय के लिये है। मेरा तीसरा हिस्सा पवित्र पैसा है मैं उसको छुऊँगा भी नहीं। वह तुम्हारी जरूरत के समय काम आयेगा।"

मेरे पिता ने मुझसे ऐसा कहा तो मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। शायद अलग होने की वजह से। क्योंकि उस दिन के बाद से मैंने उन्हें फिर कभी नहीं देखा।

हमारी यात्रा बहुत अच्छी थी। हम जल्दी ही फ्रांस पहुँच गये। छह दिन की यात्रा के बाद हम पेरिस में थे। यहाँ मेरे फ्रैंच दोस्त ने मेरे लिये एक कमरा किराये पर लिया और मुझे सलाह दी कि मैं

अपना पैसा बेकार न खर्च करूँ। इसका मतलब था **2000** थेलर[42]।

यहॉ मैं तीन साल रहा और वह सब सीखा जो एक डाक्टर को जानना चाहिये। अगर मैं यह कहूॅ कि मैं वहा बहुत खुश था तो उस समय मैं झूठ बोल रहा होऊॅगा क्योंकि वहॉ के लोगों के रीति रिवाज मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते थे। फिर भी वहॉ मेरे कुछ अच्छे दोस्त बन गये थे जो कुलीन घरों के नौजवान थे।

आखिर अपने घर जाने की मेरी इच्छा बहुत ज़्यादा हो गयी। इस बीच मैंने अपने पिता के बारे में कुछ नहीं सुना था तो मुझे लगा कि मुझे अब अपने घर जाना चाहिये।

कुछ लोग फ्रांस से सुप्रीम पोर्ट को जा रहे थे सो मैंने सोचा कि मैं उनके साथ चीर फाड़ वाले डाक्टर[43] की हैसियत से चला जाता हूॅ। जल्दी ही मैं इस्तानबूल[44] आ पहुॅचा।

जब मैं अपने पिता के घर पहुॅचा तो उसको बन्द पाया और मेरे पड़ोसी मुझे देख कर आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने मुझे बताया कि मेरे पिता दो महीने पहले ही चल बसे। वह पुजारी जी जिन्होंने मुझे बचपन में पढ़ाया था उन्होंने मुझे घर की चाभी ला कर दी।

---

[42] Thaler was a silver coin used throughout Europe for almost 400 years – see its picture above.

[43] Translated for the word “Surgeon”

[44] Istanbul is the principal port city of Turkey. Constantinople was the capital of Roman and Byzantine Empires from 395 BC to 1453 AD. Now it is modern Turkish Istanbul, formerly known as Constantinople. The old walled city of Istanbul stands on a triangular peninsula between Europe and Asia.

अकेला और अनाथ सा मैं घर के भीतर घुसा। मैंने सब कुछ वहीं उसी तरह से पड़ा हुआ पाया जैसा वह छोड़ कर गये थे। पर वह सोना जो वह मुझे छोड़ कर जाने वाले थे वह वहाँ नहीं था।

मैंने बड़े आदर से पुजारी जी से पूछा तो उन्होंने सिर झुकाया और कहा — "तुम्हारे पिता एक पवित्र आदमी की मौत मरे थे। उन्होंने अपना सारा सोना चर्च को दे दिया था।"

यह बात तो मेरी समझ में ही नहीं आयी फिर भी मैं क्या करता। मेरे पास पुजारी जी के खिलाफ कोई सबूत तो था नहीं। मैंने अपने आपको खुशकिस्मत समझा कि उन्होंने मेरे घर में मेरे पिता की मुझे दी हुई चीज़ें नहीं देखी थीं कि वह मेरे लिये क्या छोड़ कर गये हैं वरना... ।

यह मेरी पहली बदकिस्मती थी जो मैंने सही। पर इसके बाद तो एक के बाद दूसरी और दूसरी बदकिस्मती के बाद तीसरी बदकिस्मती मेरे ऊपर आती ही रही।

मैं एक चीर फाड़ का डाक्टर था यह बात लोग अपने आप तो जान नहीं सकते थे क्योंकि मैं कोई धोखाधड़ी वाला डाक्टर तो बन नहीं सकता था और अब मेरे पिता भी नहीं थे जो लोगों को यह बताते कि मैं डाक्टर हूँ या फिर ऊँचे और अमीर लोगों से मुझे मिलवाते।

पर अब वे लोग बेचारे ज़ाल्यूकोस[45] को तो भूल ही गये थे। मेरे पिता की छोड़ी हुई चीज़ें भी कोई खरीद नहीं रहा था क्योंकि उनके ग्राहक भी सब इधर उधर चले गये थे और नये ग्राहकों को आने में समय लगता।

एक दिन बैठा बैठा मैं अपनी हालत के बारे में सोच सोच कर दुखी हो रहा था कि जब मैं फ्रांस में था तो वहॉ मैंने कई अपने देश वाले देखे थे जो वहॉ घूमते रहते थे और शहर के बाजारों में बेचने के लिये अपना सामान दिखाते रहते थे।

मुझे यह भी याद आया कि वहॉ के लोग उनके सामान को जल्दी ही खरीद लिया करते थे क्योंकि वह उनको विदेशी लगता था। तो मैंने सोचा कि इस तरह से तो मैं सौ गुना पैसा ज़्यादा कमा सकता हूँ। बस मैंने अपना सोचा हुआ किया।

मैंने अपने पिता का घर बेच दिया। उसको बेच कर जो पैसा मुझे मिला उसमें से थोड़ा सा पैसा मैंने अपने एक विश्वास वाले दोस्त को रखने के लिये दे दिया और बचे हुए पैसे से मैंने ऐसा कुछ सामान खरीदा जो फ्रांस में मुश्किल से मिलता था जैसे शाल रेशम की बनी चीज़ें कुछ मरहम कुछ तेल आदि। इस सामान को रखने के लिये मैंने एक जहाज़ पर जगह खरीद ली और इस तरह मैं दोबारा फ्रांस चल दिया।

[45] Zaleukos – name of the doctor and storyteller of this story

ऐसा लगा जैसे मेरी किस्मत खुलने वाली हो। हमारी फ्रांस की यात्रा बहुत अच्छी रही। मैं फ्रांस के कई छोटे बड़े शहरों में घूमा वहाँ सभी जगह मुझे अपने सामान के खरीदने वाले मिल गये। इस्तानबूल में जो मेरा दोस्त था वह मुझे हमेशा नया सामान भेजता रहता था। इस तरह मैं रोज ब रोज अमीर होता चला गया।

आखीर में जब मैंने देखा कि मेरा काम बहुत अच्छा चल रहा है तो मुझे यह भी भरोसा हो गया कि अब मुझे किसी और बड़े काम में लग जाना चाहिये। सो मैं अपना सामान ले कर इटली गया।

यहाँ मैं यह बताना जरूरी समझता हूँ जिसने मुझे बहुत पैसा दिया। इसमें मेरे डाक्टरी के काम ने भी मुझे बहुत सहारा दिया। जैसे ही मैं एक शहर में पहुँचा तो इश्तिहारों से मैंने सब लोगों में यह बात फैला दी कि यूनान का एक डाक्टर उस शहर में आया है जिसने कई लोगों को ठीक कर दिया है।

इस इश्तिहार से सचमुच ही मेरे पास बहुत सारे रोगी आये और मैंने अपनी दवाओं से बहुतों को ठीक भी किया।

इसके बाद मैं फ्लोरैन्स[46] पहुँचा। मैंने सोचा कि मैं इस जगह में काफी दिन रहूँगा क्योंकि एक तो मुझे वह जगह बहुत अच्छी लगी दूसरे मैंने सोचा कि यहाँ रह कर कुछ दिन में मैं अपनी यात्रा की थकान भी मिटा लूँगा।

---

[46] Florence – a big well-known city of Italy

वहॉ के एक मोहल्ले सेन्ट क्रोसे[47] में मैंने एक दूकान किराये पर ली और उस जगह के पास ही एक सराय में मैं रुक गया। वहॉ मैंने दो कमरे किराये पर लिये जिनका छज्जा बाहर की तरफ खुलता था।

तुरन्त ही मैंने अपने इश्तिहार चारों तरफ बॅटवा दिये जिसमें मैंने अपने आपको एक डाक्टर और एक सौदागर बताया था। जैसे ही मैंने अपनी दूकान खोली मेरे पास खरीदार आने शुरू हो गये। हालॉकि मैंने उनसे कुछ ऊँची ही कीमत मॉगी थी फिर भी मैंने दूसरों से बहुत ज़्यादा चीज़ें बेचीं। क्योंकि मैं अपने ग्राहकों के साथ बहुत नरमी और दोस्ती का व्यवहार करता था।

मुझे अपने वहॉ के काम से बहुत सन्तुष्टि थी। मैं वहॉ चार दिन रुका। एक बार शाम को अपनी दूकान बढ़ाने के बाद जैसा कि मेरा तरीका था मैं अपने मरहम के डिब्बे देख रहा था कि मैंने एक छोटे डिब्बे में एक चिट्ठी रखी देखी। मुझे तो याद नहीं आ रहा था कि ऐसी कोई चिट्ठी मैंने किसी मरहम के डिब्बे में रखी हो।

मैंने उसे खोला और पढ़ा तो किसी ने मुझे उसी रात को ठीक 12 बजे पौन्टे वैचियो[48] नाम के पुल पर बुलाया था। कुछ देर तक तो मैं उसको हाथ में लिये हुए सोचता रहा कि ऐसा कौन हो सकता

[47] St Croce

[48] Ponte Vecchio

था जो मुझे इस तरह वहाँ बुलाता क्योंकि मैं तो फ्लोरैन्स में किसी को जानता ही नहीं था।

फिर मैंने सोचा कि जैसा कि एक बार पहले भी मेरे साथ हो चुका था कि हो सकता है कोई मुझे छिपे तौर पर किसी बीमार आदमी को दिखाना चाहता हो। सो मैंने सोचा कि मुझे वहाँ जाना ही चाहिये। सावधानी के लिये मैंने अपनी तलवार रख ली जो मेरे पिता ने मुझे दी थी।

आधी रात होने वाली थी सो मैं उस पुल की तरफ चल दिया। जल्दी ही मैं वहाँ पहुँच भी गया। पुल पर अभी कोई नहीं था सो मैंने सोचा कि मैं अपने बुलाने वाले का इन्तजार करता हूँ।

रात ठंडी थी। आसमान साफ था। चाँद बिल्कुल साफ चमक रहा था उसकी परछाई अर्नो के पानी[49] में पड़ रही थी और चमक रही थी। शहर के चर्च की घड़ी **12** बजा रही थी।

जब मैंने ऊपर की तरफ देखा तो देखा कि सिर से पाँव तक लाल शाल[50] ओढ़े एक लम्बा सा आदमी खड़ा हुआ है। उस शाल का एक कोना उसने अपने चेहरे पर भी रखा हुआ है।

अचानक यह सब देख कर पहले तो मैं डर गया लेकिन फिर अपने आपको सँभाल कर मैंने उससे कहा

[49] Arno – maybe some water body (river or riverlet etc) on which the bridge was built.
[50] Translated for the word “Cloak” – see its picture above.

— "अगर मुझे यहाँ आपने बुलाया है तो बताइये कि मैं आपकी खुशी के लिये क्या कर सकता हूँ।"

लाल शाल वाला घूमा और बोला — "मेरे पीछे पीछे आओ।"

इस अजनबी के साथ इस तरह से अकेले इसके पीछे पीछे जाने के विचार से ही मैं परेशान था। पहले तो मैं खड़ा रहा फिर बोला — "ऐसे नहीं जनाब। पहले आप मुझे यह बतायें कि आप मुझे कहाँ ले जा रहे हैं। इसके अलावा आप मुझे अपना चेहरा भी दिखायें ताकि मुझे यह पता चल जाये कि आपके इरादे मेरी तरफ अच्छे हैं।"

यह सुन कर अनजान आदमी कुछ नाराज सा हो गया वह बोला — "ज़ाल्यूकोस। अगर तुम नहीं जाना चाहते तो यहीं रहो।"

कह कर वह वहाँ से चलने लगा तो मुझे और गुस्सा आ गया। मैंने कहा — "आप क्या सोचते हैं कि आप मुझे इस तरह से बेवकूफ बना लेंगे और मैं सारी रात यहाँ बेवकूफों की तरह इन्तजार करता रहूँगा।"

तीन कदम में ही मैं उसके पास पहुँच गया और पहले से भी ज़्यादा चिल्ला कर बोला। एक हाथ से मैंने उसका लाल शाल पकड़ा और दूसरे हाथ अपनी तलवार पर रखा पर इतनी देर में तो वह पास वाले कोने पर जा कर गायब हो गया।

धीरे धीरे मेरा गुस्सा ठंडा हो गया। मेरे हाथ में वह लाल शाल अभी भी था। यहीं इस घटना की समाप्ति हो जाती है। मैंने उसको पहन लिया और घर की तरफ चल पड़ा।

लेकिन मैं अभी केवल 100 कदम ही चला था कि कोई मेरे पास से गुजरा और फ्रैन्च में फुसफुसाया — "ओ काउन्ट[51]। बस देखते जाओ आज की रात हम कुछ नहीं कर सकते।" इससे पहले कि मैं इसको देख सकता यह भी आगे जा चुका था। एक घर के पास बस मुझे उसका साया ही घूमता हुआ दिखायी पड़ा।

लगता है कि यह बात उस शाल वाले से कही गयी थी मुझसे नहीं और जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया कि अगर उसको पता चला कि मैंने यह बात जान ली है तो इसका मतलब यह था कि वह मुझे किसी तीसरे आदमी द्वारा भी बुला सकता था। पर मेरे पास इस बात की कोई सफाई नहीं थी।

जब मैं यह सब सोच रहा तो मैंने उस कपड़े को एक बार फिर से ध्यान से देखा। वह जिनोआ की गहरे लाल रंग की भारी वाली मखमल[52] का बना हुआ था। उसके चारों तरफ अस्ट्राचन का फ़र[53] लगा हुआ था और उसके ऊपर सोने के तारों से बहुत सारी कढ़ाई हो रखी थी।

---

[51] Count is respectable position in Imperial administration.

[52] Heavy velvet of Genoa – Genoa is a port city in Italy

[53] Fir of Astrachan

मुझे उस शानदार शाल को देख कर एक प्लान दिमाग में आया और मैंने तुरन्त ही उसको काम में लाने का निश्चय किया। अगले दिन मैं उसको अपनी दूकान ले गया और उसको बेचने के लिये लगा दिया।

जान बूझ कर मैंने उसके इतने ऊँचे दाम रखे जिससे मुझे उसका कोई मामूली खरीदार न मिले। यह करने का मेरा खास उद्देश्य यह था कि मैं हर उस आने जाने वाले खरीदार पर नजर रखता जो उसे खरीदने की इच्छा रखता।

क्योंकि उस शाल के खोने के बाद से उस अजनबी का आकार मेरी ऑखों में बसा हुआ था और मैं उसे हजारों में पहचान सकता था।

उस शाल को खरीदने के लिये कई सौदागर आये क्योंकि उसकी असाधारण सुन्दरता ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लिया था पर उनमें से एक भी मुझे वह आदमी नहीं लगा जिसने उस रात यह शाल पहन रखा था। कोई उसकी कीमत **200** ज़ैकिन देने के लिये तैयार नहीं था।

यह मेरे लिये बड़े आश्चर्य की बात थी कि जब मैंने एक दो लोगों से यह पूछा कि क्या उन्होंने वैसा शाल फ्लोरैन्स में कहीं और देखा है तो उन्होंने न में अपना सिर हिला दिया। उन्होंने यह भी कहा कि इतनी बढ़िया कारीगरी उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थी।

बस अब शाम होने जा रही थी कि आखीर में एक नौजवान मेरी दूकान पर आया। वह मेरी दूकान पर पहले भी अक्सर आया करता था। उसने उस शाल की काफी ऊँची कीमत लगायी। उसने मेरी मेज पर ज़ैकिन्स का एक थैला फेंकते हुए कहा — "भगवान की कसम ज़ालूक्योस। मुझे तुम्हारा यह शाल चाहिये ही चाहिये। क्या इसके लिये तुम मुझे भिखारी बना कर ही छोड़ोगे?"

और यह कह कर उसने थैले में रखे सोने के सिक्के गिनने शुरू कर दिये।

अब तो मैं बड़े पशोपेश में पड़ गया। मैंने तो यह शाल वहाँ इस इच्छा से रखा था ताकि मैं अपने अनजान दोस्त को एक बार फिर देख सकूँ पर यहाँ तो यह सीधा सादा एक नौजवान आ गया और उसने उसकी इतनी ऊँची कीमत लगा दी।

अब मेरे पास क्या बचा था। मैंने उसको वह शाल बेच दिया। बस यही मेरा सन्तोष था कि मुझे मेरे रात के कारनामे ने इतना कुछ दिया। उस नौजवान ने वह शाल पहना और वहाँ से चल दिया।

उसने अभी दूकान की केवल देहरी ही पार की थी कि उसने उस शाल के कौलर से एक कागज निकाला और उसे मेरी तरफ फेंकते हुए कहा — "यह लो ज़ाल्यूकोस। यहाँ इसमें कुछ है जो मेरी खरीद में शामिल नहीं है।"

बिना किसी भाव के मैंने वह नोट उससे ले लिया। मैंने उसे खोल कर पढ़ा तो लो देखो कि उसमें क्या लिखा था। उसमें लिखा था —

“आज रात को तुम शाल को ले कर पौन्टे विचिओ पुल पर आना तुम्हें समय पता है। **400** ज़ैकिन्स वहाँ तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।”

यह पढ़ कर मैं तो वहाँ ऐसे खड़ा रह गया जैसे मेरे ऊपर कोई बिजली गिर पड़ी हो। इस तरह से क्या मैं अपनी किस्मत से खेल रहा था और मेरा निशाना चूक गया था।

मैं उस नौजवान की तरफ बढ़ा — “तुम अपने ज़ैकिन्स वापस ले लो और मेरा शाल मुझे वापस कर दो। मैं तुम्हें यह शाल किसी भी हालत में नहीं बेच सकता।”

पहले तो उसको लगा कि मैं मजाक कर रहा था पर जब उसने देखा कि मैं गम्भीर था तो उसने मुझे बेवकूफ कहा और बात हाथापाई तक पहुँच गयी। मेरी किस्मत अच्छी थी कि मैंने इस छोटी सी लड़ाई में शाल अपने हाथ में पकड़ लिया।

मैं उसको ले कर जाने ही वाला था कि उस भले आदमी ने पुलिस को बुला लिया तो हम दोनों को अदालत ले जाया गया। मजिस्ट्रेट इस लड़ाई को देख कर आश्चर्यचकित था फिर भी उसने फैसला उस नौजवान के हक में दिया।

मैंने उस नौजवान को 20, 50, 80 और आखीर में 100 ज़ैकिन्स दिये। यह उसके अलावा था जो अगर मैंने शाल उसको वापस कर दिया तो उसके दिये हुए 200 ज़ैकिन्स भी वापस करने पड़ेंगे। जो कुछ मेरी प्रार्थना मुझे न दे सकी वह मुझे सोने ने दे दिया।

वह मेरे ज़ैकिन्स ले कर चला गया और मैं भी खुशी खुशी अपना शाल ले कर आ गया। मैं तो इस बात का धन्यवाद दे रहा था कि फ्लोरैन्स में सब मुझे पागल समझते थे। फिर भी लोगों की मेरे बारे में यह राय इसलिये थी क्योंकि उनका मुझसे कोई मतलब नहीं था। क्योंकि मैं उनसे ज़्यादा जानता था कि मैं अभी भी अपने इस सौदे से ज़्यादा कमाऊँगा।

बड़ी बेचैनी से मैं रात का इन्तजार करता रहा। पहली रात के समय पर ही मैं पौन्टे वैचियो पुल चल दिया। शाल मेरी बगल में था। जैसे ही 12 बजे तो एक शक्ल मेरे सामने आ कर खड़ी हुई। इसमें कोई शक नहीं था कि यह वही आदमी था जो कल रात मेरे पास आया था।

उसने मुझसे पूछा — "क्या तुम्हारे पास शाल है?"

मैं बोला — "हॉ है। पर मुझे वह 100 ज़ैकिन्स नकद का पड़ा।"

वह बोला — "मुझे मालूम है। लो ये 400 ज़ैकिन्स हैं।" वह मेरे साथ साथ पुल की चौड़ी रेलिंग की तरफ चला और सोने के

सिक्के गिन दिये। चॉदनी में वे सोने के सिक्के बहुत चमक रहे थे। उनकी चमक ने मेरा दिल खुश कर दिया था।

आह। पर मैं यह नहीं देख सका कि वह मेरी आखिरी खुशी थी। मैंने वे सिक्के जेब में रख लिये और चाहा कि मैं उस अजनबी की शक्ल ठीक से देख लूँ। पर उसके चहरे पर एक और चेहरा[54] चढ़ा हुआ था जिसमें से उसकी दो काली ऑखें मुझे डरावने ढंग से घूर रही थीं। यह देख कर मैं डर गया।

मैं तुरन्त बोला — "धन्यवाद जनाब। आपकी मेहरबानी के लिये आपको बहुत बहुत धन्यवाद। अब आपको मुझसे और क्या चाहिये? यह मैं आपको पहले से बता दूँ कि वह कोई बुरी चीज़ न हो।"

वह शाल अपने कन्धों पर डालता हुआ वह बोला — "बेकार परेशान न हो। पर मैं तुम्हारी एक डाक्टर की हैसियत से सहायता चाहता था – एक ज़िन्दा आदमी के लिये नहीं एक मरे हुए आदमी के लिये।"

मैं आश्चर्य से बोला — "यह कैसे हो सकता है?"

उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा करते हुए फिर बोलना शुरू किया — "मैं अपनी बहिन के साथ एक दूर देश से यहाँ आया

---

[54] Translation for the word "Mask" – see its picture above.

था और अपने परिवार के एक दोस्त के घर ठहर गया। किसी अचानक बीमारी से मेरी बहिन कल मर गयी।

हमारे रिश्तेदार उसको आज ही सुबह ही दफ़न करना चाहते थे पर हमारे परिवार की एक पुरानी परम्परा के अनुसार हमारे सब लोगों को हमारे पूर्वजों के पास ही दफ़नाना चाहिये। जो लोग विदेशों में मरे थे उनके शरीरों को सुरक्षित करके वहाँ दफ़ना दिया गया है।

अपने रिश्तेदारों को तो मैं उसका शरीर अभी दिखा सकता हूँ पर अपने पिता को तो उनकी बेटी का सिर मुझे दिखाना चाहिये ही ताकि वह आखिरी बार उसको देख सकें।"

इस रस्म में सिर का काटना तो कुछ ठीक नहीं लगता पर मैं उसमें कुछ कहने वाला कौन होता था। हालाँकि मैं उस "अनजान"[55] से डरता हूँ पर मैं खुद इसमें कोई बुराई नहीं मानता हूँ।

सो मैंने उससे कहा कि ठीक है और क्योंकि मैं खुद शरीर को सुरक्षित करने की कला[56] जानता था तो मैंने उससे कहा कि वह मुझे उसके पास ले चले।

पर एक बात मेरी फिर समझ में नहीं आयी कि वह यह काम रात में ही क्यों करना चाहता था। पूछने पर उसने बताया कि उसके

[55] God

[56] Here he means embalming the desd body.

रिश्तेदार जो इस रस्म को अमानवीय समझते थे अगर वह इसे दिन में करेगा तो वे उसे इस काम को करने में अड़चन भी डाल सकते थे।

पर एक बार अगर उसका सिर कट गया तो ज़्यादा से ज़्यादा वे उसके बार में थोड़ी बहुत बात तो कर सकेंगे पर इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कर सकेंगे। वह खुद भी उसका सिर काट कर उसके पास ला सकता था पर यह उसके लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही हो जाता।

इतनी बातें करते करते हम एक बहुत ही आलीशान मकान के पास पहुँच गये थे। मेरे साथी ने मुझे इशारा करके कहा कि अब हम इस बारे में बात नहीं करेंगे। पहले हम उसके मुख्य दरवाजे में घुसे। फिर घर के दरवाजे में घुसे। घर में घुसते ही मेरे साथी ने दरवाजा बन्द कर दिया।

उसके बाद हम एक अँधेरी तंग घुमावदार सीढ़ी चढ़ कर एक धुँधली रोशनी वाले बरामदे में आ गये। वहाँ से फिर एक कमरे में घुसे जिसमे छत से एक लैम्प लटक रहा था जिसमें से चमकीली रोशनी चारों तरफ फैल रही थी।

उस कमरे में एक पलंग पड़ा हुआ था जिस पर वह लाश पड़ी हुई थी। उस अजनबी ने अपना चहरा दूसरी तरफ घुमा लिया जैसे वह अपने आँसू छिपाने की कोशिश कर रहा हो और मुझे पलंग की तरफ इशारा किया ताकि मैं अपना काम जल्दी से और ठीक से खत्म कर लूँ। और वह खुद बाहर चला गया।

मैंने अपने चाकू निकाले जो मैं डाक्टर होने के नाते हमेशा अपने पास रखता था और पलंग की तरफ बढ़ा। मैं केवल लाश का सिर ही देख पा रहा था। वह इतना सुन्दर था कि मुझे उसको देखते ही उसके ऊपर दया आ गयी।

उसके बालों की लम्बी चोटियाँ बनी हुई थीं। चेहरा पीला था और आँखें बन्द थीं। मैंने अपना चाकू लिया और उसका पूरा गला काट दिया।

पर यह क्या? लाश ने तो आँखें खोल दीं। फिर उन्हें बन्द कर लिया एक लम्बी साँस ली जैसे अपनी ज़िन्दगी कै आखिरी साँस ली हो। तुरन्त ही उसके घाव में से खून की एक धार निकली।

मुझे विश्वास हो गया था कि मैंने उस बेचारी ज़िन्दा लड़की को मार दिया है। इसमें तो कोई शक नहीं था कि अब वह वहाँ मरी हुई पड़ी थी क्योंकि वैसे घाव से उसके दोबारा ज़िन्दा होने का कोई मौका नहीं था।

मैं वहाँ कुछ पल उत्सुकता से खड़ा रहा और यह सोचता रहा कि यह मैंने क्या कर दिया। क्या लाल शाल वाले ने मुझे धोखा दिया या फिर यह उसकी बहिन केवल देखने मरी हुई लग रही थी?

मुझे यह बाद वाली बात कुछ ज़्यादा जँची। फिर भी मैं यह बात उसके भाई से कहने की हिम्मत नहीं कर सका क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि आगे फिर कोई और झगड़ा खड़ा हो।

शायद वह अभी मरी न हो सो मैंने उसका सिर पूरी तरीके से काटने के लिये आगे बढ़ा कि वह एक बार फिर कराही और दर्द की वजह से इधर उधर हिली और फिर अपनी आखिरी साँस ली। इसके बाद तो मैं डर से अधमरा सा हो गया और काँपता हुआ उस कमरे से बाहर भागा।

पर बाहर बरामदे में अँधेरा था क्योंकि उसमें लगे लैम्प का तेल खत्म हो गया था और मेरे साथी का भी कहीं कोई पता नहीं था। सो मुझे दीवार पकड़ पकड़ कर चलना पड़ा।

बरामदा अँधेरा पड़ा था। घुमावदार सीढ़ियों तक पहुँचना था। अँधेरे में दूसरे के घर में घूमना खतरनाक भी था। पर किसी तरीके से मैं वहाँ पहुँच गया। सीढ़ियाँ उतरता फिसलता नीचे पहुँचा तो देखा कि वहाँ भी कोई नहीं था।

दरवाजे की केवल चटखनी लगी हुई थी सो उसको खोल कर मैं घर के बाहर निकल गया और सड़क पर जा कर ही थोड़ी चैन की साँस ली। डर से मेरे रोंगटे खड़े हुए थे और मैं अपने घर की तरफ भाग चला।

जो अपराध मैंने किया था उसको भुलाने के लिये मैं घर जा कर अपने बिस्तर में मुँह छिपा कर लेट गया। पर मेरी आँखों में नींद कहाँ। जल्दी ही सुबह हो गयी और मैं फिर से अपने आपको सँभालने में लग गया।

मैंने सोचा कि शायद जो आदमी मुझे इस काम को कराने के लिये ले कर गया था वह मुझे बदनाम नहीं करेगा। मैंने तुरन्त ही निश्चय किया कि अब मुझे चल कर अपनी दूकान का काम सॅभालना चाहिये और मुझे ऐसा दिखाना चाहिये जैसे कहीं कुछ हुआ ही न हो।

पर अब एक नयी आफत के ख्याल ने जो मुझे अभी ख्याल में आयी मेरे दुख को बहुत बढ़ा दिया। मेरी टोपी मेरी पेटी और मेरे चाकू तो मेरे पास नहीं थे। मुझे यह भी नहीं याद था कि वे वहीं कमरे में ही छूट गये थे या लड़ाई में कहीं गिर गये थे या कहीं और रह गये थे।

पहला ख्याल मुझे ज़्यादा सही लगा तो मुझे लगा कि अब तो वे मुझे कातिल साबित कर देंगे। यह मैंने क्या किया।

मैंने अपनी दूकान ठीक समय पर खोली। एक पड़ोसी आया और जैसा कि उसका बात करने का तरीका था वह आते ही बोला — "तुम एक ऐसे भयानक काम को क्या कहोगे जो कल रात को हुआ?"

मैंने उसको ऐसा दिखाया जैसे मैं उस खून के बारे में कुछ जानता ही नहीं। इस पर वह बोला — "यह कैसे हुआ कि तुम उसके बारे में कुछ जानते ही नहीं जिसके बारे में सारे शहर में शोर हो रहा है।

क्या तुम नहीं जानते कि फ्लोरैन्स के सबसे सुन्दर फूल और गवर्नर की बेटी बिआन्का[57] का कल रात किसी ने खून कर दिया। यह कल ही की तो बात है जब मैंने उसे उसके होने वाले दूल्हे के साथ हॅसी खुशी घूमते देखा था क्योंकि आज तो उसकी सगाई होने वाली थी।"

मेरे पड़ोसी के मुॅह से निकला हुआ हर शब्द मेरे दिल में छुरे की तरह काम कर रहा था। इस तरह से दिन में कई बार हुआ क्योंकि हर आने वाला उसी की बात कर रहा था और हर दूसरा आदमी उसकी भयानकता को पहले आदमी से बढ़ा चढ़ा कर बता रहा था। ऐसा मुझे लगा।

दोपहर के करीब एक सुरक्षा औफीसर मेरे पास आया और मुझसे वहॉ जो लोग खड़े हुए थे उनको वहॉ से हटाने के लिये कहा। उसने मेरी खोयी हुई चीज़ें मुझे दिखायीं और कहा —

"मिस्टर ज़ाल्यूकोस। क्या ये चीज़ें आपकी हैं?"

पहले तो मैंने सोचा कि मैं इसको बिल्कुल साफ मना कर दूॅ कि नहीं ये चीज़ें मेरी नहीं हैं पर जब मैंने आधे खुले दरवाजे की तरफ देखा तो मैंने अपने मकान मालिक और कुछ जानने वालों को वहॉ खड़े देखा जो मेरे खिलाफ बोलने के लिये तैयार थे।

सो मैंने इस मामले को झूठ न बोल कर और खराब न करने की सोचते हुए मैंने स्वीकार किया कि वह सामान मेरा ही था। औफीसर

[57] Bianka was the name of Governor's daughter whom the doctor killed.

ने मुझे अपने पीछे आने के लिये कहा और मुझे एक बड़ी सी बिल्डिंग में ले गया। मैंने उसे तुरन्त ही पहचान लिया कि वह जेल थी। कुछ ही दूरी पर वह मुझे फिर एक कमरे में ले गया।

जब मैंने अकेले में उसके बारे में सोचा तो मेरी हालत बहुत खराब थी। कत्ल करने के ख्याल से ही जिसको मैं करना भी नहीं चाहता था मुझे झल्लाहट होने लगी। पर मैं अपने आपसे यह भी नहीं छिपा सका कि सोने की चमक ने मेरी ऑखें चौंधियॉ दी थीं नहीं तो मैं ऐसे जाल में कभी नहीं फॅसता।

मेरे गिरफ्तार हो जाने के दो घंटे बाद मुझे उस कमरे से निकाला गया। कई सीढ़ियॉ उतरने के बाद मैं एक बहुत बड़े कमरे में घुसा। वहॉ एक लम्बी सी काली मेज पड़ी हुई थी।

उस मेज के चारों तरफ **12** आदमी बैठे थे जो उम्र में काफी प्रौढ़ लग रहे थे। कमरे में एक तरफ को कुछ बैंचें पड़ी थीं जिन पर फ्लोरैन्स के बड़े बड़े लोग बैठे थे। कमरे में ऊपर की तरफ एक गैलरी बनी हुई थी उसमें बहुत सारे साधारण लोग सट कर खड़े हुए थे।

जैसे ही मैं अन्दर पहुॅचा एक दुखी सा आदमी उठा। यह गवर्नर था। उसने उठ कर सबसे कहा कि लड़की के पिता होने के नाते वह इस मुकदमे की सुनवायी ठीक से नहीं कर पायेगा इसलिये वह अपनी सीट उन लोगों में से सबसे बड़े आदमी को सिपुर्द करना चाहता है।

यह सबसे बड़ा आदमी एक सफेद बाल वाला आदमी था जो जरूर ही 90 साल का रहा होगा। वह अपने बूढ़े होने की वजह से थोड़ा सँभल कर उठा। उसकी कनपटी पर बहुत ही कम सफेद बाल थे पर उसकी ऑखें बहुत चमकीली थीं। उसकी आवाज बहुत ज़ोरदार और साफ थी।

उसने शुरू किया कि क्या मैंने यह कत्ल किया था। मैंने आदर के साथ उसको निडर हो कर साफ आवाज में वह सब बता दिया जो मैंने किया था और जो कुछ भी मैं जानता था।

मैंने ध्यान दिया कि यह सब सुन कर गवर्नर का चेहरा पहले तो पीला पड़ गया फिर लाल हो गया और जब मैंने अपनी कहानी खत्म की तब तक तो वह बहुत गुस्सा दिखायी दे रहा था।

वह गुस्से में भर कर बोला — "अरे ओ नीच। तेरी यह जुर्रत कि तू अपने लालच की वजह से किये गये जुर्म का इलजाम किसी दूसरे पर थोपे।"

जज ने उसको डॉट कर चुप किया। अपनी मरजी से फैसला करते हुए उसने कहा कि उसको नहीं लगता कि यह काम मैंने किसी लालच में आ कर किया है क्योंकि उसके अपने विचार से लाश से और उसके पास से कोई चीज़ हटायी नहीं गयी थी।

वह इससे और आगे गया। उसने गवर्नर से कहा कि वह अपनी बेटी के पुराने जीवन के बारे में कुछ बताये क्योंकि इस तरीके

से शायद उसको कोई सुराग मिल जाये कि मैं सच बोल रहा था या नहीं।

उसके तुरन्त बाद ही उसने उस दिन के लिये अदालत बन्द कर दी कि वह मरे हुए के बारे में कुछ वे कागज पढ़ेगा जो गवर्नर उसको देगा। मुझे जेल में छोड़ दिया गया जहाँ मैंने अपना सारा दिन दुख में काटा। मैं बस लगातार यही प्रार्थना करता रहा कि काश वे लाश और लाल शाल वाले के बीच के सम्बन्ध को जान सकें।

आशा से भरा हुआ मैं अगले दिन फिर अदालत में पहुँचा। मेज पर कई कागज पर पड़े हुए थे। उस बूढ़े जज ने मुझसे पूछा कि क्या वे कागज मेरे लिखे हुए थे। मैंने उनको देखा तो देखा कि वह लिखावट तो उसी आदमी की थी जिसने मुझे पहले दो चिट्ठियाँ लिख कर बुलवाया था।

मैंने यह बात जज को बतायी पर मुझे ऐसा लगा कि वह इस बात को कोई महत्व ही नहीं दे रहा था क्योंकि उसका कहना था कि वे कागज मेरे हाथ के ही लिखे हुए थे। क्योंकि उन कागजों पर मेरे नाम का पहला अक्षर[58] लिखा हुआ था। उन कागजों पर मरी हुई लड़की के बारे बुरी बुरी बातें लिखी हुई थीं। उन पर उसकी शादी के खिलाफ चेतावनियाँ लिखी हुई थीं।

---

[58] There was a Z written as the initials.

गवर्नर मेरे बारे में कुछ अजीब अजीब सी और झूठ बातें कर रहा था। उस दिन मेरे साथ बहुत बुरी तरह से बरताव किया गया और मुझे शक से देखा गया।

अपनी सफाई में मैंने उनसे कहा कि वे मेरे घर जा कर कागज देख सकते हैं पर उन्होंने कहा कि वे ऐसा कर चुके हैं और वहाँ उन्हें कुछ नहीं मिला है। इस तरह से अदालत के बन्द होने पर मेरी सारी आशाऐं खत्म हो गयीं।

और तीसरे दिन जब वे मुझे फिर से अदालत ले कर गये तो फैसला ज़ोर से पढ़ कर सुनाया गया। मुझे पहले से सोचे हुए कत्ल करने के इलजाम में मौत की सजा सुना दी गयी थी। इस तरह से मैं इस दुनियाँ में अपने प्यारों को छोड़ कर इस हद तक आ गया था कि मुझे मरना पड़ रहा था। वह भी विदेश में, बिना किसी जुर्म के, अपनी इस भरी जवानी में। मुझे कुल्हाड़ी से मरना था।

जिस दिन यह फैसला सुनाया गया था उस दिन शाम को मैं अकेले अपने तहखाने में बैठा हुआ था। मेरी सब आशाऐं खत्म हो चुकी थीं। मेरे विचारों में बस मेरी मौत ही मौत घूम रही थी कि मेरी जेल का दरवाजा खुला और एक आदमी अन्दर घुसा।

वह देर तक मुझे चुपचाप देखता रहा फिर बोला — "क्या मैं तुम्हें फिर से इस हालत में देख रहा हूँ ज़ाल्यूकोस?"

वहाँ रोशनी क्योंकि कम थी इसलिये मैं उसे पहचान तो नहीं पाया पर उसकी आवाज मुझे किसी पुरानी पहचानी आवाज से

मिलती जुलती लगी। यह वैलेटी[59] की आवाज थी – मेरा एक दोस्त जिसे मैंने अपने पेरिस में पढ़ने के दिनों में दोस्त बनाया था।

उसने मुझे बताया कि वह ऐसे ही किसी काम से फ्लोरैन्स आया हुआ था जहॉ उसके पिता रहते थे। उसके पिता एक बहुत बड़े आदमी थे। उसने मेरी कहानी सुनी तो एक बार फिर वह मुझसे मिलने के लिये चला आया था।

वह मेरे मुॅह से सुनना चाहता था कि मैं ऐसे अपराध में कैसे फॅस गया। मैंने उसको अपनी पूरी कहानी सुना दी। सुनते ही वह आश्चर्य में पड़ गया। उसने मुझसे दोबारा विनती की कि मैं उसे सब कुछ सच सच बता दूॅ। मैं उससे कोई झूठ न बोलूॅ।

मैंने कसम खा कर उससे कहा कि मैंने उसे सब कुछ सच सच बता दिया है और मेरा इसमें कोई दोष नहीं है सिवाय इसके कि सोने की चमक ने मेरी ऑखों को चकाचौंध कर दिया था।

मुझे उस अजनबी की कहानी पर कोई शक भी नहीं हुआ था। उसने फिर पूछा — "तो क्या तुम बिआन्का को बिल्कुल नहीं जानते थे?"

"नहीं बिल्कुल नहीं।" मैंने उसे विश्वास दिलाया कि उससे पहले मैंने कभी उसे देखा भी नहीं था।

[59] Valetty

वैलैटी कुछ सोच कर बोला — “मुझे तो इसमें कुछ राज़ लगता है। ऐसा लगता है कि जज ने गवर्नर के साथ सहानुभूति दिखाने के लिये यह फैसला सुनाया है।”

अब तो यह बात सब लोगों को मालूम हो गयी थी कि मैं बिआन्का को बहुत दिनों से जानता था और अभी जो उसकी शादी हो रही थी उससे जलने की वजह से मैंने उसे मार दिया था।

मैंने उनको बताने की कोशिश की कि यह बात मेरे लिये नहीं बल्कि उस लाल शाल वाले के लिये सच है पर मैं अपनी इस बात को किसी को साबित नहीं कर सका।

वैलैटी ने मुझे गले से लगाया और मुझसे वायदा किया कि वह मेरी जान बचाने के लिये उससे जो कुछ भी हो सकेगा करेगा। मैं तो अपनी आशा सब खो ही चुका था पर फिर भी मैं यह जानता था कि मेरा दोस्त एक अक्लमन्द आदमी है। कानून जानता है और मुझे बचाने के लिये उससे जो कुछ भी हो सकेगा करेगा।

दो लम्बे दिन निकल गये। मैं इस पशोपेश में ही पड़ा रहा कि मेरा क्या होगा। आखिर वैलैटी आया और बोला — “दोस्त मैं तुम्हारे लिये कम से कम कुछ राहत ले कर आया हूँ। हालाँकि उसमें भी तुम्हें काफी तकलीफ होगी पर फिर भी। इससे तुम आजाद हो जाओगे पर तुम्हें अपना एक हाथ देना पड़ेगा।”

बच जाने के ख्याल से ही मैं बहुत खुश था। मैंने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया। उसने बताया कि गवर्नर बहुत ही जिद्दी था।

पहले तो वह सुन ही नहीं रहा था पर फिर काफी देर के बाद उसे लगा कि इस तरह से वह कोई अन्याय कर रहा है सो वह राजी हो गया।

उसने कहा — "अगर ऐसा ही कोई मामला फ्लोरैन्स के इतिहास में कोई और हुआ हो तो मैं अपना फैसला उसी के अनुसार दूँगा जैसा कि उस समय दिया गया था।"

सो वह और उसका पिता दोनों दिन रात ऐसा ही कोई मामला ढूँढने में लगे रहे। काफी ढूँढने के बाद उनको केवल एक केस मिला जो मेरे केस से बिल्कुल मेल खाता था। उसकी सजा यह थी –

> "इसका बॉया हाथ काट दिया जाये इसका सारा सामान ज़ब्त कर लिया जाये और इसको हमेशा के लिये देश निकाला दे दिया जाये।"

सो बस अब यही मेरी सजा थी और अब मैं उस दर्द भरे पल का इन्तजार कर रहा था जिसमें यह सब होने वाला था। मैं आप सबके सामने उस भयनक पल का वर्णन नहीं करना चाहता जिसमें खुले बाजार में मैंने अपना हाथ एक पत्थर पर रखा जिससे मेरा अपना ही खून एक मोटी सी धार के रूप में मेरे ही ऊपर आ पड़ा था।

वैलैटी मुझे अपने घर ले गया। मैं उसके घर में तब तक रहा जब तक मैं ठीक हुआ। उसी ने मुझे यात्रा के लिये दिल खोल कर

पैसे दिये क्योंकि मेरे पास तो जो कुछ भी था वह सब अदालत ने ले लिया था।

मैं फ्लोरैन्स से सिसिली[60] चला गया। फिर उसके बाद जो भी मुझे पहला जहाज़ मिला उससे कौन्स्टैन्टिनोपिल चला गया। मेरी उन आशाऐं तो उसी पैसे पर थीं जो मैं अपने दोस्त के पास छोड़ आया था। उन्होंने मुझे निराश नहीं किया।

जब मैंने उससे कहा कि मुझे उसके पास रहना चाहिये तो मुझे यह सुन कर कितना आश्चर्य हुआ जब उसने यह कहा — "क्या तुमको अब अपने मकान में नहीं रहना चाहिये?"

फिर उसने मुझे बताया कि एक अजीब अजनबी आदमी ने मेरे नाम पर मेरे लिये ग्रीक कोलोनी में एक मकान खरीदा है और साथ में पड़ोसियों से भी कह दिया है कि जल्दी ही मैं खुद वहाँ आ कर रहूँगा।

मैं अपने दोस्त के साथ वहाँ चल दिया। वहाँ पहुँच कर मेरे जानने वाले लोगों ने मेरा दिल से स्वागत किया। एक बड़ी उम्र वाले सौदागर ने मुझे एक चिट्ठी दी। यह चिट्ठी उसी आदमी की थी जिसने मेरे लिये मकान खरीदा था। उसमें लिखा था —

"ज़ाल्यूकोस। दो हाथ तुम्हारे लिये बिना रुके काम करने के लिये तैयार हैं जिससे तुम्हें अपने एक हाथ जाने का दुख नहीं

---

[60] Scicily is an island of Italy in Mediterranean Sea

होगा। यह जो तुम घर देख रहे हो न यह और इसके अन्दर जो कुछ है वह सब कुछ तुम्हारा है।

इसके अलावा हर साल तुमको इतना मिलेगा कि तुम अपने देश के बहुत अमीर लोगों में गिने जाओगे। मेहरबानी करके तुम उसको माफ कर देना जो आज तुमसे भी ज़्यादा नाखुश है।"

मुझे अन्दाजा लग गया कि उसको लिखने वाला कौन है। फिर भी जब मैंने सौदागर से इसके बारे में पूछा तो उसने बताया कि वह लाल शाल ओढ़े हुए एक आदमी था। उसको लगा कि वह शायद कोई फ्रांस का रहने वाला होगा।

मुझे ठीक से पता चल गया था कि वह अजनबी का दिल दयालु भावनाओं से बिल्कुल ही खाली नहीं था। घर में सब कुछ बहुत अच्छे से सजाया गया था। इसके अलावा उसने मुझे एक दूकान भी दी जिसमें बहुत सारा सामान था जो मेरे अपने सामान से भी कहीं ज़्यादा बढ़िया था।

इस बात को **10** साल बीत चुके हैं पर जरूरत के लिये कम और पुराने रीति रिवाजों को निभाने के लिये ज़्यादा मैं देश देश सौदागरी का काम करने के घूमता हूॅ।जो

पर उस जमीन पर जिसमें मेरे साथ इतनी बड़ी बदकिस्मती हुई थी वहॉ मैं कभी लौट कर नहीं गया। हर साल मुझे **100** सोने के टुकड़े मिल जाते हैं तो मैं यह सोच कर खुश हो जाता हूॅ कि यह

बदकिस्मत कितना कुलीन है। पर फिर भी उसका पैसा मेरी आत्मा से उसको मारने का दुख दूर नहीं करता।

मेरी ऑखों के सामने से सुन्दर बिआन्का की सूरत नहीं जाती क्योंकि उसकी सुन्दर सूरत तो मेरे दिल में बसी हुई है।

X X X X X X X

इस तरह उस ग्रीक सौदागर ज़ाल्यूकोस की कहानी खत्म हुई। सब लोग उसकी कहानी दम साधे सुन रहे थे। वह भी अपनी कहानी के बीच बीच में कई बार लम्बी लम्बी सॉसें भर रहा था। और मूले की ऑखों में तो ऑसू साफ नजर आ रहे थे।

उसकी कहानी सुनाने के बाद कुछ देर तक कोई नहीं बोला। कुछ देर बाद सलीम[61] बोला — "तो क्या तुम उस अनजान कुलीन आदमी से नफरत नहीं करते जिसने कितनी बेरहमी से तुम्हारे शरीर का एक हिस्सा ही नहीं काट लिया बल्कि तुम्हारी ज़िन्दगी को भी खतरे में डाल दिया।"

ज़ाल्यूकोस बोला — "शायद कुछ पल थे जब मैं उसको अपने ऊपर बदकिस्मती लाने के लिये और अपनी ज़िन्दगी कड़वी बनाने के लिये भगवान के सामने मुजरिम ठहराना चाहता था पर मुझे अपने पुरखों के धर्म में विश्वास था जो मुझे यह सिखाते थे कि "अपने

[61] Selim – name of the stranger who joined the caravan from the middle.

दुश्मन को भी प्यार करो।" इसके अलावा वह खुद भी तो मुझसे ज़्यादा दुखी था।"

सलीम अपने एक हाथ से उसका एक हाथ दबाते हुए बोला — "तुम एक बहुत ही भले आदमी हो।"

इस बीच झुंड का सरदार तम्बू में ऑधी की तरह से आया और उसने उन सबको बीच में रोक कर कहा — "आज आप सब सोने के लिये नहीं जा सकते क्योंकि यही वह जगह है जहॉ कारवॉओं पर हमले होते आये हैं। साथ में उसके गार्ड लोगों ने भी उससे कहा है कि उन्होंने कुछ दूरी पर कुछ घुड़सवार देखे हैं।"

सब सौदागर इस तरह की खबर पर चकित हो गये। पर अजनबी सलीम इस बात पर आश्चर्य करने लगा। वह बोला कि वे तो सुरक्षा का काफी सामान अपने साथ ले कर चले थे सो उनको अरबी डाकुओं से डरने की कोई जरूरत नहीं थी।

गार्ड के सरदार ने कहा — "जी जनाब। अगर वह कोई मामूली सा डाकू होता तो वे उससे खुद ही निपट लेते और बिना किसी चिन्ता के आराम से रहते पर यह तो कोई और है। कुछ समय से आजकल भयानक ओरबासन[62] फिर से दिखायी देने लगा है। अच्छा होगा अगर हम सावधान रहें।"

अजनबी ने पूछा "यह ओरबासन कौन है।"

---

[62] Orbasan

तो अश्मत यानी उन सौदागरों में से सबसे बड़ी उम्र वाले सौदागर ने जवाब दिया — "इस आश्चर्यजनक आदमी के बारे में बहुत सारी अफवाहें फैली हुई हैं। कोई कहता है कि यह कोई दैवीय आदमी है क्योंकि यह केवल **5–6** लोगों के साथ ही बड़े बड़े कैम्पों को हरा देता है। जबकि कुछ लोगों का कहना है कि वह एक बहादुर फ्रांसीसी है जिसकी बदकिस्मती उसे यहाँ इस जगह ले आयी है।

इन सब बातों के साथ साथ उसके बारे में मगर यह तो सच है ही कि वह एक अकेला डाकू है और मुख्य रास्तों पर चलने वाला डाकू है।"

इस पर लेज़ा[63] नाम का सौदागर बोला — "पर यह बात आप साबित कैसे कर सकते हैं क्योंकि वह अगर डाकू है तो क्या हुआ वह एक भला आदमी है। उसने अपना जो भलापन मेरे भाई के साथ दिखाया है यह बात मैं आपको बता कर साबित कर सकता हूँ कि वह एक डाकू जरूर होगा पर वह भला आदमी भी जरूर है।

उसने एक बहुत ही अनुशासित और खास आदमियों का एक झुंड बना रखा है। जब तक वह इस रेगिस्तान में रहता है डाकुओं का कोई दूसरा झुंड यहाँ आने की हिम्मत नहीं कर सकता।

इसके अलावा वह दूसरे डाकुओं की तरह से किसी को लूटता नहीं बल्कि वह कारवाँओं से केवल टैक्स के रूप में ही कुछ लेता

[63] Lezah – one of the merchants' name

है। जो अपनी मरजी से यह दे देता है वह बिना किसी खतरे के आसानी से आगे बढ़ जाता है क्योंकि ओरबासन इस जंगल का राजा है।"

कैम्प में अपने टैन्ट में बैठे यात्री लोग इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि वे गार्ड जो उनके आराम करने की जगह के पास ही खड़े थे कुछ बेचैन हो गये।

आधी लीग दूर से एक बहुत बड़ा झुंड उन्हें आता हुआ दिखायी दिया तो वे बहुत डर गये। ऐसा लग रहा था जैसे वे उन्हीं की तरफ बढ़ते चले आ रहे हों। सो उनमें से एक गार्ड तम्बू के अन्दर आया और उनको बताया कि उन लोगों पर शायद हमला होने वाला है।

सौदागरों ने आपस में विचार किया कि उनको क्या करना चाहिये। वे अभी से आगे बढ़ें या फिर उनके हमले का इन्तजार करें। अश्मत और दो बड़ी उम्र वाले सौदागरों ने सलाह दी कि उनको अभी इन्तजार करना चाहिये पर गुस्से वाले मूले और ज़ाल्यूकोस की राय थी कि उन पर अभी हमला कर दिया जाये।

उन्होंने अजनबी को बुलाया और उससे सहायता माँगी तो उसने शान्ति से अपनी कमर से एक नीला कपड़ा निकाला जिस पर सितारे बने हुए थे। उसको उसने एक भाले की नोक पर बाँधा और एक दास को उसे दे कर कहा कि वह उसे कैम्प के सामने गाड़ दे।

उनको चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। अगर मौका पड़ा तो वह उनके लिये अपनी जान भी दे देगा। उन घुड़सवारों को उस निशान को देख कर वापस चले जाना चाहिये।

मूले को इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ फिर भी दास ने उसका भाला कैम्प के आगे जमीन में गाड़ दिया।

इस बीच कैम्प में सबने अपने अपने हथियार सँभाल लिये और बड़ी उत्सुकता से दुश्मन का इन्तजार करने लगे। दुश्मन कैम्प तक आया और उसने कैम्प के समने लगा हुआ वह निशान देखा तो अचानक ही वे सब अपने रास्ते से पलट कर एक तरफ को गोले में खड़े हो गये।

आश्चर्य से भरे हुए यात्री कुछ पल तो खड़े के खड़े रह गये। वे कभी अजनबी को देखते तो कभी घुड़सवारों को। अजनबी अपने चेहरे पर बिना किसी भाव के कैम्प के सामने खड़ा था जैसे कुछ हुआ ही न हो। बस वह तो सामने पड़े मैदान को ही देखे जा रहा था।

आखिर मूले ने चुप्पी तोड़ी — "ओ ताकतवर अजनबी तुम कौन हो जो केवल अपनी नजर से ही इस रेगिस्तान के डाकुओं को रोक देते हो?"

सलीम बरूच बोला — "तुम मेरी इस कला की कुछ ज़रा ज़्यादा ही तारीफ कर रहे हो। जब मैं कैद से भागा था तब मैंने यह जाना था कि इस निशान की क्या कीमत है। इसका क्या मतलब है यह

तो मैं नहीं जानता, हॉ बस इतना जानता हूँ कि जो कोई भी इस निशान के साथ यात्रा करता है वह बहुत सुरक्षित रहता है।

सौदागरों ने अजनबी को धन्यवाद दिया और उसको अपनी जान बचाने वाला कहा। सच में डाकू लोग इतने ज़्यादा थे कि कारवॉ के लोग उनसे कितनी ही देर तक लड़ते पर अपने को बचा नहीं सकते थे।

अब उनके दिलों का बोझ उतर गया था और वे सब शान्ति से सोने चले गये। जब सूरज डूबने लगा और शाम की हवा रेत के ऊपर से गुजरने लगी तो उन्होंने अपने अपने तम्बू बॉधे और फिर से अपनी यात्रा शुरू कर दी।

अगले दिन वे सुरक्षित रूप से दूसरी ठहरने वाली जगह पहुॅच गये जो रेगिस्तान के शुरू होने से एक दिन पहले था। जब दोपहर को यात्री लोग फिर से अपने तम्बू में इकट्ठा हुए तो लेज़ा सौदागर ने कहानी सुनाने का निश्चय किया।

लेज़ा बोला — "कल मैंने आप सबको बताया था कि वह भयंकर ओरबासन एक बहुत ही भला आदमी था तो अगर आप लोग मुझे इजाज़त दें तो मैं इस बात को अपने भाई की कहानी सुना कर साबित करूँ।

मेरे पिता अकारा के काज़ी[64] थे। उनके तीन बच्चे थे – मैं सबसे बड़ा था, फिर मेरा भाई और उसके बाद एक छोटी बहिन।

[64] Cadi (a variant of Qazi) of Acara

छोटी बहिन मुझसे बहुत छोटी थी। जब मैं **20** साल का हुआ तो मेरे पिता के एक छोटे भाई मुझे अपने साथ ले गये।

उन्होंने इस शर्त पर मुझे अपनी जायदाद का वारिस बना दिया कि मैं उनके मरने तक उनके साथ रहूँगा। वह पहले ही काफी बड़ी उम्र तक पहुँच चुके थे सो दो साल से पहले पहले ही मैं अपने घर वापस लौट आया।

मुझे इस बात का पता ही नहीं था कि मेरे परिवार पर इस बीच कौन सा पहाड़ टूट पड़ा था और फिर अल्लाह ने कैसे उसे फायदे में बदल दिया।

5 फातिमा की रिहाई[65]

मेरा भाई मुस्तफा और मेरी बहिन फातिमा दोनों करीब करीब एक सी उम्र के थे। मुस्तफा फातिमा से दो साल बड़ा था। वे दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

हमारे पिता बूढ़े थे सो उनका बोझ हलका करने के लिये उनसे जो कुछ हो सकता था वह वे करते थे। जब फातिमा **17** साल की हुई तो मेरे भाई ने हमारे पिता के बागीचे में एक दावत की तैयारी की। उसने उसकी सारी सहेलियों को बुलाया और उनके लिये बहुत अच्छे अच्छे खाने बनवाये।

शाम को उसने समुद्र में नाव से घूमने का भी प्रोग्राम बनाया। यह नाव उसने कहीं से किराये पर ले ली थी और उसको बहुत शानदार तरीके से सजा लिया था। फातिमा और उसके साथी बहुत खुशी से तैयार हो गये।

शाम बहुत सुहानी थी। समुद्र से देखने पर शहर भी बहुत सुन्दर लग रहा था। लड़कियाँ भी जब नाव पर चढ़ीं तो वे बहुत खुश थीं। वे इतनी खुश थीं कि वे बार बार मेरे भाई की तारीफ कर रही थीं और उससे नाव को समुद्र में और दूर ले जाने के लिये कह रही थीं।

[65] Fatima's Deliverance. (Tale No 5) Told by Leza Merchant

हालाँकि मुस्तफा और आगे नहीं जाना चाहता था क्योंकि हाल ही में कई दिन पहले उस जगह में एक समुद्री डाकू घूमता हुआ देखा गया था पर फिर भी वह उनकी बात मान रहा था क्योंकि वह उन सबको खुश देखना चाहता था।

चलते चलते उनको, शहर से बहुत दूर नहीं, कहीं धरती का एक टुकड़ा दिखायी दे गया। सब लड़कियाँ वहाँ जाने के लिये बहुत उत्सुक थीं ताकि वे वहाँ से सूरज छिपता हुआ देख सकें। सो मुस्तफा उन सबको उधर ले जाने लगा तभी सबने देखा कि हथियारबन्दों से भरी हुई एक नाव उनके पास आ रही है।

यह भाँप कर कि यह कुछ अच्छी चीज़ नहीं है मेरे भाई ने मल्लाहों को पीछे घूम कर धरती पर उतरने का इशारा किया। उसका सोचना ठीक था क्योंकि जैसे ही मुस्तफा की नाव धरती की तरफ घूमी उन लोगों ने भी अपनी नाव उसकी तरफ मोड़ दी और जल्दी ही आगे निकल कर उस नाव और धरती के बीच आ गयी क्योंकि उनकी नाव को खेने वाले ज़्यादा थे।

लड़कियों को भी खतरा महसूस हुआ तो वे खड़ी हो हो कर ज़ोर ज़ोर से चीखने चिल्लाने लगीं। मुस्तफा ने उनको शान्त रहने के लिये बहुत बार कहा पर सब बेकार गया। उनको चुपचाप बिठाने की भी कोशिश की ताकि उसकी नाव उनके हिलने से कहीं डूब न जाये पर वे भी डर के मारे बैठ ही नहीं पा रही थीं।

इससे दूसरी वाली नाव उसकी नाव के बहुत पास आ गयी तो सब उसमें दूसरी तरफ को भागीं इससे नाव बहुत ज़्यादा हिल गयी और डूबने लगी।

उधर धरती के लोगों ने देखा कि एक अजीब सी नाव धरती की तरफ चली आ रही है। जैसा कि पहले से उन्होंने समुदी डाकुओं के बारे में सुन रखा था वे उस नाव के बारे में चिन्ता करने लगे। शक की वजह से वे तुरन्त ही अपनी अपनी नावें ले कर उधर चल पड़े।

वे बस समय से ही उसके डूबने तक पहुँच पायीं और उन्होंने डूबने वालों को बचा लिया। इस सब में डाकुओं की नाव बच कर भाग गयी। पर जो नाविक उन सबको बचा रहे थे उनको यह पक्का नहीं था कि उन्होंने सबको बचा लिया था या नहीं। बाद में पता चला कि मेरी बहिन और उसकी एक सहेली लापता थीं जब कि उनकी जगह एक अजनबी वहाँ पाया गया जिसको कोई नहीं जानता था।

मुस्तफा के धमकी देने पर उस अजनबी ने स्वीकार किया कि वह उसी डाकू वाली नाव का आदमी था जो वहाँ से दो मील दूर पूर्व की तरफ लंगर से अटकी खड़ी थी।

जल्दी में उसके साथी उसको वहाँ से ले जाना भूल गये थे जबकि वह लड़कियों को बचाने में सहायता कर रहा था। उसने बताया कि उसने दो लड़कियों को उस नाव पर जाते देखा है।

मेरे पिता तो यह सुन कर दुख से पागल से ही हो गये थे। मुस्तफा भी बहुत दुखी था। वह तो बल्कि बिल्कुल अधमरा सा हो रहा था। यह न केवल इसलिये कि उसकी प्यारी बहिन खो गयी थी बल्कि इसलिये भी कि यह बदकिस्मती उसकी वजह से आयी थी।

और साथ में इसलिये भी कि फातिमा के साथ जो लड़की गयी थी उसकी उसके माता पिता ने मुस्तफा के साथ उसकी शादी करने का वायदा किया था। हालाँकि मुस्तफा ने अभी अपने पिता को यह बात अभी तक बतायी नहीं थी क्योंकि वह एक गरीब घर की लड़की थी और नीचे घर से आती थी।

हमारे पिता एक तौर तरीके वाले आदमी थे। जब उनका दुख कुछ कम हुआ तो उन्होंने मुस्तफा को बुलाया और उससे कहा — "तेरी बेवकूफी ने तो मेरे बुढ़ापे का धीरज और मेरे दिल की खुशी भी छीन ली है। जा मेरी नजरों से दूर हो जा और मुझे अब कभी अपनी शक्ल मत दिखाना।

मैं तुझे और तेरे बच्चों को शाप देता हूँ कि जब तक तू मेरी बेटी फातिमा को वापस ले कर न आये तेरे सिर पर से मेरा यह शाप न हटे।"

अब यह तो मेरे भाई ने कभी सोचा ही नहीं था कि उसके पिता उसके और उसके बच्चों के लिये ऐसा बोलेंगे। उसने तो पहले ही यह सोच रखा था कि वह अपनी बहिन और उसकी सहेली की खोज में जायेगा।

वह तो बल्कि खोज में जाने से पहले उनसे अपनी खोज में सफलता पाने के लिये आशीर्वाद लेने जाना चाह रहा था पर उसके पिता ने तो उसको अपना शाप दे कर उसे दुनियाँ में बाहर निकाल दिया था।

इस दुख ने उसको बहुत कमजोर बना दिया था। और ऊपर से यह बदकिस्मती जिसका कि वह अधिकारी नहीं था इसके बारे में सोच सोच कर तो उसका दिमाग ही खराब हुआ जा रहा था। वह काम ही नहीं कर पा रहा था।

फिर भी वह उस समुद्री डाकू के पास गया जो उसकी नाव पर चढ़ आया था। उसने उससे पूछा कि उसका वह जहाज़ किधर जा रहा था। उसने कहा कि वह जहाज़ दासों की बेच खरीद का काम करता था और बलसोरा में उसका बहुत सारा काम होता था।

घर लौटने पर जब उसने पिता को अपनी यात्रा पर जाने की तैयारी की बात बतायी तो उनका गुस्सा कुछ ठंडा हुआ। उन्होंने उसको एक थैला सोना दिया ताकि वह अपनी यात्रा में काम में ला सके।

मुस्तफा ने फिर ज़ोरायदा[66] के माता पिता से भी विदा ली और बलसोरा की तरफ रवाना हो गया। मुस्तफा जमीन के रास्ते गया क्योंकि हमारे शहर से कोई जहाज़ बलसोरा नहीं जाता था।

---

[66] Zoraida – name of the friend of Fatima who was taken with her.

उसने अपनी सारी कोशिश लगा दी कि उसको समुद्री डाकुओं के पास जल्दी पहुँच जाये। उसने एक घोड़ा लिया कोई सामान नहीं लिया। वह उस शहर उस दिन से छठे दिन पहुँच जाने की आशा रखता था।

चौथे दिन की शाम को वह अकेला ही चला जा रहा था कि अचानक तीन आदमी उस पर टूट पड़े। मुस्तफा ने देखा कि वे सब तो हथियारबन्द थे और ताकतवर थे। वे उसकी जान की बजाय उसका सोना और घोड़ा चाहते थे। वह चिल्ला कर बोला कि वह जो कुछ भी वे कहेंगे करेगा।

वे अपने अपने घोड़ों पर से नीचे उतर पड़े और मुस्तफा के दोनों पैर उसके घोड़े के नीचे बाँध दिये। फिर उनहोंने उसको अपने बीच में रख कर बिना कोई शब्द बोले जल्दी से वहाँ से चल दिये। एक आदमी ने उसके घोड़े की लगाम पकड़ रखी थी।

मुस्तफा अब तक बहुत निराश हो गया था। उसको लग रहा था कि उस अभागे के ऊपर उसके पिता का शाप काम कर रहा है। अगर उसके पास जो कुछ है वह उससे लूट लिया गया और अपनी ज़िन्दगी भी दे दी तो फिर वह फातिमा और ज़ोरायदा को कैसे बचा पायेगा।

मुस्तफा और उसके साथी करीब एक घंटे तक चुपचाप चलते रहे। अब वे एक घाटी में घुस रहे थे। वह घाटी चारों तरफ से बड़े बड़े पेड़ों से घिरी हुई थी। हल्के हरे रंग के पेड़ लगे हुए थे। छोटी

सी नदी थी जो बहुत तेज़ी से बही जा रही थी। उस बीच उसको लग रहा था कि वह वहाँ सो जाये।

उसने देखा कि वहाँ **15–20** तम्बू लगे हुए थे। उनकी खूँटियों से उनके ऊँट और शानदार घोड़े बँधे हुए थे। इनमें से एक तम्बू से कुछ दूरी पर कोई गिटार बजा रहा था और उसके साथ दो आदमी गा रहे थे।

मेरे भाई को लगा कि जिन लोगों ने उसे पकड़ने की हिम्मत की है उनका कोई बुरा इरादा नहीं है। सो जैसा उसके पकड़ने वालों ने उससे करने के लिये उससे कहा उसने वैसा ही किया। वहाँ उन्होंने उसके पैर खोले और उसको अपने पीछे आने का इशारा किया।

वे उसको एक ऐसे तम्बू में ले गये जो बाकी के तम्बुओं से कुछ बड़ा था। अन्दर से वह बहुत ही शानदार ढंग से सजा हुआ था। वहाँ बहुत बढ़िया बढ़िया सोने के तारों से कढ़े हुए तकिये रखे हुए थे। बुने हुए कालीन बिछे हुए थे। सब जगह आदर का वातावरण छाया हुआ था। पर यहाँ तो यह सब एक डाकू की लूटी हुई चीज़ें लग रही थीं।

एक गद्दी पर एक नाटा बूढ़ा झुका हुआ बैठा था। उसकी शक्ल बहुत बदसूरत थी। चमकीली गहरी कत्थई खाल थी। उसकी आँखों के चारों तरफ एक तरह की नफरत पैदा कर देने वाला भाव था। उसका मुँह चालाकी से भरा हुआ था। और यह सब मिला कर एक बहुत ही गहरा असर पैदा कर रहा था।

हालाँकि मुस्तफा ने यह जान लिया कि यह आदमी ही हुकुम देगा पर साथ में उसने जल्दी ही यह भी जान लिया कि वह तम्बू उसके लिये ही इतनी अच्छी तरह से नहीं सजाया गया था और यह बात उसके साथ आये लोगों की उसके साथ जो बात हुई उसने पक्की कर दी।

उसके साथ आये एक आदमी ने पूछा — "सरदार कहाँ है।"

वह बूढ़ा बोला — "वह तो एक छोटे से शिकार पर गया है पर वह अपने मामलों को देखने के लिये मुझसे कह गया है।"

उनमें से एक डाकू बोला — "यह उसने कोई अक्लमन्दी का काम नहीं किया क्योंकि इस बात का बहुत जल्दी फैसला होना चाहिये कि इस कुत्ते को हम मार दें या फिर इसको आजाद करने के लिये पैसा माँगें। यह बात हमारा सरदार तुमसे ज़्यादा अच्छी तरह से जानता है।"

अपनी शान से सम्बन्धित चीज़ों को समझते हुए वह बूढ़ा ज़रा सा उठा और अपना हाथ उस कहने वाले के कान की तरफ बढ़ाया क्योंकि वह खुद भी उससे बदला लेना चाहता था।

पर जब उसने देखा कि उसकी कोशिश बेकार जा रही है तो उसने उसको इतनी ज़ोर ज़ोर से गालियाँ देना शुरू कर दिया कि सारा तम्बू हिल गया।

इसी समय तम्बू का दरवाजा खुला और एक शाही किस्म का लम्बा सा आदमी अन्दर आया। यह आदमी नौजवान था और इतना

सुन्दर था जैसे फारस[67] का कोई राजकुमार हो। उसका घोड़ा और उसकी चमकीली तलवार के अलावा उसके कपड़े और हथियार सब सादा से थे। उसकी गम्भीर आँखें और उसकी शक्ल देख कर लगता था कि उससे बिना डरे ही उसकी इज़्ज़त करनी चाहिये।

वह आते ही बोला — "वह कौन था जो मेरे तम्बू में इतनी ज़ोर ज़ोर से बोल रहा था।"

यह सुन कर तो उसे लाने वाले चौंक ही गये। काफी देर तक सब चुपचाप खड़े रहे। फिर जो आदमी मुस्तफा को ले कर आया था उसने बताना शुरू किया कि क्या कैसे हुआ था।

इस पर वह नौजवान जिसे लोग सरदार कह कर बुला रहे थे गुस्से से लाल पड़ गया और उस नाटे आदमी से बोला — "मैंने तुम्हें कबसे अपने कामों की जिम्मेदारी सौंपी, हसन[68]?"

हसन तो यह डाँट सुन कर डर के मारे और सिकुड़ गया। सिकुड़ने से वह और छोटा दिखायी देने लगा। धीरे धीरे वह तम्बू के दरवाजे की तरफ खिसकने लगा। सरदार का एक कदम उसको दरवाजे से बाहर फेंकने के लिये काफी था।

जैसे ही वह नाटा आदमी वहाँ से चला गया तो उन तीनों आदमियों ने मुस्तफा को उस तम्बू के मालिक के सामने पेश किया। तब तक सरदार अपने तकिये के सहारे बैठ चुका था।

---

[67] Persia

[68] Hassan

आदमी बोले — “इसे हम आपके लिये ले कर आये हैं जिसको लाने के लिये आपने हमको हुकुम दिया था।”

उसने कुछ देर तक तो वह बन्दी की तरफ देखता रहा फिर बोला — “सुलेखा के बाशौ।[69] तुम्हारी अपनी आत्मा यह बतायेगी कि तुम ओरबासन के सामने क्यों खड़े हो।”

सो जब मेरे भाई ने यह सुना तो उसने उसके सामने सिर झुकाया और बोला — “माई लौर्ड। ऐसा लगता है कि आपसे कहीं कोई गलती हो गयी है। मैं तो एक बहुत ही गरीब अभागा आदमी हूँ मैं बाशौ नहीं हूँ जिसे आप ढूँढ रहे हैं।”

यह सुन कर सब लोग आश्चर्यचकित रह गये पर सरदार बोला — “तुम्हारी बेईमानी अभी पता चल जाती है। क्योंकि मैं अभी उन लोगों को बुलाता हूँ जो तुम्हें अच्छी तरह जानते हैं।”

कह कर उसने तुरन्त ही जुलीना[70] को बुला लाने का हुकुम दिया। एक बुढ़िया उस तम्बू में लायी गयी तो उससे पूछा गया कि क्या वह उस आदमी को सुलेखा के बाशौ की हैसियत से जानती पहचानती है।

वह बोली — “हॉ हॉ क्यों नहीं। यह वही है। मैं तो अपने धर्मदूत[71] की कब्र की कसम खा कर कह सकती हूँ कि यह बाशौ ही है और दूसरा कोई नहीं।”

---

[69] Bashaw of Sulieika – these words may mean Sulekha Ka Baadshah or the King of Sulekha
[70] Zuleina
[71] Translated for the word “Prophet” – means Muhammad Saahab

यह सुन कर सरदार चिल्लाया — "ओ नीच ज़रा ठीक से देख। तेरा धोखा बिल्कुल पानी की तरह से साफ हो गया। मुझे अपना अच्छा छुरे को तेरे खून से गन्दा करने में बहुत दया आती है।

लेकिन कल जब सूरज निकल आयेगा तो मैं तुझे अपने घोड़े की पूँछ से बाँध कर घसीटता हुआ जंगल में ले जाऊँगा जब तक वह सुलेखा की पहाड़ियों से दूर नहीं चला जायेगा।"

यह सुन कर मेरे भाई की सारी हिम्मत जाती रही। वह रोते रोते बोला — "उफ यह तो मेरे पिता का शाप बोल रहा है जो मुझे इस तरह की मौत दे रहा है। और तू मेरी बहिन और प्यारी ज़ोरायदा तुमको भी मैं कभी नहीं पा सकूँगा। तुम लोग तो मुझसे हमेशा के लिये खो गये हो।"

वहाँ खड़े एक डाकू ने उसके दोनों हाथ उसकी पीठ के पीछे बाँधते हुए उससे कहा — "अब तेरा यह झूठ तेरी कोई सहायता नहीं करेगा। चल इस तम्बू से जल्दी से बाहर निकल आ क्योंकि सरदार अपने होठ काट रहा है और बार बार अपने चाकू पर हाथ डाल रहा है।"

जैसे ही वे डाकू मेरे भाई को तम्बू से बाहर ले कर जा रहे थे तो उनको उनके तीन साथी मिले जो एक बन्दी को सरदार के पास ले जा रहे थे। वे उस समय तम्बू के अन्दर घुस रहे थे।

वे बोले — "यह हम बाशौ को ले कर आ रहे हैं जैसा कि आपने हमसे लाने के लिये कहा था।" और यह कह कर उन्होंने उस बन्दी को सरदार के सामने कर दिया।

जब यह सब हो रहा था तो मेरे भाई ने उसे ध्यान से देखा तो वह तो यह देख कर आश्चर्य में पड़ गया कि उसकी शक्ल सूरत उससे कितनी मिलती थी। बस अन्तर केवल इतना था कि वह कुछ ज़्यादा दुखी दिखायी दे रहा था और उसकी दाढ़ी काली थी।

सरदार तो उन दोनों को देख कर दंग रह गया। कभी वह एक को देखता तो कभी दूसरे को। फिर बोला — "तुम लोगों में से असली बाशौ कौन है?"

दूसरे कैदी ने अपनी भारी सी आवाज में कहा — "अगर आपको सुलेखा का बाशौ चाहिये तो वह मैं हूँ।"

सरदार अपनी गम्भीर और भयानक ऑखों से फिर से उसे कुछ देर तक घूरता रहा फिर चुपचाप उसको बाहर ले जाने का इशारा किया। यह करके वह मेरे भाई की तरफ मुड़ा और अपने चाकू से उसकी रस्सी काटी और उसको अपने पास गद्दी पर बैठने का इशारा किया।

फिर वह बोला — "ओ अजनबी मुझे बहुत दुख है कि मैंने तुमको अपना दुश्मन समझ लिया। यह सब अल्लाह की मरजी से हुआ जिसने तुमको उसी घड़ी में मेरे साथियों के हाथों में पकड़वा दिया जिसमें उस नीच को मरना था।"

यह सुन कर मुस्तफा ने उससे विनती की कि वह तुरन्त ही उसको आगे की यात्रा जारी रखने की इजाज़त दे क्योंकि अगर उसे और ज़्यादा देर हो गयी तो उसका बहुत नुकसान हो जायेगा।

सरदार ने उससे पूछा कि ऐसा उसका क्या काम था जो वहाँ से जल्दी न जाने पर बिगड़ सकता था। तब मुस्तफा ने उसे सब कुछ बता दिया। तो उसने उसको जिद करके उस रात वहीं अपने तम्बू में गुजारने के लिये कहा।

उसने यह भी वायदा किया कि सुबह होते ही वह उसको बलसोरा का वह रास्ता बता देगा जिससे वह डेढ़ दिन में ही वहाँ पहुँच जायेगा।

मेरा भाई राजी हो गया। वहाँ उसको बड़ी शान से रखा गया। वह सुबह तक उस डाकू के तम्बू में बहुत अच्छी तरह से सोया।

पर सुबह को जब वह जागा तो देखा कि वह तो तम्बू में वहाँ अकेला ही है। उसके दरवाजे के पास कुछ लोगों के बात करने की आवाजें सुनी जिनमें से दो आवाजें उस नाटे आदमी की और डाकुओं के सरदार की थीं।

पहले तो वह कुछ देर तक सुनता रहा कि वे लोग क्या बात कर रहे थे। उसने सुना कि वह नाटा आदमी सरदार से कह रहा था कि उसे उस अजनबी को तुरन्त ही मरवा देना चाहिये। क्योंकि वह अगर उसे जाने देगा तो वह उनको धोखा दे देगा। उनकी पोल खोल देगा।

मुस्तफा को तुरन्त ही पता चल गया कि यह नाटा आदमी उससे नफरत करता है क्योंकि उसको लगा कि उसी की वजह से सरदार ने उसके साथ बुरा व्यवहार किया था।

उसकी यह बात सुन कर सरदार कुछ देर तक सोचता रहा फिर बोला — "नहीं वह मेरा मेहमान है और मेहमाननवाजी करना मेरा पवित्र धर्म है। इसके अलावा वह ऐसा लगता भी नहीं है जो हमको धोखा देगा।"

यह कह कर उसने तम्बू का दरवाजा खोला और अन्दर आ कर बोला — "अल्लाह तुम्हें शान्ति से रखे मुस्तफा। आओ पहले सुबह का नाश्ता कर लो फिर तुम अपनी यात्रा पर चले जाना।"

उसने मेरे भाई को एक गिलास शर्बत पीने के लिये दिया। शर्बत पीने के बाद दोनों ने अपने अपने घोड़े तैयार किये। मुस्तफा अपने घोड़े पर उस समय की ख़ुशी से ज़्यादा ख़ुशी से चढ़ा जब वह घाटी में घुसा था।

तुरन्त ही वे अपने कैम्प से आगे की तरफ चल दिये। एक चौड़ा सा रास्ता लिया जो जंगल की तरफ जाता था। बात बात में सरदार ने मेरे भाई को बताया कि यह बाशौ जिसको उसने पकड़ा है उसने इन लोगों से वायदा किया कि उसकी हद में वे लोग आराम से रहेंगे।

पर कुछ हफ्ते पहले उसने उनका एक बहुत ही बहादुर आदमी ले लिया और उसको बुरी तरह से मार पीट कर फॉसी पर लटका

दिया। वह उसका बहुत दिनों तक इन्तजार करता रहा था पर आज उसे जरूर ही मरना चाहिये।

यह सुन कर मुस्तफा की हिम्मत ही नहीं पड़ी कि वह उससे उसके खिलाफ कुछ कहे। वह तो बस इसी बात से खुश था कि वह अपनी पूरी खाल के साथ उसके चंगुल से बाहर निकल आया था। किसी ने उसको कोई ज़रा सी खरौंच भी नहीं दी थी।

जंगल में सरदार ने उसका घोड़ा देखा भाला और मुस्तफा को रास्ता दिखा दिया।

फिर उसने उसकी तरफ हाथ बढ़ाते हुए यह कहा — "ओ अजनबी तुम कैसी अजीब से हालातों में डाकू ओरबासन के मेहमान बने। मै तुमसे यह नहीं कहूँगा कि तुम मुझे धोखा मत देना। जो कुछ भी तुमने देखा और जो कुछ भी तुमने सुना। मुझे अफसोस है कि तुमको बेकार में ही मरने जैसा दर्द सहना पड़ा। मैं इसके लिये तुम्हारा कर्जदार हूँ।

तुम मेरी याद में यह चाकू ले जाओ और जब भी कभी तुम्हें मेरी सहायता की जरूरत पड़ जाये तो इसे मुझे भेज देना मैं तुरन्त ही तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊँगा। और यह कुछ पैसा लो तुम्हारी यात्रा में तुम्हारे काम आयेगा।"

मेरे भाई ने उसे बहुत बहुत धन्यवाद दिया। उसने उसका चाकू तो ले लिया लेकिन पैसे नहीं लिये। ओरबासन ने एक दो बार उससे उन्हें लेने की जिद की पर फिर उनको जमीन पर गिरा दिया और

खुद अपने घोड़े को ऐड़ लगा कर हवा की चाल से जंगल के अन्दर भाग गया।

उसको इतनी तेज़ भागते देख कर मुस्तफा ने उसका पीछा करने का इरादा छोड़ दिया। वह पैसे उठाने के लिये अपने घोड़े से नीचे उतरा तो वह अपने दोस्त के इतने सारे पैसे को देख कर दंग रह गया। वे बहुत सारे सोने के सिक्के थे।

अपनी रिहाई के लिये उसने अल्लाह को बहुत बहुत धन्यवाद दिया उस दानी डाकू की उसकी दया के लिये प्रशंसा की और बलसोरा के रास्ते पर चल पड़ा।

X X X X X X X

इतना कह कर लेज़ा यहॉ रुक गया और अश्मत की तरफ सवाल भरी नजर से देखा।

अश्मत बोला — "नहीं। अगर ऐसा है तो मैं ओरबासन की तरफ से अपनी राय बदल लूॅगा क्योंकि उसने सचमुच ही तुम्हारे भाई के साथ इतना भला व्यवहार किया।"

मूले बोला — "उसने सचमुच में एक सच्चे मुसलमान की तरह से बरताव किया। पर मेरे ख्याल से अभी तुम्हारी यह कहानी यहीं खत्म नहीं हुई है। हम लोग इसके आगे की कहानी सुनने के लिये बहुत उत्सुक हैं। फिर तुम्हारे भाई के साथ क्या हुआ और क्या वह अपनी बहिन और सुन्दर ज़ोरायदा को छुड़ा कर ला सका?"

अपने घर से चलने के बाद सातवें दिन वह बलसोरा के फाटक के पास पहुँचा और उसके अन्दर चला गया। वहाँ जा कर वह एक सराय में पहुँचा और सराय वाले से पूछा कि दासों का बाजार जो हर साल लगा करता था क्या वह खुल गया था।

पर उसके जवाब ने तो उसको चौंका दिया। वह बोला — "जनाब आप दो दिन देर से आये हैं।"

इसके बाद तो उसने और जो कुछ कहा उससे तो मुस्तफा के देर से पहुँचने के गुस्से को और बढ़ा दिया। उसने कहा कि बाजार के आखिरी दिन दो दासियाँ आयी थीं जिनकी सुन्दरता ने हर सौदागर का मन मोह लिया था।

उसने उन दोनों दासियों की शक्ल सूरत के बारे में विस्तार से पूछा तो उसका शक पक्का हो गया कि वे दोनों बदकिस्मत दासियाँ उसकी बहिन और ज़ोरायदा ही थीं जिनको वह ढूँढ रहा है।

फिर उसको पता चला कि जिस आदमी ने उन दोनों को खरीदा था उसका नाम थियूलीकोस[72] था और वह बलसोरा से 40 लीग[73] दूर रहता था। वह एक बहुत ही अमीर आदमी था पर काफी बूढ़ा था। वह अपनी जवानी में सुलतान का कापूदाँ–बाशौ रह चुका था पर अब वह अपना पैसा ले कर अकेली ज़िन्दगी बिता रहा था।

---

[72] Thiuli-Kos – name of the slave merchant who bought Mustafa's sister and fiancée.

[73] League is a measure of length or distance varying fron 2.4 to 4.6 English statute miles, 5,280 feet each, on land.

यह सुन कर मुस्तफा ने पहले तो अपने घोड़े पर चढ़ना चाहा ताकि वह दौड़ कर थियूलीकोस को पकड़ सके जो वहाँ से एक दिन पहले ही गया था। पर उसने सोचा कि वह अकेले उस ताकतवर से नहीं लड़ पायेगा और उसके बाद भी वह बच कर भाग सकता है तो उसने कोई दूसरी तरकीब सोची।

जल्दी ही उसके दिमाग में वह दूसरी तरकीब आ गयी। उसने सोचा कि उसकी शक्ल सूरत सुलेखा के बाशौ से बिल्कुल मिलती थी। इसी एकसेपन ने उसको ओरबासन के आदमियों के हाथों पकड़वा दिया था। अगर असली सुलेखा का बाशौ वहाँ नहीं आ जाता तो उसको तो अल्लाह के पास चला जाना था।

सो उसने सोचा कि वह थियूलीकोस के पास सुलेखा के बाशौ के नाम से जायेगा और इस तरह से उन दोनों अभागी लड़कियों को छुड़ा कर लायेगा। इस तरकीब के अनुसार उसने कुछ नौकर और कुछ घोड़े इकट्ठा किये।

इस काम को करने के लिये ओरबासन का दिया हुआ पैसा उसके बहुत काम आया। उसने अपने आपको और अपने नौकरों को शाही कपड़े पहनाये और थियूलीकोस के महल को चल दिया।

पाँच दिन की यात्रा के बाद वह थियूलीकोस के महल के पास आ गया। वह एक सुन्दर मैदान में बना हुआ था। उसकी ऊँची ऊँची चहारदीवारी थी जो उसके महल से थोड़ी सी ऊँची जा रही थी।

जब मुस्तफा उसके काफी पास आ गया तो उसने अपने बाल और दाढ़ी काली रंगी और एक पौधे के रस को अपने चेहरे पर लगा लिया जिससे उसका रंग कुछ कत्थई सा हो गया बिल्कुल वैसा ही जैसा सुलेखा के बाशौ का था।

यहॉ से उसने अपने एक नौकर को महल के अन्दर भेजा और उससे कहा कि वह उससे जा कर एक रात के ठहरने की जगह मॉगे। नौकर जल्दी ही चार शाही कपड़े पहने दासों के साथ वापस आ गया।

थियूलीकोस के दासों ने मुस्तफा के घोड़े की लगाम थामी और उसको बॉधने के लिये ले चले। फिर उन्होंने उसको घोड़े से उतरने में सहायता की। चार दास उसको फिर थियूलीकोस के पास ले चले।

थियूलीकोस एक बूढ़ा पर तन्दुरुस्त आदमी था। उसने मेरे भाई को बड़े आदर से बिठाया और उसको उसके महल में जो कुछ भी सबसे अच्छा था दिया।

मुस्तफा ने जल्दी ही अपनी बात नये दासों के खरीदने की तरफ मोड़ दी। थियूलीकोस ने अपनी नयी खरीदी हुई लड़कियों की सुन्दरता की बहुत तारीफ की पर वह कहने लगा कि वे बहुत दुखी थीं। पर उसको विश्वास था कि उनका दुख कुछ दिनों में चला जायेगा।

मेरा भाई उसके स्वागत से बहुत खुश था। वह अपने दिल में आशा लिये सोने चला गया।

वह शायद एक घंटा ही सोया होगा कि एक लैम्प की रोशनी से उसकी ऑख खुल गयी। उसने उसकी ऑखें चौंधिया दी थी। वह उठ कर उधर देखने लगा।

उसको लगा कि वह सपना देख रहा है क्योंकि उसके सामने तो वही नाटा आदमी खड़ा था जो उसको ओरबासन के तम्बू में मिला था। उसके एक हाथ में एक लैम्प था और वह अपना चौड़ा मुँह खोल कर ज़ोर से हॅस रहा था।

मुस्तफा ने अपनी बॉह में चुटकी काटी अपनी नाक खींची और यह देखने की कि वह कहीं सपना तो नहीं देख रहा पर वह शक्ल तो ऐसी की ऐसी ही रही।

अपने आश्चर्य से जब वह ज़रा सा होश में आया तो उसने उससे पूछा — "तुम यहॉ मेरे बिस्तर के पास क्या कर रहे हो।"

वह बोला — "इतनी ज़ोर से मत चिल्लाओ मेरे दोस्त। मैंने उस उद्देश्य का ठीक ही अन्दाजा लगाया था जो तुमको यहॉ खींच कर लाया है। मुझे तुम्हारी शक्ल अभी तक याद है। अगर मैंने अपने हाथों से बाशौ को फॉसी पर नहीं लटकाया होता तो तुमने मुझे धोखा दे दिया होता। खैर अब मैं तुमसे एक सवाल पूछता हूॅ।"

मुस्तफा ने देखा कि वह पहचान लिया गया है तो वह बीच में ही बोला — "पहले तुम मुझे यह बताओ कि तुम यहाँ क्यों आये हो।"

नाटा आदमी बोला — "वह मैं तुम्हें बताता हूँ। मैं उस सरदार के साथ नहीं रह सका इसलिये मैं वहाँ से भाग निकला पर मुस्तफा तुम क्योंकि हमारे झगड़े की खास वजह थे इसलिये तुम्हें अपनी बहिन की शादी मुझसे करनी पड़ेगी।

फिर मैं तुम्हें यहाँ से भाग जाने में सहायता करूँगा। अगर तुम उसे मुझे नहीं दोगे तो मैं अपने नये मालिक के पास जाऊँगा और अपने नये बाशौ के बारे में उसे सब कुछ बता दूँगा।"

उस समय तो वह बहुत खुश था कि उसको उसकी बहिन और दुलहिन दोनों मिल गयीं थीं पर उसको जब ऐसा लग रहा था तो उसी समय यह नीच आ गया। यह सुन कर मुस्तफा तो गुस्से और डर से आपे से बाहर हो गया।

अब उसके पास केवल एक ही प्लान रह गया था और वह यह कि वह इस छोटे से राक्षस को मार दे। सो वह एक ही बार में अपने बिस्तर से कूद कर वह उसके ऊपर जा गिरा।

पर उस आदमी ने भी शायद इसी बात की उम्मीद की थी से तुरन्त ही उसने अपन हाथ का लैम्प नीचे गिरा दिया जिससे वह तुरन्त ही बुझ गया। इसके बाद वह अँधेरे में ही "बचाओ बचाओ" चिल्लाता हुआ भाग लिया।

अब समय था कि कोई एक फैसला किया जाये। उसने अपने दासों को वहीं छोड़ा और खिड़की की तरफ यह देखने के लिये बढ़ा कि वह वहाँ से बाहर कूद सकता है या नहीं। जमीन वहाँ से काफी नीची थी और उसके दूसरी तरफ वह ऊँची दीवार थी जिसे फिर उसे फाँदना था।

यही सोचता हुआ वह तब तक खिड़की के पास खड़ा रहा जब तक उसे लोगों के बोलने की आवाजें नहीं आने लगीं। वे तब तक कमरे के दरवाजे तक आ पहुँचे थे। हताश हो कर उसने अपना चाकू और कपड़े पकड़े और खिड़की से नीचे कूद गया। वह बहुत ज़ोर से नीचे गिरा था पर अल्लाह की दुआ से उसकी कोई हड्डी पसली नहीं टूटी थी।

वह तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ और उस दीवार की तरफ भागा जो उस महल के चारों तरफ खड़ी थी। सौदागर के लोग उसके पीछे पीछे भाग रहे थे। उनका यह देख कर आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि वह उस दीवार पर चढ़ गया और जल्दी से उस दीवार के दूसरी पार कूद कर आजाद हो गया।

वह वहाँ से फिर भाग लिया और तब तक नहीं रुका जब तक कि वह एक जंगल के पास नहीं आ गया। वहाँ वह थक कर बैठ गया। अब वह फिर सोचने लगा कि अब उसे क्या करना चाहिये। उसको अपने नौकरों और घोड़ों को तो उसे वहीं छोड़ना ही पड़ गया

था पर पैसा जो उसने अपनी कमर में बॉध रखा था वह अभी भी उसके पास था।

उसकी अक्ल ने ज़ोर मारा तो उसको उन दोनों लड़कियों को छुड़ाने का एक दूसरा तरीका ध्यान में आया। वह वहॉ से उठा और जंगल में चलता रहा। चलते चलते वह एक गॉव में आ गया। वहॉ आ कर उसने कुछ पैसे से एक घोड़ा खरीदा और उस पर सवार हो कर बहुत थोड़ी ही देर में शहर पहुॅच गया।

वहॉ जा कर उसने किसी डाक्टर के बारे में पूछताछ की तो लोगों ने उसको एक बूढ़े को बता दिया।

यहॉ उसने उसको कुछ सोने के टुकड़े दे कर एक ऐसी दवा ले ली जो मरे जैसा सुला देती थी। साथ ही उसके उसने उससे एक दूसरी दवा भी ले ली जिससे उसके ऊपर पड़ा सोने वाला असर खत्म हो जाता था।

यह सब उससे ले कर उसने एक नकली लम्बी दाढ़ी खरीदी एक काला गाउन खरीदा और कई सारे डिब्बे लिये जिससे ऐसा लगने लगा जैसे वह कोई घूमता हुआ डाक्टर हो। उस सब सामान को उसने एक गधे पर लादा और वापस थियूलीकोस के महल की तरफ चल दिया।

इस बार उसको पूरा विश्वास था कि इस बार वह पहचाना नहीं जायेगा क्योंकि उसकी दाढ़ी ने उसकी शक्ल यहॉ तक बदल दी थी कि वह खुद अपने आपको नहीं पहचान पा रहा था।

जब वह महल के आसपास पहुँचा तो उसने वहाँ यह खबर फैला दी कि वहाँ एक डाक्टर आया है जिसका नाम चकमंक बुडी बाबा[74] है। जैसी उसने आशा की थी इसका वैसा ही असर हुआ।

लोगों को तो उसका नाम ही बहुत शानदार लगा सो लोग उसके पास आने लगे। उस बूढ़े बेवकूफ आदमी थियूलीकोस ने तो उसको सिर आँखों पर बिठाया और उसको अपने खाने की मेज पर खाने के लिये बुलाया।

चकमंक बुडी बाबा उसके घर गये और उससे बातें कीं।

करीब एक घंटा ही बातचीत चली होगी कि उस बूढ़े ने यह निश्चय कि वह डाक्टर उसकी सब दासियों की जाँच कर लेगा। अब क्या था डाक्टर की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं रहा कि अब वह अपनी प्यारी बहिन को देख पायेगा।

वह थियूलीकोस के पीछे पीछे चल दिया और थियूलीकोस उसको घर के अन्दर ले गया। वे एक खाली कमरे में पहुँचे जो बहुत सुन्दर सजा हुआ था।

वहाँ पहुँच कर थियूलीकोस ने अपनी दासियों से कहा — "चम बाबा या जो कुछ भी इनका नाम है ये हमारे डाक्टर हैं। ये तुम लोगों की जाँच के लिये आये हैं। एक बार दीवार में बने छेद में से देखना। फिर मेरी हर दासी तुम्हारी तरफ अपना हाथ बढ़ायेगी।

[74] Chakamankabudibaba – name of Mustafa as the physician

तुम उसकी कलाई पकड़ कर उसकी नाड़ी देखना कि वह रुक रुक कर चल रही है या धीमी है या बीमार है।”

किसी तरह भी मुस्तफा उनकी शक्ल देखने का इन्तजाम नहीं कर सका ताकि वह उनको देख कर अपनी बहिन को पहचान ले। फिर भी थियूलीकोस इस बात पर राजी हो गया कि वह जिस दासी को जॉचेगा वह उसको उसकी सामान्य तन्दुरुस्ती कैसी थी यह बतायेगा।

थियूलीकोस ने अपनी कमर से एक लम्बी लिस्ट निकाली और उसमें से एक एक का नाम ज़ोर से पढ़ना शुरू किया। इस पर हर बार एक हाथ दीवार से बाहर आता डाक्टर उसकी नाड़ी देखता और थियूलीकोस को उसका हाल बताता।

इस तरह वह छह दासियों के हाथ देख चुका था और उन सबको तन्दुरुस्त बता चुका था। उसके बाद थियूली ने नाम पढ़ा “फातिमा” तो एक छोटा सा सफेद हाथ दीवार में से निकला तो खुशी से कॉपते हुए उसने उसे पकड़ लिया और कहा कि वह तो बहुत बीमार है।

यह सुन कर थियूलीकोस तो बहुत आश्चर्य में पड़ गया और तुरन्त ही अपने अक्लमन्द डाक्टर चकमंक बुडी बाबा से कहा कि वह उसको ठीक करने के लिये कोई दवा बताये।

डाक्टर कमरे से चला गया कि एक नोट लिखा — “फातिमा मैं तुझे बचा लूँगा अगर तू एक घूँट दवा इसमें से पी ले तो। इससे तू

दो दिन के लिये मरी सी हो जायेगी। पर तू चिन्ता न करना तुझे ज़िन्दा करने की तरकीब भी मेरे पास है।

अगर तू राजी हो तभी इसका जवाब देना वरना यह दवा फिर तेरे किसी काम की नहीं है। इसी से मुझे पता चल जायेगा कि तू राजी है या नहीं।"

कुछ पल बाद ही वह कमरे में वापस आ गया। थियूलीकोस अभी भी वहीं मौजूद था। मुस्तफा अपने साथ पीने के लिये कुछ लाया था। मुस्तफा ने फातिमा की नाड़ी एक बार फिर देखी तो वह नोट उसकी चूड़ियों के नीचे खिसका दिया और दीवार में से उसको पीने की दवा दे दी।

थियूलीकोस के चेहरे से लग रहा था कि वह उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में बहुत चिन्तित है। उस चिन्ता की वजह से उसने दूसरी दासियों की जॉच फिर कभी के लिये टाल दी।

जैसे ही वह मुस्तफा के साथ बाहर गया उसने दुखी आवाज में मुस्तफा से कहा — "छड़ी बाबा मुझे सादा से शब्दों में बताइये कि फातिमा की बीमारी के बारे में आप क्या सोचते हैं।"

मेरे भाई ने एक गहरी सॉस छोड़ते हुए कहा — "अल्लाह आपको धीरज दे उसको धीमा बुखार है जिसमें उसकी जान भी जा सकती है।"

थियूलीकोस गुस्से से चिल्लाते हुए बोला — "तू यह क्या कह रहा है ओ डाक्टर कुत्ते। वह जिसको मैंने 2000 सोने के सिक्के दे

कर खरीदा है क्या वह एक गाय की तरह मर जायेगी। तू यह समझ ले कि अगर तूने उसे नहीं बचाया तो मैं तेरा सिर काट दूँगा।"

मेरे भाई को लगा कि उससे कोई गलत कदम उठ गया है सो उसने थियूलीकोस को धीरज दिया। वे दोनों अभी ये बातें कर ही रहे थे कि अन्दर से एक काला दास आया और उसने आ कर बताया कि वह दवा उस पर काम नहीं कर रही थी।

थियूलीकोस ने मुस्तफा से अपना सोना बेकार जाते देख कर दुखी हो कर चीखते हुए कहा — "चकमदाबेलदा या जो कुछ भी तुम्हारा नाम है अपनी पूरी ताकत लगा दो। मैं तुम्हें वही दूँगा जो तुम माँगोगे।"

डाक्टर बोला — "ठीक है मैं कोशिश करता हूँ। मैं यह एक और दवा देता हूँ जिससे वह खतरे से बाहर हो जायेगी।"

बूढ़ा थियूलीकोस रोते रोते बोला — "जो भी देना हो दो पर बस उसे ठीक कर दो।"

मुस्तफा खुश हो कर अपनी दूसरी दवा लाने गया और उसे काले दास को दे कर उसे बताया कि उस दवा को उसे कितना देना है। फिर वह थियूलीकोस के पास गया और उससे कुछ समुद्री घास लाने के लिये कहा।

समुद्र का किनारा वहीं महल के पास ही था। उसने अपना नकली रूप उतारा उन्हें पानी में फेंका जहाँ वे पानी में तैर गये।

फिर उसने अपने आपको एक घनी झाड़ी में छिपाते हुए रात का इन्तजार किया।

रात होने पर वह थियूलीकोस के महल की कब्र की जगह चल दिया।

मुस्तफा बस केवल एक घंटे के लिये ही वहाँ से गया था कि दास थियूलीकोस को खबर ले कर आये कि फातिमा तो मरने वाली है। यह सुन कर उसने दासों को समुद्र के किनारे से डाक्टर को लाने के लिये भेजा पर वे तो वहाँ से अकेले ही लौट आये और आ कर खबर दी कि लगता है कि डाक्टर तो पानी में डूब गया क्योंकि उन्होंने उसका काला गाउन पानी में तैरता देखा था और साथ में उसकी दाढ़ी भी लहरों के साथ ऊँचे नीचे तैर रही थी।

थियूलीकोस को अब कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। वह अपने आपको और सारी दुनियाँ को गालियाँ दे रहा था। वह अपनी दाढ़ी नोच रहा था और दीवार में सिर मार रहा था।

पर इसका कोई फायदा तो था नहीं। फातिमा ने जल्दी ही

अपनी साथिनों की बाँहों में दम तोड़ दिया। जब अभागे बूढ़े ने फातिमा के मरने की खबर सुनी तो उसने अपने दासों को जल्दी से एक ताबूत बनाने का हुकुम दिया क्योंकि वह एक लाश को अपने घर में सहन नहीं कर सकता था।

उसने उसको ताबूत में रख कर तुरन्त ही लाश दफनाने की जगह लाने का हुकुम दिया। कुछ उठाने वाले उस ताबूत को ले कर वहाँ आ गये। उन्होंने भी तुरन्त ही उसको वहाँ रखा और वहाँ से भाग लिये क्योंकि वहाँ उनको कई आहों की आवाजें सुनायी दीं।

मुस्तफा ने जो वहीं पास में छिपा हुआ था उन लाने वालों को इतना डराया कि वे बहुत जल्दी ही भाग गये। उनके जाते ही उसने एक लैम्प जलाया जो वह इसी लिये लाया था। फिर अपनी जेब से दवा की वह छोटी सी शीशी निकाली जिससे वह अपनी बहिन को ज़िन्दा कर सकता था और फातिमा के ताबूत का ढक्कन खोल दिया।

पर उसको देखते ही तो उसके तो होश उड़ गये उसने देखा कि न तो वहाँ फातिमा थी और न ज़ोरायदा ही थी बल्कि कोई अजनबी ही उस ताबूत में लेटा हुआ था।

किस्मत के इस धक्के से उभरने के लिये उसे कुछ समय लग गया। दया ने उसके गुस्से को काबू में रखा उसने वह दवा उस लड़की को पिला दी। वह तुरन्त ही ज़िन्दा हो गयी। उसकी साँस चलने लगी। उसकी आँखें खुल गयीं।

कुछ देर तक तो वह यही सोचती रही कि वह थी कहाँ। आखिर उसको कुछ कुछ याद आया कि उसके साथ क्या हुआ था। वह ताबूत में से उठी और मुस्तफा के पैरों पर गिर गयी।

"ओ भले आदमी। इस डरावनी जेल से मुझे आजाद करने के लिये मैं कैसे तुम्हारा धन्यवाद करूँ।"

मुस्तफा ने उसे बीच ही में रोकते हुए उससे पूछा — "यह कैसे हुआ कि बजाय मेरी बहिन फातिमा के तुम बाहर निकल आयीं।"

लड़की ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा और बोली — अब मेरी समझ में आया कि मैं कैसे आजाद हुई जिसे मैं अब तक समझ ही नहीं पायी थी। मैं इस महल में फातिमा के नाम से जानी जाती हूँ। इसी लिये तुम्हारा वह नोट और दवा मेरे पास पहुँच गयी।"

मेरे भाई ने फिर उससे विनती की कि वह उसकी बहिन और ज़ोरायदा की खबर उसको दे। उसने कहा कि वे दोनों उसी महल में हैं पर थियूलीकोस के रिवाज के अनुसार उनके नाम दूसरे रख दिये गये हैं। उनके नाम अब मिर्ज़ा और नूरमहल हैं। जब आजाद हुई फातिमा ने देखा कि मेरा भाई अपनी तरकीब के सफल न होने की वजह से बहुत अफसोस में है तो उसने उसकी हिम्मत बढ़ायी। उसने उसको उन दोनों को वहाँ से निकालने की तरकीब बतायी।

इससे मुस्तफा की हिम्मत बढ़ गयी और वह एक नयी आशा से भर गया और उससे वह रास्ता बताने की विनती की।

फातिमा दासी बोली कि मैं यहा थियूलीकोस की केवल पाँच महीने ही दासी रही हूँ फिर भी मैं शुरू से ही यहाँ से भागने का रास्ता ढूँढती रही हूँ पर मुझ अकेले के वश में यह नहीं था।

इस महल के अन्दर वाले ऑगन में तुमने एक फव्वारा देखा होगा जिसमें 10 पाइपों से पानी निकलता रहता है। इस फव्वारे ने मेरा ध्यान खींचा।

मुझे याद आया कि मैंने अपने पिता के घर में भी एक ऐसा ही फव्वारा देखा था। उसका पानी ऊपर जा कर एक बहुत बड़े टैंक में इकट्ठा हो जाता था। यह जानने के लिये कि यह फव्वारा उसी तरह से बना है या नहीं मैंने एक दिन थियूलीकोस से उसके इस फव्वारे की बहुत तारीफ की। और उससे उसकी बनावट के बारे में पूछा।

थियूलीकोस बोला — "यह फव्वारा मैंने खुद बनाया है और जो कुछ भी तुम यहॅ ऊपर देख रही हो वह तो इसका एक बहुत छोटा सा हिस्सा है। क्योंकि इस फव्वारे में पानी एक छोटी नदी से आता है जो कम से कम यहॅ से 1000 कदम दूर है।

यह पानी वहॅ से एक बहुत बड़े बन्द पानी के कमरे में से आता है जिसकी ऊॅचाई एक आदमी की ऊॅचाई से भी ज़्यादा ऊॅची है। और इस सब का डिजाइन मैंने बनाया है।"

इसे सुनने के बाद मैंने अक्सर सोचा कि काश मेरे अन्दर एक आदमी की ताकत होती जिससे मैं पहाड़ से एक पत्थर लुढ़का सकती तब मैं यहॅ से जिधर भी चाहूॅ उधर भाग सकती थी।

अब मैं तुम्हें पानी का वह कमरा दिखाती हूॅ। रात को तुम उसमें से हो कर महल में घुस सकते हो और उनको आजाद करा सकते हो। बस तुम्हारे साथ केवल दो आदमी होने चाहिये जो रात

को महल के अन्दर के हिस्से की पहरेदारी करने वालों को काबू में कर सकें।"

वह जब ऐसा मुस्तफा से बोली तो मेरा भाई मुस्तफा हालाँकि दो बार अपनी कोशिशों में असफल हो चुका था पर उसने फिर अपनी हिम्मत बटोरी और आशा की कि अल्लाह की दुआ से अबकी बार वह जरूर सफल हो जायेगा।

उसने उससे वायदा किया कि अगर वह उसको महल में घुसने में सहायता करेगी तो वह यकीनन उसको उसके माता पिता के घर पहुँचा देगा।

पर एक विचार उसको अभी भी तंग कर रहा था कि वह अपने साथ के लिये **2–3** साथी कहाँ से लायेगा। कि तभी उसे ओरबासन के चाकू की याद आयी और याद आयी उसके वायदे की कि जब भी उसको सहायता की जरूरत हो तो वह उसके बुलाते ही उसकी सहायता के लिये पहुँच जायेगा। उसने नकली फातिमा को साथ लिया और सरदार से मिलने चल दिया।

जिस शहर में उसने अपना डाक्टर का वेश बनाया था उसी शहर में पहुँच कर उसने अपने आखिरी बचे पैसे से एक घोड़ा खरीदा, शहर के बाहर एक गरीब स्त्री के घर में फातिमा को ठहराया और तुरन्त ही उस पहाड़ की तरफ चल दिया जहाँ वह सरदार ओरबासन से पहली बार मिला था।

वह वहाँ तीन दिन में पहुँच गया। उसने जल्दी ही उसके तम्बू का पता लगा लिया। वह तुरन्त ही उसके तम्बू में बिना उसकी इजाज़त माँगे घुस गया। सरदार ने भी उसका प्रेम से स्वागत किया।

उसने सरदार को अपना हाल बताया और अपनी कोशिशें और उनके बेकार होने के बारे में भी बताया तो ओरबासन उस पर हँसे बिना न रह सका। वह जब तब उस पर हँसता रहा खास करके जब जब उसने उसे बताया कि वह एक डाक्टर चकमंक बूढ़ी बाबा को वेश बना कर वहाँ गया था।

नाटे आदमी की हरकत पर वह बहुत गुस्सा था। उसने कसम खायी कि अगर वह उसे मिल गया तो वह उसे अपने हाथों से फाँसी लगा देगा।

उसने मेरे भाई को विश्वास दिलाया कि वह उसकी सहायता अवश्य करेगा पर वह अभी अपनी यात्रा की थकान दूर कर ले।

सो मुस्तफा उस रात उसके तम्बू में रहा और सुबह होते ही जैसे ही आसमान लाल हुआ वे दोनों चल पड़े। ओरबासन ने अपने साथ अपने तीन सबसे बहादुर लोगों को साथ ले लिया। वे हथियार बन्द भी थे और अच्छे घुड़सवार भी।

वे लोग दो दिन में ही उस छोटे शहर में पहुँच गये जहाँ मुस्तफा नकली फातिमा को छोड़ कर आया था। वहाँ से उन्होंने फातिमा को अपने साथ लिया और जंगल की तरफ चल पड़े। उसके थोड़ी ही दूर पर थियूलीकोस का महल दिखायी दे रहा था।

वहॉ पहुॅच कर वे छिप गये और रात होने का इन्तजार करने लगे। जैसे ही अॅधेरा हो गया तो फातिमा के बताये अनुसार वे उस छोटी नदी की तरफ चल पड़े जहॉ से पानी का कमरा शुरू होता था। वह उनको जल्दी ही मिल गया।

वहॉ उन्होंने फातिमा को छोड़ा साथ में एक आदमी और घोड़े छोड़े और उसमें उतरने के लिये तैयार हुए। उनके जाने से पहले फातिमा ने उनको एक बार और सावधान किया उसने उनको ठीक से दिशा बतायी।

और कहा कि फव्वारे से बाहर निकलते ही अन्दर वाले ऑगन में निकलते ही उसके बॉयी और दॉयी तरफ दोनों कोनों पर उनको एक एक बुर्जी खड़ी मिलेगी। दॉयी बुर्जी से छठे दरवाजे पर उनको फातिमा और ज़ोरायदा मिल जायेंगी। उसके दरवाजे पर दो काले दास खड़े पहरा दे रहे होंगे।

ठीक से हथियार ले कर और जबरदस्ती दरवाजा खोलने के लिये कुछ लोहे के औजार ले कर मुस्तफा ओरबासन और उसके दो आदमी उस पानी के कमरे में कूद गये। वे तुरन्त ही पानी के बीच तक डूब गये पर फिर वे उतनी ही जल्दी ऊपर तक भी जाने लगे।

आधे घंटे में वे फव्वारे तक पहुॅच गये और तुरन्त ही अपने औजार तैयार करने लगे। दीवार बहुत मजबूत थी और मोटी थी पर चार आदमियों की ताकत के आगे ठहर न सकी।

बहुत जल्दी ही उन्होंने उस दीवार में इतना बड़ा छेद कर लिया कि वे उसमें से बिना किसी मुश्किल के अन्दर चले गये। ओरबासन उसमें सबसे पहले अन्दर घुसा और फिर उसने दूसरों को अन्दर घुसा लिया। अब वे अन्दर वाले ऑगन में थे।

वह दरवाजा ढूँढने के लिये उन्होंने महल की सामने वाली दीवार देखी जिसे उन्हें बताया गया था। पर वे सब एक दरवाजे पर राजी नहीं हो सके कि वह कौन सा दरवाजा था जिसमें उनको जाना था।

क्योंकि दॉयी बुर्जी से बॉयी तरफ गिनने पर उनको एक दरवाजा दिखायी दिया जो दीवार से बन्द था। अब उन्हें यह पता नहीं चल रहा था कि नकली फातिमा ने इसको भी अपनी गिनती में शामिल किया था नहीं।

पर ओरबासन ने यह तय करने में बिल्कुल देर नहीं लगायी कि उसे कौन सा दरवाजा खोलना है — "मेरी बढ़िया तलवार मेरे लिये यह दरवाजा खोलेगी।" कहते हुए वह छठे दरवाजे की तरफ बढ़ गया और बाकी लोग उसके पीछे पीछे आये।

उन्होंने दरवाजा खोल दिया तो उन्होंने देखा कि उस कमरे में तो छह काले दास पड़े सो रहे थे। इससे उनको लगा कि शायद वे किसी दूसरे कमरे में आ गये हैं सो वे धीरे से बाहर जाने लगे।

तभी एक शक्ल एक कोने में से उठी और सहायता मॉगने लगी। उन्होंने देखा कि वह तो वही काला नाटा है जो उनको कैम्प में दिखायी दिया था।

पर इससे पहले कि काले दास कुछ जान पाते ओरबासन ने अपनी कमर का कपड़ा दो हिस्सों में फाड़ा। एक हिस्से से तो उसका मुँह बाँध दिया और दूसरे हिस्से से उसके हाथ उसके पीछे की तरफ बाँध दिये।

फिर वह दूसरे दासों की तरफ पलटा तो कुछ को तो मुस्तफा और उसके दूसरे आदमियों ने पहले ही बाँध दिया था। बाकी दासों पर भी काबू पा लिया गया। उन्होंने अपने अपने चाकू दासों की छाती पर रखे और उनसे नूरमहल और मिर्जा का पता पूछा। उन्होंने बताया कि वे दोनों बराबर वाले कमरे में हैं।

मुस्तफा तुरन्त ही उस कमरे की तरफ दौड़ गया। उसने देखा कि फातिमा और ज़ोरायदा भी शोर सुन कर जाग गयी थीं। उन दोनों ने अपने अपने गहने और कीमती चीज़ें लीं और मुस्तफा के पीछे पीछे चल दीं।

इस बीच दोनों डाकुओं ने ओरबासन को सलाह दी कि वे वहाँ से जो कुछ भी उनको मिले वह वहाँ से ले चलें। तो ओरबासन ने कहा कि रात को किसी के घर में घुस कर सोना चोरी करना ओरबासन के लायक काम नहीं है।

मुस्तफा और दोनों लड़कियाँ पानी के कमरे में कूद पड़े और वहाँ से चल दिये। ओरबासन ने कहा कि वह भी उनके पीछे पीछे आता है। जैसे ही वे वहाँ से चले गये तो सरदार और एक डाकू उस नाटे को पकड़ कर आँगन में ले आये।

वहाँ उन्होंने उसके गले में एक रेशमी रस्सी का फन्दा डाल कर उन्होंने उसको फव्वारे में उसकी सबसे ऊँची जगह से लटका दिया। यह रेशम की रस्सी वे इसी लिये लाये थे। इस तरह से उस नीच को उसकी नीचता की सजा दे कर वे भी पानी में कूद गये।

दोनों लड़कियों ने आँखों में आँसू भर कर ओरबासन को उनको छुड़ाने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया। उसने उन सबसे वहाँ से जल्दी से जल्दी भाग जाने के लिये कहा क्योंकि उनको इसकी आशा बहुत ज्यादा थी कि थियूलीकोस जागते ही उन दोनों को हर तरफ ढूँढने की कोशिश करेगा।

अगले दिन रोते हुए मुस्तफा और दोनों लड़कियों ने सरदार ओरबासन से विदा ली। वास्तव में वे उसको कभी नहीं भूल सकते थे। नकली फातिमा को उसका वेश बदला कर बलसोरा भेज दिया गया ताकि वह वहाँ से अपने घर जा सके।

एक छोटी और खुश खुश यात्रा के बाद मेरा भाई मुस्तफा दोनों लड़कियों को छुड़ा कर घर वापस आ गया। दोनों बच्चों को ठीकठाक देख कर मेरे पिता तो बस खुशी से मर ही गये थे।

उनके आने के अगले दिन ही उन्होंने एक बहुत शानदार दावत दी जिसमें सारे शहर को बुलाया गया था। सारे दोस्तों और रिश्तेदारों के सामने मेरे भाई ने अपनी कहानी सुनायी तो सब लोगों ने एक आवाज से उसकी और उस डाकू की बहुत प्रशंसा की।

जब मुस्तफा ने अपनी कहानी सुना ली तो हमारे पिता उठे और ज़ोरायदा को उसके पास ले जा कर गम्भीर आवाज में कहा — "अब मैं तेरे सिर से अपना शाप हटाता हूँ। ले यह लड़की अब तू ले जिसको तू इतनी मेहनत से बचा कर लाया है। मैं तुझे पिता जैसा आशीर्वाद देता हूँ।

अल्लाह करे कि इस शहर को कभी ऐसे आदमियों की कमी महसूस न हो जिनमें भाइयों जैसा प्यार हो बहादुरी हो और सब तेरे जैसे हों।"

XXXXXXX

अब कारवाँ रेगिस्तान पार कर चुका था। आगे हरे हरे मैदान और घनी पत्तियों वाले पेड़ देख कर यात्रियों को बहुत खुशी हुई। उनको यह सुन्दरता देखे हुए बहुत दिन हो गये थे।

वह एक सुन्दर घाटी थी जहाँ एक कारवाँ के ठहरने के लिये सराय भी थी। उन्होंने रात को वहीं रुकने की सोची। हालाँकि उसमें कम जगह और कम खाने पीने का सामान था फिर भी सब लोग बहुत खुश थे। क्योंकि उनका इतनी मुश्किलों वाला रास्ता शान्ति से गुजर गया।

इस यात्रा में सबके दिल सबके सामने खुल गये थे और सब लोग बहुत खुश थे। सबसे छोटा और खुशदिल सौदागर मूले एक

हॅसी वाला नाच नाचा कई गाने गाये जिससे सब लोग बहुत हॅसे। यहॉ तक कि ज़ाल्यूकोस भी हॅसा जो बहुत ही गम्भीर यूनानी था।

पर वह केवल नाच गाने से ही सन्तुष्ट नहीं था उसने अपनी कहानी भी सुनायी जिसका उसने वायदा किया था। जैसे ही वह अपने इस हॅसी मजाक आदि से निबटा तो उसने अपनी कहानी कहनी शुरू की।

6 छोटा मक[75]

ज़ाल्यूकोस बोला — "मेरा जन्म नाइकीया[76] में हुआ था। वहाँ एक आदमी रहता था जिसको लोग छोटे मक के नाम से पुकारते थे। हालाँकि मैं उस समय काफी छोटा था फिर भी मुझे उसकी अभी तक याद है क्योंकि एक बार उसी की वजह से मुझे मेरे पिता ने इतना मारा कि बस मैं मरने वाला हो गया था।

वह छोटा मक जो उस समय भी बूढ़ा था तीन या चार फीट लम्बा था। उसकी अपने में एक अलग ही तरह की शक्ल थी क्योंकि उसका शरीर छोटा था और बहुत तेज़ था। उसका सिर दूसरों के सिर से बहुत बड़ा था और बहुत मोटा था। वह एक बहुत बड़े घर में अकेला रहता था और अपना खाना अपने आप ही बनाता था।

लोगों को यह पता ही नहीं चलता था कि वह ज़िन्दा है या मर गया क्योंकि वह महीने में केवल एक बार ही बाहर निकला करता था। पर रोज दोपहर को उसके घर से धुँआ निकलता था।

शाम को वह अक्सर अपनी छत पर इधर उधर घूमता हुआ देखा जाता था। क्योंकि वह बहुत छोटा था तो सड़क पर से देखने

[75] Little Muck. (Tale No 6) Told by the Greek Zaleukos.

[76] Nicaea – an important town in Greece. Its name has been changed now, it is now called Iznik.

पर तो ऐसा लगता था जैसे केवल कोई सिर छत पर इधर से उधर घूम रहा हो।

मैं और मेरे साथी कुछ शरारती थे जो हर एक को चिढ़ाते थे और उसका मजाक बनाते थे। एक दिन जब हम लोगों की छुट्टी थी तो छोटा मक घर से बाहर निकला।

उस दिन हम लोगों को उसके घर के सामने मिलना था और उसके बाहर निकलने का इन्तजार करना था। और जब उसका दरवाजा खुला तो सबसे पहले उसका बड़ा सा सिर ही नहीं बल्कि उससे भी बड़ी उसकी पगड़ी बाहर निकली।

जब उसका बाकी का शरीर बाहर निकला तो वह एक शाल से ढका हुआ था जो लापरवाही से उसके शरीर पर पड़ा था। उसकी पतलून बहुत चौड़ी थी। उसकी कमर में एक कपड़ा बँधा हुआ था जिसमें एक बड़ा सा चाकू लटका हुआ था। या यों कहो कि छोटा मक उस चाकू से बँधा हुआ था।

जब इस वेश में वह बाहर आया तो हम तो खुशी से चिल्ला पड़े। हमने अपनी अपनी टोपियाँ उछाल दीं और पागलों की तरह से उसके चारों तरफ नाचने लगे।

छोटे मक ने हमको गम्भीरता से सैल्यूट मारा और फिर अपने कपड़ों को सँभालता हुआ लम्बे लम्बे कदम भरता हुआ सड़क पर चला गया। उसके पैरों में बड़े बड़े जूते थे। मैंने तो वैसे जूते कभी पहले कहीं देखे नहीं थे।

हम बच्चे लोग बीच बीच में "छोटा मक छोटा मक" चिल्लाते हुए उसके पीछे भाग रहे थे।

हमारे पास एक कविता भी थी जिसको हम उसकी इज़्ज़त में कभी कभी गा लेते थे। वह कविता थी —

"छोटे मक ओ छोटे मक। तू कितना बढ़िया बौना है
जो एक ऊँचे से घर में रहता है महीने में केवल एक बार बाहर निकलता है
सिर पहाड़ जैसा है पर तू छोटा है तू एक बार मुड़ और देख
भाग और हमको पकड़ मक ओ मक"

इस तरह से हम अक्सर उसके साथ खेल खेलते। अब मुझे शरम आती है यह कहते हुए कि मैं उनमें से सबसे बुरा काम करता था। मैं उसके शाल पर से उसको चिऊँटी काटता था। एक बार पीछे से आ कर मैंने उसके जूतों पर पैर रख दिये थे इससे वह गिर भी पड़ा था।

पहले तो यह हमारा हॅसी मजाक का साधन था पर बाद में तो मेरी हॅसी बन्द ही हो गयी जब मैंने देखा कि छोटा मक मेरे पिता के घर जा रहा था। वह सीधा मेरे घर के अन्दर चला गया वहॉ वह कुछ देर तक रहा।

मैं दरवाजे के पीछे छिप कर उनकी बातें सुनना चाह रहा था। फिर मैंने देखा कि छोटा मक घर से बाहर निकल आया। मेरे पिता मेरे साथ थे। उन्होंने उसके साथ आदर से हाथ मिलाया और कई बार सिर झुका कर उसको विदा किया।

यह देख कर मेरा दिमाग कुछ परेशान रहा सो मैं कुछ समय तक तो अपने पिता के सामने ही नहीं पड़ा लेकिन फिर मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी तो मुझे घर के अन्दर जाना ही पड़ा। मैं सिर झुकाये हुए नीची गरदन करके अपने पिता से मिला।

मेरे पिता बड़ी गम्भीरता से बोले — "मैंने सुना है कि तुमने भले मक की बेइज़्ज़ती की। मैं तुम्हें आज इस भले मक की कहानी सुनाता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि उसके बाद तुम कभी उसका मजाक नहीं उड़ाओगे। पर पहले तुम्हें इसका हरजाना तो भुगतना ही पड़ेगा।"

इसका हरजाना था **25** कोड़े। जिन्हें उन्होंने मेरे शररि पर बड़ी सावधानी से और ईमानदारी से गिना। फिर उन्होंने लम्बे पाइप वाला हुक्का लिया उसकी आग जलायी और फिर मुझे इतनी ज़ोर से मारा जितना पहले कभी नहीं मारा था।

जब **25** कोड़े पड़ गये तो उन्होंने मुझे ध्यान से सुनने के लिये कहा और छोटे मक की कहानी सुनानी शुरू की।

X X X X X X X

छोटे मक के पिता जिनको मुकरा[77] पुकारते थे नाइकीया में रहते थे। वह गरीब थे पर एक इज़्ज़तदार आदमी थे। वह इसी

---

[77] Mukrah

तरह से एक रिटायर्ड आदमी की तरह से रहते थे जैसे कि अब उनका बेटा रहता है।

वह अपने बेटे को सहन नहीं कर सके क्योंकि वह बौना था। उन्होंने कभी उस पर ध्यान ही नहीं दिया और वह ऐसे ही बड़ा होता रहा।

जब छोटा मक अपने **17**वें साल में ही था खुश खुश रहा करता था उसका पिता जो एक गम्भीर आदमी था उसको अक्सर डॉटता रहता था। वह जब बच्चा ही था तो वह उसको अपने पैरों के नीचे कुचल देता कि वह अभी तक बेवकूफ और बच्चे जैसा था।

एक दिन उसका बूढ़ा पिता गिर पड़ा और उस गिरने की वजह से वह मर गया। अब क्या था छोटा मक अकेला रह गया। उसको कुछ आता भी नहीं था क्योंकि उसको कुछ सिखाया भी नहीं गया था।

उसके बेरहम सम्बन्धियों और रिश्तेदारों का उसके पिता के ऊपर बहुत उधार था। इतना कि वह उसे दे नहीं सकता था। सो उस बेचारे को घर से बाहर निकाल दिया और कहा कि अब वह दुनियॉ में जा कर अपनी किस्मत आजमाये।

छोटे मक ने कहा कि वह दुनियॉ में बाहर जाने के लिये तैयार था पर उसको उसके पिता के कपड़े दे दिये जायें। वे उसको दे दिये गये। उसका पिता एक बड़े साइज़ का आदमी था तो इस वजह से उसके कपड़े मक को फिट नहीं आये।

मक ने जल्दी ही उसका हल निकाल लिया। उसके नाप से जो कुछ ज़्यादा लम्बा था वह उसने कटवा कर छोटा कर लिया और तब उन कपड़ों को पहन लिया। वह यह भूल गया था कि उसको चौड़ाई भी कम करवानी थी। इसी लिये वह आज भी अजीब अजीब सी पोशाक पहनता है।

बड़ी वाली पगड़ी, चौड़ी वाली कमर की पेटी, चौड़ी चौड़ी पतलून, नीला शाल – यह सब उसके पिता का है और यह वह तभी से पहन रहा है। अपने पिता का लम्बा वाला डैमैस्कस[78] का चाकू भी वह अपनी कमर की पेटी से बॉधे रखता है। और छोटा सा डंडा ले कर वह घर से बाहर निकलता है।

खुशी खुशी वह इधर उधर घूमता रहता है क्योंकि उसको अपनी किस्मत सॅवारनी है। अगर उसको सड़क पर धूप में चमकता हुआ चीनी मिट्टी के बरतन का कोई टूटा टुकड़ा भी मिल जाता है तो वह उसको उठा लेता है। वह सोचता है कि वह उसके लिये हीरे में बदल जायेगा।

अगर उसको दूर कहीं किसी मस्जिद का कोई गुम्बद दिखायी दे जाता है या शीशे की तरह चमकता हुआ समुद्र दिखायी दे जाता तो उसको लगता है कि वह परियों के देश में आ गया है। पर ओह जब वह पास जाता है तो ये सब चीज़ें सब गायब हो जाती हैं।

---

[78] Damascus

वह थक जाता है और उसे भूख लग आती है। तब उसे विश्वास हो जाता है कि वह अभी भी दुनियाँ में ही है।

इस तरह से वह दो दिन तक घूमता रहा – भूखा और दुखी। वह अपनी किस्मत से बहुत निराश हो चुका था। मैदानों में जो कुछ उसे मिल जाता था वह उसी से अपना गुजारा करता था। सख्त जमीन पर सो जाता था।

तीसरे दिन उसको एक शहर दिखायी दिया जिसकी छतें चमकती रहती थीं। उसकी छत पर कई रंग के झंडे लहरा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे वे सब मक को बुला रहे थे।

आश्चर्य से वह उसे देखता खड़ा रह गया। काफी देर तक वह वहीं खड़ा खड़ा वह शहर और उसके आस पास की जगह की प्रशंसा करता रहा। उसको देख कर मक को लगा कि बस अब यहीं मक की किस्मत खुलेगी।

वह बहुत थका हुआ था फिर भी... या तो यहाँ या फिर कहीं नहीं। उसने अपनी सारी ताकत बटोरी और उस शहर की तरफ चल दिया। हालाँकि शहर पास ही दिखायी दे रहा था पर फिर भी वह वहाँ दोपहर से पहले नहीं पहुँच सका।

उसके छोटे छोटे पैरों ने अब उसको बिल्कुल जवाब दे दिया था सो वह मजबूर हो कर सुस्ताने के लिये एक खजूर के पेड़ के नीचे बैठ गया। थोड़ी देर बाद वह वहाँ से उठ कर शहर के दरवाजे पर पहुँचा।

उसने अपना शाल सँभाल कर ओढ़ा, अपनी पगड़ी अपने सिर के चारों तरफ और सुन्दरता से बाँधी, कमर की पेटी को और चौड़ा करके बाँधा, अपने चाकू को भी अपनी कमर से ठीक से लटकाया, अपने जूतों से धूल साफ की और फिर छड़ी को ठीक से पकड़ते हुए वह बहादुरी से शहर के दरवाजे के अन्दर घुसा।

वह कुछ सड़कों पर घूमता फिरा पर किसी ने कहीं भी उसके लिये दरवाजा नहीं खोला। जैसी कि वह आशा कर रहा था किसी ने उससे यह भी नहीं कहा "ओ छोटे मक आओ अन्दर आओ कुछ का पी कर अपने छोटे पैरों को आराम दे लो।"

तभी उसकी निगाह सामने खड़े एक बहुत सुन्दर मकान पर पड़ी। उसकी एक खिड़की खुली और उसमें से एक बुढ़िया ने अपनी मीठी आवाज में उससे कहा —

"आओ इधर आ जाओ। आज मैंने खीर बनायी है। खीर मेज पर रखी है। आओ इधर आओ और मेरी खीर खा कर जाओ। साथ में अपने पड़ोसियों को भी ले आओ। वे भी खीर खा कर जायें।"

मक उस घर में घुसा तो वहाँ उसने बहुत सारे कुत्ते और बिल्लियाँ देखे। एक पल को तो मक यह सोचता रह गया कि वह उस बुढ़िया का बुलावा स्वीकार करे या नहीं। पर फिर हिम्मत करके वह उस मकान के अन्दर चला गया।

उसके आगे आगे बिल्ली के दो भोले भाले बच्चे चल रहे थे सो उसने उनके पीछे पीछे चलते रहने का ही निश्चय किया क्योंकि शायद वे रसोईघर का रास्ता ज़्यादा अच्छी तरह से जानते थे।

जब मक सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर पहुँचा तो उसको वही बुढ़िया दिखायी दी जिसने उसको खिड़की में से अन्दर बुलाया था। वह कुछ नाराजी से बोली कि उसको क्या चाहिये।

छोटा मक बोला — "आपने सबको खीर खाने के लिये बुलाया है और क्योंकि मैं भूखा था तो मैं भी चला आया।"

बुढ़िया हँसी और बोली — "ओ अजीब आदमी तुम कहाँ से आये हो? सारा शहर जानता है कि मैं सिवाय अपनी प्यारी बिल्लियों के किसी और के लिये नहीं पकाती। और कभी कभी जैसा कि तुम देख रहे हो उनके पड़ोसियों के लिये तो बिल्कुल भी नहीं।"

यह सुन कर छोटे मक ने उसको बताया कि जब से उसके पिता चल बसे हैं वह कितनी परेशानियों से गुजर रहा है। उसने बुढ़िया से विनती की कि वह कम से कम उस दिन उसको अपनी बिल्लियों के साथ वहाँ खाने दे।

मक का यह साफ साफ कहना बुढ़िया को प्रभावित कर गया। उसका दिल पिघल गया और उसने उसको अपना मेहमान बनने की इजाज़त दे दी। उसने उसको बहुत सारा खाना खिलाया और पिलाया।

जब उसका पेट भर गया और वह ताजादम हो गया तो बुढ़िया उसकी तरफ कुछ देर तक देखती रही फिर बोली — "छोटे मक। तुम मेरे पास मेरी सेवा में रहो। तुमको कुछ करने की जरूरत नहीं है मैं तुम्हारी देखभाल करूँगी।"

मक को वह खीर बहुत अच्छी लगी थी सो वह वहाँ उसके पास रहने के लिये राजी हो गया और इस तरह से फ्रौ आवज़ी[79] का नौकर बन कर रहने लगा। वहाँ उसका काम बहुत हल्का सा और बस एक ही था।

फ्रौ आवज़ी के पास दो बिल्ले और चार बिल्लियाँ थीं। हर सुबह मक उनके बालों में कंघी किया करता था और उनके शरीर पर कोई कीमती तेल लगाया करता था।

जब फ्रौ बाहर जाती थी तब उसका काम उनकी देखभाल करना था। जब उनको खाना होता तो वह उनके कटोरे उनके सामने रख देता और शाम को वह उनको सुलाने के लिये रेशमी तकियों पर रख देता और उनको मखमल की चादर ओढ़ा देता।

बिल्लियों के अलावा उसके पास कुछ कुत्ते भी थे। उसको उनका भी काम करना पड़ता था। पर इनका उसको इतना सारा काम नहीं था जितना कि बिल्लियों का था। बिल्लियों को तो फ्रौ अपने बच्चों की तरह से रखती थी।

---

[79] Frau Ahavzi – name of the old woman who called him to eat porridge in her house.

इस तरह से मक एक रिटायर्ड आदमी की ज़िन्दगी जी रहा था जैसी कि वह अपने पिता के घर में जिया करता था। वह रोज कुत्ते बिल्लियों को ही देखता था।

काफी समय तक यह सब ठीक चलता रहा। छोटे मक को वहाँ खाना पीना तो खूब मिलता था पर उसको काम कुछ नहीं था।

बुढ़िया भी उससे बिल्कुल सन्तुष्ट थी। पर धीरे धीरे बिल्लियों का व्यवहार कुछ बदलने सा लगा। जैसे ही फ्रौ बाहर जाती वे कमरों में पागलों की तरह से घूमने लगतीं। कमरे में रखी चीज़ें नीचे गिरा देतीं। चीनी के बढ़िया कीमती बरतन तोड़ देतीं और फिर जो कुछ भी उनके रास्ते में आ जाये।

पर अजब सी बात जब वे अपनी मालकिन के कदमों के आने की आवाज सुनतीं तो वे अपने अपने तकियों पर जा कर बैठ जातीं और जब वह उसे देखतीं तो अपनी पूँछें हिलाने लगतीं जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

फ्रौ आवज़ी जब अपने कमरों की हालत देखती तो पागल सी हो जाती। वह इसकी सारी जिम्मेदारी छोटे मक पर ही डालती। वह अपनी पूरी ताकत के साथ अपने आपको अनजान बताता पर वह अपने नौकर के मुकाबले में अपनी बिल्लियों को ज़्यादा अच्छी समझती।

छोटा मक इस बात पर बहुत दुखी था कि यहाँ भी उसकी किस्मत नहीं चमकी। उसने तय कर लिया कि वह फ्रौ आवज़ी की नौकरी छोड़ देगा।

अपनी पहली यात्रा पर ही वह जान गया था कि जिसके पास पैसा नहीं होता वह कितनी बुरी तरह से रहता है। उसने तय कर लिया कि वह अपनी मालकिन से अपनी तनख्वाह ले लेगा जो उसने उसे देने का एक बार वायदा तो किया था पर दी कभी नहीं।

फ्रौ आवज़ी के घर में एक कमरा था जो हमेशा ही बन्द रहता था। उसके अन्दर क्या था इसका उसे पता ही नहीं था क्योंकि उसने उसमें कभी देखा ही नहीं था। पर कभी कभी उसने फ्रौ को उस कमरे में कुछ शोर मचाते सुना था।

उस कमरे में क्या था वह जानने के लिये अपनी जान की बाजी लगाने के लिये भी तैयार था। उसको कुछ ऐसा लग रहा था कि उसकी मालकिन ने उस कमरे में अपना खजाना रखा हुआ था। पर क्योंकि उसका दरवाजा बहुत कस कर बन्द रहता था इसलिये वह उसमें जा ही नहीं पाता था।

एक सुबह जब फ्रौ आवज़ी घर के बाहर चली गयी तो एक छोटे कुत्ते ने जिसको वह सौतेली माँ की तरह से रखती थी पर उसने भी मालकिन से बहुत सारा प्रेम पाया था छोटे मक की चौड़ी पतलून एक तरफ से पकड़ी और उसे खींचने लगा। इससे छोटे मक को लगा कि वह उसको कहीं ले जाना चाहता है।

मक हमेशा ही उसके साथ प्यार से खेला करता था सो वह उसके पीछे पीछे चल दिया। उसने देखा कि वह कुत्ता उसको अपनी मालकिन के सोने वाले कमरे की तरफ खींचे लिये जा रहा है।

वह बीच में एक दरवाजे के सामने रुका जिस पर छोटे मक ने पहले कभी गौर ही नहीं किया था। दरवाजा खुला पड़ा था। कुत्ता उसके अन्दर घुसा और उसके पीछे पीछे मक भी। मक तो उस कमरे में जा कर बहुत खुश हो गया जिसके बारे में उसको जानने की और देखने की कितने दिनों से उत्सुकता थी।

उसने चारों तरफ पैसे ढूँढने की कोशिश की पर वह तो उसको कहीं दिखायी ही नहीं दिया। वहाँ तो केवल पुराने कपड़े और अजीब ढंग के फूलदान ही बिखरे पड़े थे।

एक फूलदान ने उसका ध्यान आकर्षित कर लिया। वह क्रिस्टल का बना हुआ था और उस पर बहुत बढ़िया शक्लें खुदी हुई थीं। उसने उसे उठा लिया और उसे चारों तरफ घुमा फिरा कर देखने लगा।

पर ओह यह क्या? वह तो डर ही गया। उस फूलदान का तो एक ढक्कन भी था जो उसके ऊपर बस ऐसे ही रखा हुआ था बन्द नहीं था। सो उलट पलट कर देखने में उसका वह ढक्कन नीचे गिर गया और उसके हजारों टुकड़े हो गये। काफी देर तक बेचारा छोटा मक डर के मारे हिल भी न सका और ऐसे ही खड़ा रहा।

अब उसकी किस्मत निश्चित हो चुकी थी। अब उसको वहॉ से भाग जाना चाहिये नहीं तो वह एक स्त्री के हाथों मारा जायेगा। बस वह तुरन्त ही वहॉ से भाग निकला उसने बस केवल एक बार अपने चारों तरफ यह देखने के लिये देखा कि वह अपनी यात्रा पर फ़ौ की कोई चीज़ इस्तेमाल कर सकता था या नहीं।

इस पर उसको एक बहुत बड़े साइज़ के जूते दिखायी दे गये। यह सच है कि वे सुन्दर तो नहीं थे पर उसके अपने जूते भी अब ज़्यादा चलने वाले नहीं थे। उधर उस जूते का साइज़ भी ऐसा था कि अगर वह उनको पहन लेता तो चलते फिरते लोग उसको देखने पर मजबूर हो जाते।

उसने तुरन्त ही अपने जूते उतार दिये और वे नये वाले जूते पहन लिये। एक कोने में शेर के सिर वाली छड़ी बेकार ही खड़ी हुई थी वह भी उसको ले जाने लायक लगी सो उसने वह भी उठायी और उस कमरे से बाहर निकल गया।

वह जल्दी से अपने कमरे में आया अपना शाल ओढ़ा अपने सिर पर अपने पिता की पगड़ी ठीक की चाकू अपनी कमर की पेटी में खोंसा और जितनी तेज़ उससे भागा जा सका भाग लिया – घर से बाहर और फिर शहर के बाहर।

मालकिन का डर उसे वहॉ से दूर और और दूर भगाये लिये जा रहा था। वह वहॉ जा कर रुका जहॉ तक पहुँचते पहुँचते वह थक नहीं गया और उसके पैरों ने आगे जाने से मना नहीं कर दिया।

वह अपनी ज़िन्दगी में कभी भी इतनी तेज़ नहीं भागा था। उसको ऐसा लग रहा था जैसे कि वह अपने भागने में कभी रुकेगा ही नहीं। कोई अनदेखी ताकत उसे भगाये लिये जा रही थी।

बाद में उसको ख्याल आया कि यह ताकत उसमें उन नये जूतों की वजह से आयी होगी। उसने खड़े होने की बहुत तरीके से कोशिश की पर वह तो किसी तरह इस काम में सफल ही नहीं हो सका।

आखिर जब वह बहुत परेशान हो गया तो वह अपने आपसे ही चिल्ला कर बोला "वो वो।" बस तभी वे जूते रुक गये और मक थक कर चूर चूर हुआ जमीन पर नीचे गिर पड़ा।

अब ये जूते तो उसके लिये बड़ी खुशी की बात थी। इस तरह से अपनी सेवाओं के बदले में उसने कुछ तो पा ही लिया था जो उसे दुनियॉ में उसकी किस्मत ढूँढने में सहायता करता।

बहुत खुश होने के बावजूद थकान की वजह से उसे बहुत जल्दी ही नींद आ गयी क्योंकि छोटे मक का इतना भारी सिर अब उसकी गरदन पर सीधा नहीं रखा रह सकता था।

सोते में उसने सपने में वही छोटा कुत्ता देखा जो उसको फ्रौ आवज़ी के घर में उसके उस छिपे हुए कमरे में ले कर गया था।

उसने उससे कहा — "प्यारे मक तुमने इन जूतों के इस्तेमाल करने का पूरा राज़ तो अभी तक जाना ही नहीं। अब तुम सुनो। अगर तुम इन जूतों को पहन कर अपनी एड़ी पर दॉयी तरफ को

तीन बार घूम जाओ तो जिधर तुम चाहो उधर ही तुम उड़ सकते हो।

और वह जो छड़ी तुम ले गये हो उसकी सहायता से तुम खजाने पा सकते हो। जहाँ सोना गड़ा होगा वहाँ यह छड़ी जमीन को तीन बार मारेगी और जहाँ चाँदी गड़ी है वहाँ यह जमीन को दो बार मारेगी।

इस तरह से छोटे मक ने यह सपना देखा।

जब वह सो कर उठा तो वह अपने इस सपने पर विचार करने लगा। वह सब जान कर उसको इतनी खुशी हुई कि उसने जूतों को तुरन्त ही जाँचने का फैसला कर लिया।

उसने अपने जूते पहने अपना एक पैर ऊपर उठाया और दूसरे पैर की एड़ी पर तीन बार घूमने की कोशिश की। पर जिसने भी यह कोशिश यानी इतने बड़े जूते में घूमने की कोशिश की उसको कोई आश्चर्य नहीं था कि वह ऐसा क्यों नहीं कर सका। खास करके जबकि उसका भारी सिर इस घूमने में इधर उधर गिरता रहा।

वह बेचारा छोटा आदमी बार बार गिर जाता और बार बार उसकी नाक में चोट लग जाती। लेकिन फिर भी वह एक बार और कोशिश करने की आशा में लगा ही रहा। आखिर वह इस काम में सफल हो ही गया।

वह अपनी एड़ी पर पहिये की तरह घूमा और इच्छा प्रगट की कि वह सबसे पास के एक बड़े शहर में जाना चाहता है। बस जूते

उसको ले कर आसमान में उड़ चले और बादलों में से हो कर तेज़ तेज़ भागने लगे।

और इससे पहले छोटा मक यह जान पाता कि वह क्या करे उसने अपने आपको एक बड़े बाजार में पाया जहॉ बहुत सारी दूकानें लगी हुई थीं। और बहुत सारे लोग वहॉ इधर से उधर घूम रहे थे। वह उन्हीं के साथ घूमने लगा पर उसको किसी ऐसी सड़क पर जाने की बहुत इच्छा हो रही थी जिस पर कम लोग चल रहे हों।

क्योंकि उस बाजार में उसका एक जूता उसको जल्दी जल्दी घसीट रहा था कि वह बार बार गिरने से बच जाता था या फिर अपने बाहर की तरफ निकले चाकू के साथ लोगों से टकरा जाता था। बड़ी मुश्किल से वह अपने को उनके टकराव को बचा पा रहा था।

छोटे मक ने अब गम्भीरतापूर्वक विचार किया कि अब उसे पैसा कमाने के लिये क्या करना चाहिये। यह सच है कि अभी उसके पास वह लकड़ी की छड़ी थी जिससे वह छिपे हुए खजाने का पता चला सकता था पर वह यह कैसे पता चलाये कि सोना कहॉ छिपा हुआ है।

ऐसी हालत में उसने पैसे के लिये अपने आपको दिखा दिया था। पर इस बात के लिये उसको अपने ऊपर बड़ा घमंड था। पर उसको अपनी कोशिश का फल जल्दी ही मिल गया। उसको लग

रहा था कि इस काम में शायद ये जूते भी उसकी सहायता कर सकें।

बस उसने आपको एक कूरियर[80] बना लिया। उसने सोचा कि राजा की इस तरह से सेवा करके उसे ज़्यादा पैसे मिलेंगे सो उसने वहाँ के लोगों से राजा का महल के बारे में पूछा।

अब राजा के महल के दरवाजे पर एक पहरेदार खड़ा था। पहरेदार ने उसको वहाँ आया देख कर उससे पूछा कि उसको क्या चाहिये। उसने उससे कहा कि वह किसी नौकरी की खोज में है। पहरेदार उसको दासों के ओवरसीयर[81] के पास ले गया।

राजा के पास पहुँचने से पहले ही उसने पहरेदार से विनती की कि वह उसे शाही कूरियर की नौकरी दिलवा दे। ओवरसीयर ने सिर से पैर तक देख कर उसका नाप लिया और पूछा कि तुम्हारे इतने छोटे छोटे तो पैर हैं जो एक बालिश्त लम्बे ही होंगे और तुम शाही कूरियर की टीम में शामिल होना चाहते हो। चले जाओ यहाँ से। मैं हर बेवकूफ के साथ अपना समय बरबाद नहीं कर सकता।

छोटे मक ने उसको विश्वास दिलाया कि यह बात उसने गम्भीरतापूर्वक सोच समझ कर ही कही है। वे उसका काम देख लें कि वह यह काम सबसे ज़्यादा तेज़ कर सकता है या नहीं तभी वह उसको तनख्वाह दे।

---

[80] Courier – who takes anything with speed

[81] Overseer who used to employ slaves

ओवरसीयर को यह बात जॅच गयी। उसने उससे कहा कि वह शाम को एक दौड़ के लिये तैयार रहे। फिर वह उसको रसोईघर में ले गया और वहॉ उसको पेट भर कर खाना खिलाया और पिलाया। वह उस छोटे आदमी और उसकी नौकरी के बारे में बताने के लिये खुद राजा के पास चला गया।

राजा बहुत ही खुशदिल राजा था सो यह बात सुन कर वह बहुत खुश हुआ कि उसके ओवरसीयर ने एक छोटे आदमी को उसका मन बहलाने के लिये रख लिया है।

राजा ने उससे कहा कि वह दौड़ की तैयारी महल के पीछे वाले बड़े घास के मैदान में करे ताकि उसके सभी दरबारी यह दौड़ आसानी से देख सकें। और एक बार फिर उसको सावधान किया कि वह उस बौने का खास ख्याल रखे।

जब दौड़ का समय आया तो सब लोग बड़े उत्साह से दौड़ देखने के लिये बैठे। और बहुत सारे लोग भी इस दौड़ को देखने के लिये मैदान में आ गये जहॉ उस बौने की डींग देखी जाने वाली थी।

जब राजा रानी राजकुमार और राजकुमारियॉ सब अपनी अपनी जगह पर बैठ गये तो छोटा मक मैदान में आया तो उसने शाही परिवार के आगे काफी नीचे तक झुक कर आदाब किया।

जैसे ही सबने उस अजीब से आदमी को देखा तो सब लोग खुशी से चिल्ला पड़े। उन सबने ऐसा आदमी पहले कभी कहीं नहीं देखा था।

एक छोटा सा लड़का जिसके छोटे से शरीर पर बहुत बड़ा सा सिर था जिसका छोटा सा शाल था जिसकी चौड़ी सी पतलून थी जिसकी कमर की चौड़ी सी पेटी में लम्बा सा चाकू लगा हुआ था जिसके छोटे छोटे पैरों में बड़े से जूते थे।

यह एक ऐसा दृश्य था जिसको देख कर उन सबसे ज़ोर से हँसे बिना न रहा गया। छोटे मक को उनके हँसने से कोई अन्तर नहीं पड़ा। वह बड़े गर्व से मैदान में अपनी छड़ी के सहारे आगे की तरफ बढ़ा और अपने मुकाबले में दौड़ने वाले का इन्तजार करने लगा।

छोटे मक की अपनी इच्छा के अनुसार ओवरसीयर ने अपना सबसे अच्छा दौड़ने वाला चुना था। वह भी अन्दर आया और छोटे मक के साथ आ कर खड़ा हो गया। दोनों भागने के लिये इशारे का इन्तजार करने लगे।

राजकुमारी अमरज़ा[82] ने अपना परदा हिला कर इशारा किया और जैसे दो तीर अपने निशाने की तरफ भागते हैं उसी तरह से दोनों घास के मैदान पर भागने लगे।

सबसे पहले शाही कूरियर ने एक बहुत ऊँची छलाँग मारी पर मक ने उसका अपने जूते में ही पीछा किया। वह उसके बराबर में आया और फिर उससे आगे निकल गया। जहाँ तक उनको दौड़ना था वहाँ पहुँच कर वह कूरियर का इन्तजार करने लगा जबकि उसका साथी हाँफता हुआ चला आ रहा था।

---

[82] Princess Amarza

देखने वाले आश्चर्य से यह दौड़ देख रहे थे। राजा सबसे पहला आदमी था जिसने तालियाँ बजायीं। उसके बाद जमा भीड़ खुशी से चिल्लायी — "ओ छोटे मक ज़िन्दाबाद तुम दौड़ में जीत गये।"

इस बीच वे छोटे मक को ऊपर ले आये। वह राजा के सामने लेट गया और बोला — "ओ ताकतवर राजा। यह मैंने आपको अपनी दौड़ का एक बहुत छोटा सा नमूना दिखाया है। मेहरबानी करके मुझे अपने कूरियर की टीम में शामिल कर लीजिये।"

राजा बोला — "नहीं प्यारे मक। तुम तो मेरे सबसे प्यारे सन्देश ले जाने वालों में रहोगे। और मेरे आसपास ही रहोगे। हर साल तुमको तुम्हारी तनख्वाह के लिये 100 सोने के टुकड़े मिलेंगे और रोज तुम मेरे नीचे वाले नौकरों के साथ खाना खाओगे।"

इससे मक को लगा कि आज उसकी किस्मत बन गयी है जिसकी तलाश में वह इतने दिनों से घूम रहा था। वह बहुत खुश था आज उसका दिल बहुत हल्का हो गया था। राजा का यह ऐहसान पा कर उसने खुशियाँ मनायीं।

राजा ने उसे इस काम के लिये रख लिया कि जहाँ उसको सबसे जल्दी और कोई प्राइवेट सन्देश भेजना होता था तो उसे वह छोटे मक के हाथों ही भेजता था। वह राजा का यह काम बड़े विश्वास के साथ और जल्दी से जल्दी करता था।

पर राजा के दूसरे नौकर उसकी इस बात से ख़ुश नहीं थे क्योंकि उन्होंने देखा कि राजा अब उनको उतना नहीं चाहता था जितना कि मक के आने से पहले चाहता था। मक को तो बस सिवाय दौड़ने के कोई और काम करना आता ही नहीं था।

उन्होंने आपस में कई बार उसको नष्ट करने की तरकीब निकालने के लिये मीटिंग की पर सब बेकार गयीं। क्योंकि राजा को अपने उस नये कूरियर पर बहुत विश्वास था।

छोटे मक के ऊपर इन सब बातों का कोई असर नहीं था। उसने उनसे बदला लेने की भी नहीं सोची क्योंकि उसका दिल बहुत अच्छा था। बल्कि उसने सोचा कि वह कोई ऐसी तरकीब निकाले जिससे वह अपने दुश्मनों का भी प्यारा हो जाये और उनके लिये उनकी जरूरत बन जाये।

सो उसने अपने डंडे के बारे में सोचा जिसको अभी तक उसने जॉचा ही नहीं था। उसको लगा कि अगर उसको खजाना हाथ लग जाये तो बड़े लोग उसको और ज़्यादा प्यार करेंगे।

वह अक्सर सुना करता था कि इस राजा के पिता ने जब उनके ऊपर दुश्मनों ने हमला कर दिया था तो बहुत सारा सोना गाड़ दिया था। इसके अलावा वह अपने बेटे को यह भेद बताये बिना ही मर गया था। तबसे मक इस आशा में अपनी छड़ी लिये ही घूमता था कि पता नहीं कब उसको वह सोना मिल जाये।

एक दिन वह महल के बागीचे के किसी दूर के हिस्से में घूम रहा था जहाँ वह पहले कभी नहीं गया था। कि अचानक उसने अपने हाथ की छड़ी हिलती हुई महसूस की। उसने तीन बार जमीन को मारा। वह तुरन्त ही जान गया कि इस तह उसके तीन बार जमीन को मारने का क्या मतलब था।

उसने तुरन्त ही अपना चाकू निकाला उस जगह के आसपास के पेड़ों पर निशान लगाया और महल वापस चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने एक फावड़ा लिया और अपना काम करने के लिये रात का इन्तजार करने लगा।

खजाना खोदने का काम जितना उसने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा मुश्किल निकला। उसकी बाँहें बहुत कमजोर थीं उसका फावड़ा बहुत लम्बा और भारी था। वह हो सकता है कि दो घंटे ही काम करके चुका हो कि उसका फावड़ा किसी सख्त चीज़ से टकराया। उसको लगा जैसे वह किसी लोहे से टकराया हो।

वह और ज़्यादा मेहनत से उस जगह की खुदायी करने लगा। वहाँ उसको एक बहुत बड़ा ढक्कन मिल गया। यह देखने के लिये कि उस ढक्कन के नीचे क्या है वह उस गड्ढे में नीचे उतरा तो देखा कि वहाँ तो सोने के सिक्कों से भरा एक बहुत बड़ा बरतन रखा हुआ था।

उसकी कमजोर अक्ल उसे यह नहीं बता सकी कि वह उस बरतन को निकाल ले। उसने उसमें से जितना उससे लिया जा सका

उतने सोने के सिक्के अपनी पतलून और कमर की पेटी में भर लिये। उसने उनको अपने शाल में भी भर लिया और बाकी बचे हुए सिक्कों को सावधानी से ढक कर वहीं छोड़ दिया।

वह सब बोझ उसने अपनी पीठ पर लाद लिया। अगर उसके पैरों में जूते न होते तो वह तो वहाँ से हिल भी नहीं सकता था। उस सोने का बोझ ही इतना भारी था। खैर वह सबसे छिप कर अपने कमरे में पहुँच गया और सारा सोना उसने अपने सोफा की गद्दियों के नीचे छिपा दिया।

जब छोटे मक ने अपने पास इतना सारा सोना देखा तो उसको लगा कि अब तो उसकी किस्मत बदल गयी। उसने उस पैसे की सहायता से दरबार में जे उसके दुश्मन थे उनको अपना दोस्त और अपना भला चाहने वाला बना लिया। पर इसमें भी क्योंकि छोटे मक को कोई ज़्यादा ज्ञान नहीं था वरना इस सोने से वह सच्चे दोस्त खरीद सकता था।

उसने फिर अपने जूते पहने और अपना शाल भर कर सोने के सिक्के बटोरे और वहाँ से दबे पैरों भाग लिया। वह सोना जो छोटे मक ने अब तक खुले हाथों से बाँट दिया था उसने दरबार में उसके साथियों के दिल में उसके लिये जलन पैदा कर दी।

रसोइया आहुली[83] बोला — “यह धोखेबाज है।”

[83] Ahuli – name of the cook

ओवरसीयर अश्मत बोला — "लगता है इसने राजा की खुशामद की है।"

लेकिन अरशाज़[84] खजॉची जो छोटे मक का सबसे बड़ा दुश्मन था जो खुद राजा के खजाने में से कभी कभी चोरी कर लिया करता था बोला — "यह चोर है।"

सो यह जानने के लिये कि असल बात क्या थी उन्होंने आपस में सलाह की और एक दिन राजा को शराब पिलाने वाला कोरशूज़[85] राजा के सामने बड़ी रोनी सी और दुखी सूरत ले कर राजा के सामने हाजिर हुआ। उसकी शक्ल ऐसी थी कि राजा ने उससे पूछा कि बात क्या है तुम ऐसे कैसे आये हो।

वह बोला — "आह। मुझे लगता है कि मालिक मुझ पर कुछ नाराज हैं।"

राजा बोला — "तुम ऐसा कैसे सोचते हो कोरशूज़। मैंने तुम्हें कब अपना प्यार नहीं दिया।"

शराब पिलाने वाले ने कहा — "आपने अपने प्रिय कूरियर को तो बहुत सारा पैसा दिया है पर अपने गरीब वफादार नौकरों को कुछ भी नहीं दिया।"

अपने ऊपर यह झूठा इलजाम सुन कर राजा तो यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया। इस पर कोरशूज़ ने राजा को मक के सोना

---

[84] Archaz – name of the Treasurer

[85] Korchuz – name of the cup-bearer of the King

बॉटने की कहानी सुनायी। इस तरह से जालसाज़ी करने वालों ने राजा को यह विश्वास दिला दिया कि छोटे मक ने खजाने में से चोरी की है।

अब खजॉची के लिये तो इस बात का यह बड़ा अच्छा तोड़ था जो अपने खजाने का हिसाब अपनी इच्छा से नहीं देना चाहता था। राजा ने हुकुम दिया कि बौने की सारी गतिविधियों पर बहुत अच्छे से ध्यान रखा जाये ताकि वह अगर ऐसा कुछ करे तो उसे वह काम करते पकड़ा जा सके।

इस बुरे दिन की रात को ही मक को लगा कि उसके पास के पैसे खत्म हो गये हैं सो उसने सोचा कि वह गड्ढे में से पैसे निकाल लाये। सो उसने अपना फावड़ा उठाया और महल के बागीचे की तरफ चल दिया ताकि वह वहॉ से अपना नया भंडार भर सके।

पहरेदार तो उसके पीछे लगे थे सो वे भी उसके पीछे पीछे चल दिये। पहरेदारों में आहुली रसोइया और अरशाज़ खजॉची सबसे आगे थे।

जैसे ही मक ने बरतन में से सोना निकाल कर अपने शाल में भरा वे सब उसके ऊपर टूट पड़े। उसको बॉध कर वे तुरन्त ही उसे राजा के पास ले गये।

राजा की नींद में खलल पड़ा तो राजा ने मक को बहुत बुरी तरह से देखा और उसको तुरन्त ही दरबार में हाजिर होने का हुकुम दिया। इस बीच उन्होंने उस गड्ढे में से सोने से भरा वह बरतन

निकाल लिया और उसको सिक्के भरे शाल के साथ राजा के साथ रख दिया।

खजॉची बोला कि उसने अपने पहरेदारों के साथ मक को ठीक उस समय पकड़ लिया था जब वह इस बरतन को जमीन में गाड़ रहा था। राजा ने मक से पूछा कि क्या यह बात सच थी। और यह सोना उसके पास कहाॅ से आया।

छोटा मक को पता था कि उसने कोई जुर्म नहीं किया है। वह बोला कि उसको यह बरतन महल के बागीचे में मिला था। उसने उसको गाड़ा नहीं था बल्कि वह तो उसको मिला था।

अपनी रक्षा में यह बात सुन कर सब हॅस पड़े।

राजा बोला — "ओ नीच। क्या तू सोना चुराने के बाद अपने राजा से इतनी बेशरमी के साथ ऐसा झूठ बोलेगा। खजॉची अरशाज़ मैं तुम्हें हुकुम देता हूॅ कि तुम इसे देख कर मुझे यह बताओ कि क्या यह वही पैसा है जो हमारे खजाने से चुराया गया है।"

खजॉची ने जवाब दिया कि वह यकीन के साथ कह सकता था कि यह वही पैसा था। और इतना ही नहीं बल्कि इससे भी ज़्यादा सोना खजाने में से गायब था। इसके लिये वह कसम खा सकता था कि यह वही सोना है।

फिर उसने हुकुम दिया कि वह मक को जंजीरों से बॉध कर जेल में डाल दें। खजॉची से उसने कहा कि वह इस सारे सोने को खजाने में डाल दे। खजॉची यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने

वह सोना लिया और उन चमकते हुए टुकड़ों को गिनने के लिये घर ले गया।

पर उस बुरे आदमी ने यह कभी नहीं बताया कि उस बरतन में एक चिट्ठी भी थी जिसमें लिखा था "दुश्मन मेरे राज्य में आ गया है इसलिये मैं अपने खजाने का एक हिस्सा इस बरतन में छिपा रहा हूँ। जिसको भी यह मिले अगर वह इसे मेरे बेटे को वापस न करे तो राजा का उस पर शाप पड़े। राजा सादी।"

बेचारा मक अपने तहखाने में पड़ा पड़ा दुखी होता रहा। वह जानता था कि शाही सम्पत्ति को लेने की सजा मौत है लेकिन फिर भी वह राजा पर अपनी छड़ी का भेद नहीं खोल सकता था।

क्योंकि इससे उसे अपनी दोनों चीज़ें खोनी पड़तीं – वह छड़ी भी और वे जूते भी। इस समय तो उसके जूते भी उसकी कोई सहायता नहीं कर पा रहे थे क्योंकि उसको यहाँ रखने वाले उसको दीवार से बाँध गये थे। और अगर वह वहाँ से छूटने की कोशिश भी करता तो उसे बहुत तकलीफ होती। इस हालत में वह अपनी एड़ी पर भी नहीं घूम सकता था।

खैर अगले दिन उसको मौत की सजा सुनायी गयी तो उसने सोचा कि छड़ी के साथ मर जाने से बिना छड़ी के ज़िन्दा रहना ज़्यादा अच्छा है। सो उसने राजा से अकेले में मिलने की इजाज़त माँगी और उस पर अपना सारा भेद खोल दिया।

पहले तो राजा ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया पर छोटे मक ने उसको इस शर्त पर साबित करने का वायदा किया कि वह उसको मारेगा नहीं। राजा ने उससे इस बात का वायदा कर दिया।

उसने मक को बताये बिना एक जगह सोना गाड़ दिया और फिर उससे कहा कि वह अपनी छड़ी से उसे ढूँढे। कुछ पलों में ही उसने उसे ढूँढ दिया क्योंकि छड़ी ने जमीन पर उस जगह तीन बार मारा।

तब राजा को पता चला कि उसके खजाँची ने उसे धोखा दिया है सो उसने अपनी रीति के अनुसार उसे पूर्व में एक रेशमी रस्सी के साथ भेज दिया जहाँ वह अपने आपको अपना गला घोट कर मार सके।

छोटे मक से उसने कहा — "मैंने तुझे ज़िन्दगी देने का वायदा तो किया है पर मुझे ऐसा लगता है कि तेरे पास इस छड़ी से सम्बन्धित कोई और भी राज़ है। अगर तूने मुझे वह राज़ नहीं बताया कि तेरी छड़ी और तेरे तेज़ भागने में क्या सम्बन्ध है तो तू हमेशा मेरी कैद में रहेगा।"

एक दिन छोटे मक की उस तहखाने में रहने की इच्छा बिल्कुल खत्म हो गयी तो उसने राजा को बता दिया कि उसका सारा राज़ उसके जूतों में है। लेकिन फिर भी उसने राजा को ऐड़ी पर तीन बार घूमने की बात नहीं बतायी।

राजा ने वे जूते खुद पहन कर देखे कि मक सच बोल रहा था या नहीं और उनको पहन कर बागीचे में पागलों की तरह दौड़ा। कई बार उसने चाहा कि वह रुक जाये पर उसको पता ही नहीं था कि उनको चलने से कैसे रोकना है।

मक को लगा कि वह उससे इस तरह अपना बदला ले रहा है चुप ही रहा और उसे घूमने देता रहा जब तक वह थक कर चूर हो कर गिर नहीं पड़ा।

राजा को जब होश आया तो वह छोटे मक पर बहुत गुस्सा हुआ जिसने उसको तब तक घूमने दिया जब तक कि उसकी साँस नहीं उखड़ गयी।

फिर वह बोला — "मैंने तुझे ज़िन्दगी देने और छोड़ देने का वायदा किया है सो अब तू जा सकता है पर **12** घंटे के अन्दर अन्दर तू मेरे राज्य से निकल जा नहीं तो मुझे तुझे फाँसी लगानी पड़ेगी।" छड़ी और जूते उसने अपने खजाने वाले कमरे में रखवा दिये।

इस तरह से पहले की तरह से गरीब हो कर वह उसके राज्य में घूमता रहा और अपनी बेवकूफी को कोसता रहा जिसकी वजह से वह इस हालत में पहुँचा था और जिसने उसे दरबार में इतना खास काम करने से रोका था।

वह देश जहाँ से उसे देश निकाला मिला था खुशकिस्मती से कोई बहुत बड़ा देश नहीं था सो वह आठ घंटों में ही उसकी हद तक आ

गया। पर अब वह क्योंकि अपने खास जूतों को पहन कर चलने का आदी हो गया था इसलिये अब उसको बिना उनके मुश्किल पड़ने लगी।

राज्य की हद तक आने के बाद उसने सामान्य सड़क ली और वहाँ से एक बहुत घने जंगल में आ पहुँचा। उसको सब आदमियों से नफरत हो गयी थी सो उसने वहीं अकेले रहने का निश्चय किया। बहुत ही घने जंगल में उसको एक ऐसी जगह मिल गयी जो उसकी इच्छा अनुसार ठीक थी।

वहीं साफ पानी की एक नदी थी जिसके चारों तरफ अंजीर के पेड़ लगे हुए थे। मुलायम घास का मैदान था जो उसे बहुत सुन्दर लग रहा था।

वह वही नीचे लेट गया और सोचा कि वह अब खाना नहीं खायेगा बल्कि शान्ति से अपनी मौत का इन्तजार करेगा। अपनी दुखी मौत के बारे में सोचते सोचते वह सो गया। जब वह सो कर उठा तो उसे बहुत भूख लग आयी थी।

उसको लगा कि भूखे मरना एक बहुत ही तकलीफदेह काम है। सो वह चारों तरफ कुछ खाने के लिये ढूँढने लगा।

बहुत सन्दर पकी हुई अंजीरें उसी पेड़ से लटक रही थीं जिसके नीचे वह सोया हुआ था। उसने अपना हाथ बढ़ाया और उस पेड़ से

कुछ अंजीरें तोड़ लीं। उसने उनको खाया तो वे तो बहुत स्वादिष्ट थीं।

अंजीर खा कर वह नदी में उतर गया ताकि वह उसमें से पानी पी सके। पर यह क्या वह तो पानी में अपना चेहरा देखते ही डर गया। उसके सिर पर तो बड़े से कान उग आये थे और उसकी नाक मोटी और लम्बी हो गयी थी।

आश्चर्य में भर कर उसने अपने कानों पर ताली बजायी। वे कान तो उसके आधा ऐल[86] से भी ज़्यादा लम्बे थे। वह बोला "मैं तो इसी लायक हूँ कि मेरे गधे के से कान हों। क्योंकि मैं एक गधे की तरह से अपनी खुशकिस्मती को रौदता हुआ चला आया।"

वह वहीं पेड़ों के बीच में काफी देर तक घूमता रहा कि उसे फिर से भूख लग आयी सो एक बार फिर उसे अंजीर के पेड़ की तरफ ही जाना पड़ा क्योंकि वहाँ उसके खाने के लिये और कुछ था ही नहीं। जब उसने दोबारा अंजीर खायीं तो उसको लगा कि उसके लम्बे कान उसकी पगड़ी के नीचे तक आ गये हैं।

अब वह पहले जैसा गधे के कान वाला नहीं लग रहा था जो लोग उस पर हँसें। सो उसने कुछ अन्तिम अंजीरें खायीं तो उसने देखा कि अब तो उसके कान बिल्कुल ही सामान्य हो गये हैं।

[86] Ell is measure of length. 1 Ell = 45", so ½ Ell = approx.20-22"

वह फिर से उस नदी के पास गया और उसमें अपनी परछाँई देखी तो अब सब कुछ सामान्य था। न तो उसके कान ही लम्बे थे और न ही उसकी नाक मोटी और लम्बी।

जल्दी ही उसकी समझ में आ गया कि यह सब क्या हुआ होगा। पहले पेड़ की अंजीरें खा कर उसके नाक कान लम्बे हो गये होंगे और दूसरे पेड़ की अंजीरें खा कर वे सब सामान्य हो गये। यह सोच कर वह एक बार फिर से बहुत खुश हो गया कि अल्लाह ने एक बार फिर से उसकी गोद में उसकी खुशकिस्मती डाल दी है।

उसने दोनों पेड़ों से जितनी भी अंजीरें उससे तोड़ी जा सकीं उतनी उसने तोड़ लीं और उनको ले कर जिस देश से वह आया था उसी देश वापस चला गया।

वहाँ पहुँच कर सबसे पहले उसने अपने कपड़े बदल कर अपना वेश बदला और फिर राजा के शहर चल दिया।

करीब करीब एक साल से वहाँ पके हुए फल मिलने बहुत मुश्किल हो रहे थे। छोटा मक महल की तरफ चला और उसके दरवाजे तक जा पहुँचा। वह पहले जहाँ रहता था वहाँ से महल का रास्ता उसका जाना पहचाना था।

साथ में उसको यह भी मालूम था कि वहाँ राजा का रसोइया ऐसी मुश्किल से मिलने वाली चीज़ों को बहुत जल्दी खरीद लेता था। मक को वहाँ ज़्यादा देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। जल्दी

ही उसने देखा कि कई शाही लोग उस ऑगन को पार करके बाहर जा रहे थे।

उन्होंने महल के दरवाजे पर रखी हुई उन कीमती चीज़ों को देखा जिन्हें सौदागरों ने वहॉ बेचने के लिये रखा हुआ था क्योंकि उन लोगों में एक आदमी उसकी जान पहचान का भी था। उसकी निगाह मक के पास रखी हुई अंजीर भरी टोकरियों पर पड़ गयी।

उसके मुॅह से निकला "आह कितनी रसीली अंजीरें हैं। इनको तो खा कर राजा बहुत खुश होंगे।"

उसने मक से पूछा — "इस अंजीर की टोकरी क्या दाम हैं?"

मक ने उसकी बड़ी ऊॅची कीमत बतायी पर फिर भी सौदा तय हो गया। रसोइये ने वह टोकरी अपने एक दास को थमा दी और वहॉ से चला गया।

इस बीच मक भी वहॉ से चुपचाप उठ कर चला गया क्योंकि उसे डर था कि अगर उसकी ये अंजीरें किसी दरबारी ने खायी तो उसके नाक कान बड़े हो जायेंगे फिर उसकी खोज होगी और वह पकड़ा जायेगा और उसे सजा मिलेगी।

राजा जब खाना खाने बैठा तो आज वह अपने रसोइये से बहुत खुश था। उसकी अच्छी रसोईघर के लिये भी और उसके इस बात के ख्याल रखने के भी कि वह राजा को इस तरह से मुश्किल से मिलने वाली चीज़ें खिलाया करता था।

खाना परसने वाले को तो पता था कि अब क्या चीज़ आने वाली है सो उसने उसके बारे में बस कुछ शब्द ही बोले — "अभी तो सारा दिन बाकी है। सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। यानी जिसका अन्त अच्छा होता है वह चीज़ अच्छी होती है।"

यह सुन कर राजकुमारियाँ बड़ी उत्सुकता से इन्तजार कराने लगीं कि अब हमारा बैरा हमारे लिये क्या लाने वाला है।

जैसे ही बैरे ने सुन्दर अंजीरें मेज पर ला कर रखीं मेज पर बैठे सभी लोगों के मुँह से एक ओह निकल गयी। राजा बोला — "ओह ये कितनी पकी हुई हैं कितनी सुन्दर हैं। रसोइये तुम तो बस हमारे दिल की आत्मा हो। तुमको तो हमारा पूरा प्यार मिलना चाहिये।"

ऐसा कह कर राजा ने जो ऐसी चीज़ों की बहुत कद्र करता था अपने हाथ में उन अंजीरों को उठाया और मेज पर बैठे सब लोगों में बाँट दीं।

हर राजकुमार और राजकुमारी को दो दो अंजीरें मिलीं। दरबार की स्त्रियों को और वजीरों को एक एक और बाकी जितनी बचीं वे सब उसने अपने सामने रख लीं। उनको उसने बड़े स्वाद ले ले कर खाना शुरू कर दिया।

अचानक राजकुमारी अमरज़ा अपने पिता को देख कर चिल्लायी — "पिता जी यह क्या हो रहा है आप इतने अजीब से क्यों लग रहे हैं?"

यह सुन कर सबकी निगाहें राजा की तरफ उठ गयीं। सबने देखा कि राजा के कान बड़े हो कर नीचे की तरफ लटक गये। उसकी नाक भी लम्बी हो कर पुल जैसी बन गयी जो उसकी ठोड़ी तक आ रही थी।

यह देखा तो लोगों ने आपस में भी एक दूसरे की तरफ देखा तो उनके आश्चर्य और डर का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि किसी के कम या किसी के ज़्यादा सब वैसे ही हो चुके थे। दरबारियों का डर तो केवल सोचा ही जा सकता था।

तुरन्त ही राज्य भर के डाक्टरों को वहाँ बुलाया गया तो वे भी तूफान की तरह भागे चले आये। किसी ने गोलियाँ लिखीं किसी ने पीने की दवा लिखी पर उन सबके नाक कान फिर से छोटे नहीं हुए। उन्होंने एक राजकुमारी के नाक कान काटे भी पर उसका भी कोई फायदा नहीं हुआ वे फिर बढ़ आये थे।

मक जहाँ छिपा हुआ था वहाँ से उसने यह सारी कहानी सुनी तो उसको लगा कि अब उसका समय आ गया है जब उसको अपना काम करना है। पिछली बार उसने जो अंजीर बेची थीं उनको बेचने से जो उसको पैसा मिला था वह अभी भी उसके पास था।

उस पैसे से उसने एक ऐसी पोशाक खरीदी जिसमें वह एक विद्वान आदमी लगता था। बकरे के बालों की एक लम्बी दाढ़ी खरीदी जिसको लगा कर तो वह अब पहचान में ही नहीं आ रहा था।

उसने दूसरे पेड़ की अंजीरें एक टोकरी में रखीं और महल की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने अपने आपको एक विदेशी डाक्टर बताया।

पहले तो उन लोगों ने उस पर विश्वास नहीं किया पर जब उसने एक अंजीर एक राजकुमार को दी और उसके नाक और कान पहले जैसे सामान्य हो गये तो सारे लोग उस अजनबी से अपना इलाज कराने के लिये तैयार हो गये।

पर राजा उसको चुपचाप से महल के अन्दर ले गया। वहाँ एक दरवाजा खोल कर इशारे से वह उसको अपने खजाने वाले कमरे में ले गया।

वहाँ पहुँच कर उसने कहा — "अगर तू मुझे इस शर्मनाक शक्ल से बचा सके तो देख यह मेरा खजाना है। तुझे जो कुछ चाहिये वह इसमें से तू अपनी मरजी से चुन ले। वह तेरा है।"

छोटे मक के कानों में राजा के ये शब्द एक मीठे संगीत की तरह से पड़े। जब वह खजाने वाले कमरे में घुसा तो उसने पहले ही देख लिया था कि उसके जूते वहीं फर्श पर पड़े हैं और उसके पास ही उसकी छड़ी पड़ी थी।

दिखाने के लिये वह उस कमरे में चारों तरफ घूमा पर जैसे ही वह अपने प्यारे जूतों के पास पहुँचा बस उसने उनको पहना अपनी छड़ी उठायी अपनी झूठी दाढ़ी निकाल कर फेंक दी और दंग खड़े

राजा को अपनी असली शक्ल दिखा दी कि वह वही मक था जिसको उसने देश निकाला दे दिया था।

वह बोला — "ओ नकली राजा। जो अपने वफादार नौकर को इस तरह से उसकी वफादारी का बदला देता है तो ले तू उसकी सजा ले। तू अब इसी तरह से बदसूरत रहे जैसा कि अब है। मैं तेरे कान ऐसे ही छोड़ देता हूँ जिससे तू छोटे मक को हमेशा याद रख सके।"

ऐसा कह कर वह अपनी एड़ी पर तेज़ी से घूमा और वहाँ से कहीं दूर पहुँचने की इच्छा की। और इससे पहले कि राजा उसको अपनी सहायता के लिये पुकार सके छोटा मक तो पहले ही गायब हो चुका था।

तब से अब तक वह यहाँ बड़ी अमीरी में रह रहा है। पर अकेला ही रहता है क्योंकि उसे आदमी अच्छे नहीं लगते। तजुरबे ने उसको काफी अक्लमन्द बना दिया है।

हालाँकि वह बाहर से देखने में कुछ ऐसा ही है पर अन्दर से वह हँसने के बजाय प्रशंसा के लायक है।

X X X X X X X

यह कहानी मेरे पिता ने सुनायी तो मैंने उनको दिल से यह विश्वास दिलाया कि आगे से मैं उस छोटे आदमी के साथ ऐसा व्यवहार कभी नहीं करूँगा। तब उन्होंने मेरी सजा का दूसरा हिस्सा माफ कर दिया।

बाद में उसकी कहानी मैंने अपने साथियों को भी सुनायी तो उसके बाद हम सब उसको बहुत प्यार करने लगे। कोई भी उससे नफरत नहीं करता था। बल्कि जब तक वह ज़िन्दा रहा तब तक हम सब उसकी इज़्ज़त करते रहे। हम उसको इतना नीचे सिर झुकाते रहे जितना कि मुफ्ती को झुकाते हैं।"

यह कहानी सुनने के बाद यात्रियों ने अपने आपको और अपने जानवरों को तरोताजा करने के लिये यहीं इसी सराय में आराम किया। दिन बहुत अच्छा था सो फिर वे कुछ और खेल खेलने में लग गये।

खाना खाने के बाद अब उन्होंने अपने पॉचवें कहानी सुनाने वाले को बुलाया कि अब वह कहानी सुनाये। उसका नाम था अली साइज़ा[87]।

उसने बताया कि उसकी ज़िन्दगी में कोई खास ऐसी घटना नहीं हुई जिसको वह उनको सुना सके पर फिर भी वह उनको एक कहानी सुनायेगा जिसका उसकी ज़िन्दगी से कोई सम्बन्ध नहीं है।

[87] Ali Sizah – name of the 5th story teller.

7 नकली राजकुमार की कहानी[88]

एक बार की बात है कि एक ईमानदार और प्रशिक्षित दरजी था उसका नाम था लाबाकन[89]। उसने अपना काम अलैक्ज़ैन्ड्रिया[90] में बहुत अच्छी तरह से सीखा था। यह नहीं कहा जा सकता था कि लाबाकन को सुई पकड़ना नहीं आता था बल्कि वह हाथ का काम बड़ी सफाई से करता था।

उसके लिये यह कहना अन्याय होगा कि वह सुस्त या आलसी था। फिर भी उसके साथी लोग यह नहीं जानते थे कि वे उसका क्या करें। क्योंकि वह अक्सर ही इतनी ज़्यादा देर तक सिलता रहता कि सुई उसके हाथों में चमकने लगती और धागे में से धुऑ निकलने लगता। कोई उसकी टक्कर का नहीं था।

कभी किसी दूसरे समय पर, हालॉकि यह ज़्यादा बार होता कि वह बहुत देर तक ध्यान में बैठा रह जाता। वह बैठा बैठा अपने सामने किसी चीज़ को घूरता रह जाता कि उसका मालिक और उसके साथी उसकी शक्ल के बारे में सिवाय इसके कुछ और न कह पाते कि "देखो लाबाकन फिर से कैसा चेहरा बना कर बैठा है।"

शुक्रवार के दिन जब सब काम करने वाले अपनी प्रार्थना से काम पर लौट कर आते तो लाबाकन मस्जिद से सबसे पहले वापस

---

[88] The Story of the False Prince. (Tale No 7) Told by Ali Sizah.

[89] Labakan – name of the tailor

[90] Alexandria is a portal city in Egypt at Mrditerranean Se.

आता। उसने बड़े अच्छे कपड़े पहने होते जो उसने बड़ी मेहनत करके अपने लिये बनाये थे। वह शहर के चौराहों और सड़कों से भारी कदमों से धीरे धीरे चल कर आता।

उस समय अगर उसका कोई साथी कहता "अल्लाह तुम्हें खुश रखे।" या फिर "तुम्हारा कैसा चल रहा है ओ लाबाकन?" तो उसका यह नियम था कि वह उसके जवाब में केवल हाथ हिला देता। और अगर वह यह सोचता कि उसको जवाब देना ही है तो वह बड़ी नम्रता से अपना सिर झुका देता।

जब कभी उसका मालिक कहता कि "लाबाकन तुम्हारे अन्दर तो एक राजकुमार का वास है।" तो वह बहुत खुश होता और कहता "क्या यह बात आपने भी देखी है।" या फिर "मैं भी बहुत दिनों से यही सोचता हूँ।"

इस तरीके से वह ईमानदार प्रशिक्षित दरजी बहुत दिनों तक अपना काम चलाता रहा। जबकि मालिक उसकी बेवकूफियाँ सहता रहा क्योंकि दूसरी बातों में वह बहुत अच्छा था और काम तो वह बहुत अच्छा करता ही था।

लेकिन एक दिन क्या हुआ कि उसके मालिक का भाई सलीम अलैक्ज़ैन्ड्रिया में घूम रहा था। उसने मालिक को एक बहुत शानदार पोशाक भेजी कि वह उसमें वह कुछ रद्दोबदल करवा दे। मालिक ने वह पोशाक लाबाकन को दे दी क्योंकि वह सबसे अच्छा काम करता था।

शाम को जब सब सहायक दरजी दिन भर काम करके चले गये तो लाबाकन को एक बहुत ही जबरदस्त इच्छा ने दूकान पर वापस आने के लिये मजबूर कर दिया जहाँ सुलतान के भाई की वह पोशाक अभी भी लटक रही थी।

वह कुछ देर तक तो वहाँ उस पोशाक के सामने खड़ा रहा सोचता रहा उसकी शानदार कढ़ाई की मन ही मन तारीफ करता रहा उसके मखमल और सिल्क के रंगों की तारीफ करता रहा। फिर उससे रहा नहीं गया उसने सोचा कि उसको उसे पहन कर देखना ही चाहिये।

उसने उसे पहना तो लो वह उसको इतनी अच्छी तरह से फिट आ गयी जैसे कि वह उसी के लिये ही बनायी गयी हो।

उस पोशाक को पहन कर कमरे में इधर उधर चक्कर काटते हुए उसने अपने आपसे पूछा — "क्या मैं इसको पहन कर दूसरे राजकुमारों जैसा नहीं लग रहा? क्या मेरे मालिक ने मुझसे यह नहीं कहा था कि मैं तो राजकुमार बनने के लिये ही पैदा हुआ हूँ?"

उन कपड़ों को पहन कर तो वह बस शाही आदमी लगने लगा। अब उसको किसी और बात पर विश्वास नहीं हो रहा था सिवाय इसके कि वह एक राजा का बेटा है।

तो अब उसे उस शहर को छोड़ कर जहाँ इतने बेवकूफ लोग रहते हैं कि वे केवल उसकी हैसियत देखते हैं असली गुणों की ताकत को नहीं पहचानते दुनियाँ घूमने निकल जाना चाहिये।

लगता है कि यह इतनी सुन्दर पोशाक उसके लिये परियों ने ही भेजी है। यह सोचते हुए कि उसे उस शानदार पोशाक को अपने हाथ से निकलने नहीं देना चाहिये उसने एक पोटली में अपने पैसे रखे और रात के ॲधेरे का फायदा उठाते हुए अलैक्ज़ैन्ड्रिया के दरवाजे से बाहर निकल गया।

नये राजकुमार को जिधर भी वह जाता अपनी राजसी पोशाक की वजह से उसे हर जगह प्रशंसा मिलती। वह राजसी शान से चलता तो लोग उसे कोई सामान्य पैदल चलने वाला नहीं समझ सकते थे।

अगर कोई उससे कुछ पूछता तो वह बड़ी सावधानी से उसे जवाब देता। वह बड़ी भेद भरी नजर से देखता और बड़े विश्वास के साथ बोलता जैसे कि जो कुछ वह कह रहा है उसको साबित करने के लिये उसके पास पूरे तर्क हैं।

फिर उसको लगा कि वह पैदल घूम कर लोगों की हॅसी का पात्र बन रहा है उसने कुछ पैसों का एक घोड़ा खरीद लिया जिस पर बैठ कर वह खूब जॅच रहा था। क्योंकि उसका शान्त स्वभाव उसको अपने घोड़ा हॉकने में कोई रुकावट नहीं डाल रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह घुड़सवारी में बहुत होशियार था मगर ऐसा नहीं था।

एक दिन जब वह अपने रास्ते पर अपने मूर्वा[91] के ऊपर सवार आगे बढ़ा जा रहा था एक अजनबी उसके साथ लग गया। उसने उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ यात्रा कर सकता है। क्योंकि अगर वे बातें करते जायेंगे तो उनको रास्ता छोटा लगेगा और सफर आसानी से कट जायेगा।

अजनबी एक खुश खर्रम नौजवान था। उसके तौर तरीके भी बहुत अच्छे कुलीन किस्म के थे। वह जल्दी ही लाबाकन से बातें करने लगा कि वह कहाँ से आया था कहाँ जा रहा है। दरजी को जल्दी ही पता चल गया कि वह भी लाबाकन दरजी की तरह से बिना किसी काम के घूम रहा था।

उसने कहा कि उसका नाम उमर[92] था और वह ऐल्फ़ी बे[93] का भतीजा था। ऐल्फ़ी बे कैरो का बदकिस्मत बाशौ[94] था। ऐल्फ़ी बे जब मर रहे थे तो उन्होंने उमर से कुछ करने के लिये कहा था सो इस समय उमर उसी काम करने के लिये जा रहा था।

लाबेकन ने खुले तौर पर उसके हालात के बारे में उससे कुछ नहीं पूछा। उसने उसको यह दिखाने की कोशिश की कि वह एक बहुत अच्छे खानदान का आदमी है और आनन्द के लिये घूम रहा है।

---

[91] He named his horse as Murva.

[92] Omar or Umar – name of the stranger

[93] Elfie Bey

[94] Bashaw of Cairo – Bashaw means King and Cairo is the capital of Egypt.

दोनों नौजवान एक दूसरे के साथ से खुश थे सो एक साथ चलते रहे।

दूसरे दिन लाबेकन ने अपने साथी उमर से उस काम के बारे में पूछा जिसके लिये उसको कहा गया था तो उसको यह जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ कैरो के बाशौ ऐल्फ़ी बे ने उमर को बहुत छोटेपन से ही पाला था। उमर ने अपने माता पिता को कभी देखा ही नहीं था।

पर एल्फ़ी बे को जिस पर तीन बार दुश्मन हमला कर चुके थे तीन बहुत ही घमासान लड़ाइयों के बाद घायल होने पर भागना पड़ा तब उसने उमर को बताया कि वह उसका भतीजा नहीं था बल्कि एक बहुत ही ताकतवर लौर्ड का बेटा था।

उस ताकतवर लौर्ड को ज्योतिषियों ने डरा रखा था कि अगर वह बेटा उसके पास रहा तो भविष्य में उसके ऊपर दुश्मनों के हमलों की सम्भावना है सो उसने अपने बेटे को घर से बाहर निकाल दिया था और कसम खायी थी कि अब वह उसकी शक्ल तब तक नहीं देखेगा जब तक कि वह **22** साल का नहीं हो जायेगा।

ऐल्फ़ी बे ने उसे उसके पिता का नाम तो नहीं बताया था पर वायदा किया कि वह उसको उससे आने वाले रमादान के महीने के चौथे दिन एक निश्चित समय पर जब वह ठीक **22** साल का हो जायेगा मिलवायेगा।

इसके लिये उसे मशहूर अल सरूजा[95] खम्भे के पास जाना पड़ेगा जो अलैक्ज़ैन्ड्रिया से चार दिन की दूरी पर है। वहाँ उसे उन आदमियों को कुछ देना पड़ेगा जो वहाँ उस खम्भे के नीचे खड़े होंगे। कह कर बाशौ ने उसे एक छुरा दिया और कहा कि वह यह छुरा देते समय यह कहेगा "जिसे तुम ढूँढ रहे हो वह मैं हूँ।"

अगर वे यह जवाब दें कि "मुहम्मद का लाख लाख धन्यवाद है कि उसने तुम्हें बचाया।" तब तुम उनके पीछे पीछे चले जाना वे तुम्हें तुम्हारे पिता के पास ले जायेंगे।"

यह सब सुन कर प्रशिक्षित दरजी लाबाकन को बड़ा आश्चर्य हुआ। तबसे वह राजकुमार उमर को जलन की दृष्टि से देखने लगा क्योंकि खुशकिस्मती तो उसके हिस्से में आ गयी थी।

हालाँकि वह एक ताकतवर बाशौ के भतीजे के नाम से जाना जाता था पर यह बात तो अब साफ हो गयी थी कि वह बाशौ का भतीजा नहीं था। अब उसकी वह उसकी शाही शान नहीं थी।

जबकि उसके पास वह सब कुछ था जो एक राजा के बेटे के पास होना चाहिये बस केवल वंश नहीं था और था तो केवल रोज की रोटी के लिये रोज का काम।

इस तरह से वह खुद में और राजकुमार में तुलना करता रहा तो उसे स्वीकार करना पड़ा कि राजकुमार उमर का आने वाला कल तो बहुत अच्छा है।

---

[95] Al-Serujah

चमकती ऑखें उसी की थीं। कमान जैसी नाक उसी की थी। भले आदमी जैसा दयालु व्यवहार भी उसी का था। बाहर से देखने में जिसकी सब लोग प्रशंसा करें वह वैसा ही सम्पूर्ण लगता था।

हालॉकि उसने अपने साथी में बहुत सारे गुण देखे फिर भी उसको यह बात भी माननी ही पड़ी कि लाबेकन भी उस असली राजकुमार से कम तो नहीं है जिसको उमर का पिता स्वीकार करे।

ये विचार सारा दिन लाबेकन के दिमाग में घूमते रहे। उन्हीं विचारों के साथ वह एक पास वाली सराय में सो गया। पर जब वह सुबह जागा तो उसकी ऑखें उमर पर ही अटकी रहीं जो उसके पास ही सोया हुआ था। वह इतनी शान्ति से सोया हुआ था जैसे उसको अपने आने वाले अच्छे कल का सपना देख रहा हो।

वह चाकू जो उमर के राजकुमार होने की निशानी थी उसकी कमर की पेटी से अभी भी लटक रहा था। उसने उसे उमर की कमर से धीरे से खींच लिया ताकि वह उसके सीने में घोंप सके।

पर शान्तिप्रिय प्रशिक्षित दरजी ने उसे उमर के सीने में घोंपने से पहले सोचा। उसने अपने आपको केवल चाकू ले कर ही सन्तुष्ट कर लिया। फिर उसने राजकुमार का तेज़ घोड़ा लिया और वहॉ से चल दिया।

लेकिन लो उसी समय राजकुमार जाग गया। उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया था। उसका धोखा देने वाला साथी तो अब तक कई मील आगे निकल चुका था।

उस दिन जिस दिन लाबाकन ने राजकुमार को लूटा था वह पवित्र रमादान महीने का पहला दिन था। सो उसके पास अल सरूजा खम्भे तक पहुँचने के लिये चार दिन थे।

यह जगह उसकी अच्छी तरह से देखी भाली थी। हालाँकि यह जगह जहाँ यह खम्भा खड़ा था जहाँ से वह चला था वहाँ से चार दिन में सबसे ज़्यादा दूर थी। फिर भी वह वहाँ पहुँचने की जल्दी में था क्योंकि उसको बराबर यही डर था कि असली राजकुमार उससे आगे न निकल जाये।

दूसरे दिन के आखीर में ही उसको अल सरूज का खम्भा दिखायी दे गया। वह एक छोटी सी पहाड़ी पर खड़ा था। चारों तरफ उसके हरा भरा मैदान था। उसको **2–3** लीग दूर से देखा जा सकता था।

उसको देख कर लाबाकन का दिल धड़कने लगा। हालाँकि वह दो दिन से घोड़े पर सवारी कर चुका था और उस सारे समय में वह यही सोचता रहा था कि वह यहाँ आ कर कैसे अपना काम करेगा। फिर भी उसको यह काम करते में गलत लग रहा था इसलिये उसकी चिन्ता बढ़ती जा रही थी।

यह विचार कि वह तो एक राजकुमार होने के लिये पैदा हुआ था उसकी हिम्मत बढ़ा रहा था। सो एक नये उत्साह से वह उस खम्भे की तरफ बढ़ा।

खम्भे के चारों तरफ कोई रहता नहीं था रेगिस्तान सा था। अगर उसने पहले ठीक से अपने लिये खाना इकट्ठा नहीं किया होता तो हमारे नये राजकुमार को खाने पीने की थोड़ी सी परेशानी हो रही होती। अब तो वह एक खजूर के पेड़ के नीचे लेट गया और मौके का इन्तजार करने लगा।

अगले दिन दोपहर को उसने रेगिस्तान की तरफ से बहुत सारे घोड़ों और ऊँटों का एक जुलूस आते देखा जो अल सरूजा के खम्भे की तरफ ही चला आ रहा था। वह उसी पहाड़ी के नीचे तक आ गया था जिस पर वह खम्भा खड़ा हुआ था।

वहॉ उन्होंने शानदार तम्बू लगाये तो वह सारी जगह तो अब यात्रा करने वाले किसी बाशौ या किसी शेख के ठहरने की जगह दिखायी देने लगी।

लाबाकन ने देखा कि बहुत सारे लोग तो उसको देखने के लिये उधर आ रहे थे। वे अपने होने वाले लौर्ड को देख कर बहुत खुश होते पर लाबाकन ने भी अपनी उत्सुकता को रोक रखा था और किसी राजकुमार की तरह से बरताव कर रहा था। क्योंकि अगले दिन तो उसकी सबसे बड़ी इच्छा पूरी होने वाली थी।

अगले दिन सुबह का सूरज निकला। अब दरजी तो आज बहुत खुश था क्योंकि आज तो उसकी ज़िन्दगी का सबसे ज़्यादा खुशी का समय आने वाला था जो उसको एक बहुत ही नीचे दरजे से शाही पिता के साथ बिठाने वाला था।

जब वह खम्भे तक पहुँचने के लिये अपने घोड़े का साज सजा रहा था उसका अन्याय का रास्ता उसके आड़े आ गया। उसको लगा कि असली राजकुमार उस पर बहुत गुस्सा है क्योंकि उसने उसकी आशाओं पर पानी फेर दिया है।

पर अब तो खॉचा बन चुका था। जो कर दिया गया था अब उसको मिटाया तो नहीं जा सकता था। स्वार्थ उसके कान में फुसफुसाया “तू तो एक ताकतवर राजा के बेटा दिखायी देने के लिये बहुत शाही लग रहा है।”

ऐसा सोच कर और अपनी सारी हिम्मत बटोर कर वह कूद कर अपने घोड़े पर बैठा और उसको हॉकना शुरू किया। पन्द्रह मिनट में ही वह पहाड़ी के नीचे आ पहुँचा।

वहॉ आ कर वह अपने घोड़े से नीचे उतरा उसे एक छोटे से पेड़ से बॉधा जो वहीं पास में ही उग रहा था राजकुमार उमर का चाकू निकाला और पहाड़ी के ऊपर चल दिया।

खम्भे के नीचे छह आदमी एक सफेद बाल वाले आदमी को घेरे हुए खड़े हुए थे जो खुद भी एक राजा के जैसा लग रहा था। उसने एक सुनहरा काफ्तान पहन रखा था और उस पर सफेद कैशमीर[96] का शाल डाला हुआ था। उसके सिर पर सफेद पगड़ी रखी हुई थी जिसमें चमकदार कीमती पत्थर जड़े हुए थे।

[96] Cashmere – is a kind of wool made from the hair of a special sheep found at very high altitude. It is very expensive and very soft.

लाबाकन को लगा कि यही वह कुलीन आदमी लगता है जिसका बेटा वह उमर था सो वह उसकी तरफ बढ़ा और काफी नीचे तक सिर झुका कर उसको चाकू दिया और कहा “जिसको आप ढूँढ रहे हैं वह मैं हूँ।”

उस आदमी की आँखों में खुशी से आँसू आ गये। वह आदमी बोला — “मुहम्मद की जय हो जिसने तुझे बचा कर रखा। उमर मेरे प्यारे बच्चे आ अपने बूढ़े पिता के गले लग जा।”

भला दरजी उस आदमी के इन शब्दों से बहुत प्रभावित हुआ और खुशी और शरम से बूढ़े कुलीन आदमी की बाँहों में गिर पड़ा। अपनी इस नये पद की खुशी को बस वह एक पल ही भोग सका। जैसे ही वह उस बूढ़े आदमी की बाँहों में से उठा कि उसने एक घुड़सवार मैदान की तरफ से उस पहाड़ी की तरफ आता देखा।

यात्री और उसके घोड़े दोनों की कुछ अजीब ही शक्ल हो रही थी। उसका घोड़ा शायद थकान की वजह से आगे बढ़ने से मना कर रहा था। वह कुछ लुढ़कता सा हो रहा था वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पा रहा था और उसका सवार अपने हाथों पैरों से उसको तेज़ भागने के लिये कह रहा था।

लाबाकन ने जल्दी ही अपने घोड़े मूर्वा को और राजकुमार उमर दोनों को पहचान लिया। पर उसकी बुरी आत्मा ने उसके ऊपर एक बार फिर काबू पा लिया। उसने सोच लिया कि चाहे जो कुछ भी हो

जाये वह अपने इस तरह से पाये हुए अधिकार को किसी तरह खोयेगा नहीं।

उन्होंने दूर से पहले ही देख लिया था कि घुड़सवार कुछ इशारे करता चला आ रहा था। मूर्वा हालाँकि धीरे चल रहा था पर फिर भी वह अब तक पहाड़ी के नीचे तक आ पहुँचा था। उमर वहाँ आ कर घोड़े से नीचे कूद गया और पहाड़ी चढ़ने लगा।

वह नीचे से चिल्लाया — “रुक जाओ रुक जाओ जो कोई भी तुम हो। यह एक वेश बदल कर धोखा देने वाला है। उमर मैं हूँ। किसी दूसरे आदमी को मेरा नाम इस्तेमाल मत करने दो।”

पास में खड़े हुए सब लोग यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गये क्योंकि इससे तो पाँसा ही पलट गया था। वह बूढ़ा आदमी तो यह सुन कर ही भौंचक्का रह गया। वह कभी इस आदमी को देखता तो कभी उस आदमी को।

इस पर लाबाकन बड़ी मुश्किल से हिम्मत बटोर कर अपने आपको सँभाल कर बोला — “ओ लौर्ड और मेरे पिता। आप इस आदमी के बहकावे मत आइये। जहाँ तक मैं इसे जानता हूँ यह तो अलैक्ज़ैन्ड्रिया एक पागल प्रशिक्षित दरजी है। इसका नाम लाबाकन है जिसको हमारे गुस्से की बजाय दया की जरूरत है।”

ये शब्द सुन कर राजकुमार तो जैसे पागल सा हो गया। गुस्से के मारे उसके मुँह से झाग निकलने लगे। वह लाबाकन के ऊपर

कूद पड़ने वाला ही था कि पास में खड़े लोगों ने बीच में कूद कर उसको बचा लिया।

बूढ़ा बोला — "तुम ठीक कहते हो मेरे बच्चे। यह बेचारा पागल हो गया है। इसको बॉध कर हमारे किसी ऊँट पर रख दो। शायद हम इस अभागे की कुछ सहायता कर सकें।"

राजकुमार का गुस्सा बढ़ कर अब ऑसुओं में बदल गया था। उसने बूढ़े से चिल्ला कर कहा — "मेरा दिल कहता है कि आप मेरे ही पिता हैं। मुझे अपनी मॉ की कसम मेरी सुनिये।"

बूढ़ा बोला — "अल्लाह मेरी सहायता करे। इसने तो फिर से अनाप शनाप बकना शुरू कर दिया। किसी आदमी के दिमाग में ऐसे बेवकूफी के विचार किस तरह से आ सकते हैं।"

उसने लाबाकन का हाथ पकड़ा और उसको अपने साथ पहाड़ी के नीचे की तरफ ले गया। वे दोनों दो बहुत सजे हुए घोड़ों पर सवार हुए और मैदान से हो कर उस जुलूस के आगे आगे चले।

उन्होंने उस अभागे राजकुमार के दोनों हाथ बॉध रखे थे और एक ऊँट पर सुरक्षित रूप से बॉध रखा था। दो घुड़सवार बराबर उसके साथ चल रहे थे और वे उसके ऊपर बराबर नजर रखे थे।

बूढ़े राजा का नाम सऊद था और वह वेचाबाइट्स का सुलतान[97] था। कुछ समय तक तो उसके बच्चे ही नहीं हुए। आखिर जब उसको एक राजकुमार पैदा हुआ जिसकी उसको बहुत

[97] King Saoud of Wechabites

दिनों से इच्छा थी। पर उसके ज्योतिषी ने उसके बच्चे की किस्मत देख कर बताया कि बच्चे की वजह से उसको **22** साल तक दुश्मन का डर रहेगा।

इस वजह से ताकि वह बिल्कुल सुरक्षित रहे सुलतान ने उसको अपने एक बहुत ही विश्वस्त दोस्त ऐल्फ़ी बे को उसे पालने के लिये दे दिया था ताकि वह वहाँ सुरक्षित रहे। और खुद वह उसको देखे बिना **22** साल तक बड़े दुख से रहा।

यह उस सुलतान ने अपने नकली बेटे से कहा। वह उसकी शानदार शक्ल सूरत और व्यवहार से बहुत प्रभावित था।

जब वे सुलतान के राज्य में पहुँचे तो हर जगह उसका खुशी की चिल्लाहट से स्वागत किया गया क्योंकि राजकुमार के राज्य में आने की अफवाह राज्य में जंगली आग की तरह से तुरन्त ही फैल गयी थी।

वे जिस सड़क पर भी जाते उनके स्वागत के लिये फूलों और शाखाओं की मेहराबें बनी हुई थीं। घरों को चमकीले रंग के कालीनों से सजाया गया था। लोग अल्लाह और उसके धर्मदूत मुहम्मद की जय के नारे लगा रहे थे जिन्होंने उनके राजकुमार को ढूँढ कर उनके सामने ला खड़ा किया था।

यह सब देख कर दरजी का दिल तो गर्व से बहुत खुश हो रहा था और उससे ज़्यादा दुखी उमर हो रहा था जो इस जुलूस के पीछे

पीछे बॅधा हुआ आ रहा था। हालॉकि यह सारी खुशी उसके लिये थी पर उसकी तरफ ध्यान कोई नहीं दे रहा था।

हजारों लाखों लोग उमर के नाम की जयजयकार बोल रहे थे पर उस उमर की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा था।

बल्कि उनमें से एक दो ने यह जरूर पूछा कि वह कौन है जिसको लोग इतना कस कर बॉध कर ले जा रहे हैं। नकली राजकुमारों के कानों में इसका जवाब यह सुनायी दिया "वह कोई पागल दरजी है।"

यह जुलूस सुलतान के शहर तक पहुॅच गया जहॉ पर सब तैयारी और दूसरे शहरों की तुलना में और ज़्यादा शान से की गयी थी।

सुलताना एक बूढ़ी स्त्री जो राजसी कपड़े पहने थी अपनी दासियों के साथ महल के सबसे शानदार कमरे में उनका इन्तजार कर रही थी। कमरे का फर्श एक कीमती कालीन से ढका हुआ था। कमरे की दीवारें चमकीले नीले रंग की टैपैस्ट्री से ढकी हुई थीं जो बहुत बड़े बड़े चॉदी के छल्लों से सुनहरी रस्सियों और फुॅदनों से लटकी हुई थीं।

जब जुलूस महल पहुॅचा तो रात हो आयी थी सो कमरे में अलग अलग रंग के गोल गोल लैम्प जल रहे थे जिनसे रात में भी दिन का

सा उजाला था बल्कि दिन की रोशनी से भी ज़्यादा चमकीला और कई रंग वाला।

ऐसे कमरे में एक तरफ को सुलताना अपने सिहासन पर बैठी हुई चमक रही थी। उसका सिंहासन चार सीढ़ी ऊपर चढ़ कर था और खालिस सोने का बना था जिसमें रत्न जड़े थे।

चार बड़े अमीर अपनी सुलताना के ऊपर लाल सिल्क की एक बड़ी सी छतरी ले कर खड़े थे। मदीना का शेख[98] उसको ठंडक पहुँचाने के लिये मोरपंख का पंखा झल रहा था।

इस तरह से बैठी हुई सुलताना अपने पति और बेटे का इन्तजार कर रही थी। बेटे को तो उसने उसके जन्म के बाद से कभी देखा ही नहीं था। पर उसके सपने वह बड़े साफ तरीके से देखती चली आ रही थी कि अगर वह हजारों में भी उसे देखती तो पहचान लेती।

लोगों ने महल के ऑगन में उनके आने का शोर सुना – बाजे गाजे का शोर, लोगों के बात करने का शोर, घोड़ों की टापों का शोर। पैरों की आवाजें पास और और पास आती जा रही थीं। कमरे के दरवाजे खोल दिये गये।

जमीन पर लेटे हुए नौकरों के बीच से हो कर सुलतान अपने बेटे का हाथ पकड़े हुए सुलताना की तरफ बढ़ा — "लो मैं उसको

---

[98] Sheikh of Medina – Madina is a pilgrimage city for Muslims.

तुम्हारे पास ले आया हूँ जिसको देखने की तुम्हारी इच्छा कितने सालों से थी।"

सुलताना उसको देखते ही चिल्ला पड़ी "यह मेरा बेटा नहीं है। यह उसकी शक्ल ही नहीं है जिसे मुहम्मद साहब ने मुझे सपने में दिखायी थी।"

जैसे ही सुलतान सुलताना के इस अन्धविश्वास का अपमान करने वाला था कि कमरे का दरवाजा खुला और राजकुमार उमर अपने रक्षकों के साथ अन्दर घुसा और माँ के पैरों में पड़ गया। वह अपनी सारी ताकत लगा कर उन रक्षकों से बच कर वहाँ भाग आया था।

वह बोला — "मैं यहाँ मरूँगा। ओ मेरे बेरहम पिता आप मुझे यहाँ मार दें क्योंकि इससे ज़्यादा मैं अपना अपमान नहीं सह सकता।"

उसके ये शब्द सुन कर सब लोग आश्चर्यचकित रह गये भीड़ उसके चारों तरफ खिसक आयी। इनमें उसके वे रक्षक भी शामिल थे जिनके हाथों से बच कर वह भाग आया था।

सुलताना तो यह देख कर कुछ बोल ही नहीं सकी। पर उसकी एक नजर ने उसे बता दिया और वह अपने सिंहासन से उछल पड़ी और बोली — "रुक जाओ। यही मेरा बेटा है और दूसरा कोई नहीं। हालाँकि मैंने इसे कभी देखा नहीं है पर मेरा दिल इसे जानता है।"

रक्षक अपने आप ही उमर से पीछे हट गये। पर सुलतान ने गुस्से से उफनते हुए उनसे कहा कि वे उस पागल आदमी को बाँध लें।

वह हुकुम की आवाज में बोला — "यह निश्चय करना मेरा काम है। और यहाँ हम फैसला करेंगे एक स्त्री के सपनों के ऊपर नहीं बल्कि उन निशानों के ऊपर जो असली हैं।"

फिर उसने लाबाकन की तरफ इशारा करके कहा — "यह मेरा बेटा है क्योंकि यह मेरे लिये चाकू ले कर आया है जो मेरे दोस्त ऐल्फ़ी बे की निशानी है।"

उमर बोला — "यह इसने मुझसे चुराया है। मैंने इस पर विश्वास किया और इसने उस विश्वास का बदला मुझे इस तरीके से दिया।"

पर सुलतान ने अपने बेटे की बात सुनी ही नहीं क्योंकि वह अपने बेटे की बात सुनने के लिये बहुत जिद्दी था और अपना ही फैसला ठीक समझता था।

उसने हुकुम दिया कि वे उसके बेटे उमर को कमरे में से खींच कर बाहर ले जायें। फिर वह लाबाकन को अपने साथ ले कर अपने कमरे में चला गया। वह अपनी पत्नी के ऊपर भी बहुत गुस्सा था जिसके साथ वह पिछले **25** साल से खुशी खुशी रह रहा था।

सुलताना यह सब देख कर बहुत दुखी थी। उसको पक्का विश्वास था कि सुलतान के दिल में उसके अपने बेटे की जगह किसी

और ने ले ली है। उसके कई सपने उसको यह बताते कि असली उमर ही उसका अपना बेटा है।

जब सुलताना का दुख ज़रा सा कम हुआ तब उसने सोचना शुरू किया कि सुलतान को इस बात का विश्वास कैसे दिलाया जाये कि सुलतान गलती पर था। असली उमर ही उनका अपना बेटा था।

यह बहुत ही मुश्किल काम था क्योंकि जो उसका नकली बेटा था उसने तो चाकू पेश करके अपने आपको असली बेटा साबित कर दिया था। पर अगर वह उमर की शुरू की ज़िन्दगी के बारे में राजकुमार के मुँह से जानती तो वह किसी को धोखा दिये बिना ही कुछ कर सकती थी।

उसने वे आदमी बुलाये जो सुलतान को अल सरूजा के खम्भे तक ले कर गये था ताकि वहाँ ठीक ठीक क्या क्या हुआ वह यह जान सके।

फिर उसने अपनी एक भरोसे वाली दासी से सलाह ली। कभी वह एक तरीका चुनती फिर उसको छोड़ देती फिर कभी कोई दूसरा तरीका लेती फिर उसे भी छोड़ देती।

तब एक बूढ़ी चालाक मैलेचसाला[99] बोली — "हुज़ूर साहिबा। अगर मैंने ठीक ठीक सुना है तो जिसके पास यह चाकू था उसने जिसको आप अपना बेटा कहती हैं उससे कहा था "पागल दरजी लाबाकन"।

[99] Melechsala – a female slave of Sultanaa

सुलताना बोली — “हॉ यह तो ठीक है। पर इससे तुम्हें किस बात का पता चलता है।”

दासी फिर बोली — “आप क्या सोचती हैं कि कहीं उस वेश बदले आदमी ने अपना नाम तो आपके बेटे को नहीं दे दिया। अगर ऐसा है तब तो हम उस धोखा देने वाले को बहुत आसानी से पकड़ सकते हैं। वह तरीका मैं आपको अकेले में बताऊँगी।”

सुलताना ने अपनी दासी की बात सुनी और दासी ने सुलताना के कानों में एक प्लान फुसफुसा कर बताया जिसको सुन कर उसको बहुत खुशी हुई क्योंकि उसके बाद वह सुलतान के पास जाने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गयी।

सुलताना एक बहुत ही समझदार स्त्री थी। वह न केवल अपने पति की कमजोरियॉ ही जानती थी बल्कि उनसे फायदा उठाना भी जानती थी।

उसने कहा कि वह अपने बेटे को छोड़ने और दूसरे लड़के को अपना बेटा मानने के लिये केवल एक शर्त पर तैयार है और वह यह कि सुलतान और सुलताना में जो झगड़ा हुआ है पहले वह सिलट जाये।

वह आगे बोली — “मैं यह चाहती हूॅ कि दोनों राजकुमारों में उनकी होशियारी का एक मुकाबला हो जाये। एक बार घुड़सवारी में अकेले वाली में या फिर भाला फेंकने वाली में। पर ये काम तो कोई भी कर सकता है।

मैं उनको एक ऐसा मुकाबला देना चाहती हूँ जिसमें आदमी को ज्ञान की भी जरूरत हो और हाथ के काम की भी। और वह यह होगा कि दोनों एक एक काफ्तान बनायेंगे और एक एक पतलून बनायेंगे। तब हम देखेंगे कि किसकी ज़्यादा अच्छी बनती है।"

यह सुन कर सुलतान बहुत ज़ोर से हँस पड़ा — "तुमने यह मुकाबला बहुत अच्छा रखा है। तुम क्या यह समझती हो कि क्या मेरा बेटा उस पागल दरजी से मुकाबला करेगा? बस यह देखने के लिये कि कौन ज़्यादा अच्छा काफ्तान बनाता है? नहीं नहीं यह नहीं हो सकता।"

सुलताना रो कर बोली कि वह तो उसकी वह शर्त पहले ही मान चुका है और उसका पति जो अपनी बात का पक्का था काफी देर के बाद इस बात पर राजी हो गया।

पर साथ में उसने यह कसम भी खायी कि अगर दरजी ने काफ्तान बहुत बढ़िया बना भी दिया तो भी वह उसको अपना बेटा कभी मानने के लिये तैयार नहीं होगा।

सुलतान अपने बेटे के पास गया और उससे विनती की कि वह अपनी माँ की आज्ञा मानने के लिये तैयार हो जाये। क्योंकि उसकी बहुत इच्छा थी कि वह अपने बेटे के हाथ का बना हुआ काफ्तान देखना चाहती है।

लाबेकन का दिल तो इस बात पर बहुत खुश हो गया। अगर उनको यही कुछ चाहिये तो उसने सोचा कि फिर तो सुलताना मुझे बहुत प्यार से देखेंगी।

दो कमरे तैयार किये गये एक राजकुमार के लिये और दूसरा दरजी के लिये। दोनों को वहाँ उनको उनकी होशियारी दिखाने के लिये रख दिया गया। दोनों को कैंची धागा सुई सिल्क का कपड़ा आदि दे दिया गया।

सुलतान यह देखने के लिये बहुत उत्सुक था कि उसका बेटा किस तरह का काफ्तान सिल कर लायेगा। पर सुलताना का दिल तो बस शान्ति से धड़क रहा था। वह बस यह सोच रही थी कि कहीं उसका सुझाया हुआ यह मुकाबला असफल न हो जाये।

वे लोग दो दिन तक उन कमरों में बन्द रहे। तीसरे दिन सुलतान ने अपनी पत्नी को बुला भेजा और जब वह आ गयी तो उसको उन कमरों की तरफ भेज दिया जहाँ वे दोनों बैठे बैठे काफ्तान बना रहे थे ताकि वह दोनों को यानी काफ्तानों को और उनको बनाने वालों को ले आये।

जीत की खुशी में लाबेकन कमरे में से बाहर निकला और अपना बनाया काफ्तान सुलतान को पेश किया। वह बोला — "देखिये पिता जी और देखिये माँ। क्या यह काफ्तान एक बहुत बढ़िया काफ्तान नहीं है। मैं आपके दरबार के सबसे अच्छे दरजी पर छोड़ता हूँ अगर वह ऐसा दूसरा काफ्तान बना दे तो।"

सुलताना ने उमर की तरफ मुस्कुरा कर देखा और बोली — “ओ मेरे बेटे तू क्या ले कर आया है?”

उमर ने इस अन्यायपूर्ण मुकाबले पर दुखी हो कर कपड़ा और कैंची फर्श पर फेंक दी और बोला — “उन्होंने मुझे घोड़े को पालतू बनाना सिखाया, उन्होंने मुझे तलवार चलानी सिखायी, अपने भाले को **60** कदम दूर तक निशाना लगाना सिखाया पर यह सुई धागे की कला तो मैं जानता ही नहीं। कैरो के लौर्ड ऐल्फ़ी बे के शिष्य के लिये तो यह बड़े अपमान की बात थी।”

यह सुन कर सुलताना बोली — “तू ही मेरा असली बेटा है। काश मैं तुझे गले लगा सकती और अपना बेटा कह सकती।”

फिर उसने सुलतान की तरफ मुँह करके कहा — “मुझे माफ कर देना ओ सुलतान और मालिक। कि इस तरह से इस बात पर मैं आपके खिलाफ खड़ी हुई। क्या आपको अभी भी पता नहीं चल रहा कि राजकुमार कौन है और दरजी कौन है।

सच तो यह है कि आपके बेटे ने यह काफ्तान बहुत ही बढ़िया बनाया है। यह पूछना बेकार है कि उसने यह कला किस मास्टर से सीखी।”

यह सब देख कर सुलतान तो गहरे विचारों में डूब गया। वह अविश्वास से कभी अपनी पत्नी को देखता तो कभी लाबाकन को जो बेकार में ही शरमा कर अपनी पहचान छिपा रहा था और बेवकूफी से धोखा दे रहा था।

फिर वह बोला — "मैं इस सबूत से खुश नहीं हूँ। पर अल्लाह की मेहरबानी है कि अब मुझे यह जानने का तरीका पता चल गया है कि मुझे धोखा दिया गया है या नहीं।"

फिर उसने हुकुम दिया कि उसका सबसे तेज़ भागने वाला घोड़ा वहाँ लाया जाये जिस पर चढ़ कर वह पास के एक जंगल में गया जो शहर के बाहर ही था।

पुरानी कहानी के अनुसार वहाँ एक अच्छी परी रहती थी जिसका नाम था अडोलज़ायडे[100] और जो पहले भी उस परिवार को उसकी जरूरत पड़ने पर अपनी सलाह दे चुकी थी। वह उस घोड़े पर चढ़ कर वहीं चला गया।

जंगल के बीच में एक खुली जगह थी जिसको चारों तरफ सीडर के बड़े बड़े पेड़ लगे हुए थे। सो कहानी यह थी कि वहाँ एक परी रहती थी और वहाँ इस दुनियाँ का कोई आदमी नहीं जाता था क्योंकि बहुत पुराने समय से पीढ़ी दर पीढ़ी कोई बुरी बात उससे सम्बन्धित थी।

जब सुलतान उस जंगल के पास पहुँचा तो वह घोड़े से उतर गया घोड़े को एक पेड़ से बाँधा और उस खुली जगह के बीच में जा कर खड़ा हो गया और बहुत ज़ोर से चिल्लाया —

"अगर यह सच है कि जरूरत पड़ने पर तूने मेरे पुरखों को सलाह दी है तो मेहरबानी करके उनके बच्चों को भी मना मत

[100] Adolzaide – name of the Fairy

करना। मुझे एक ऐसी बात पर सलाह चाहिये जो आदमी की नजर से मुश्किल से दिखायी देती है।"

जैसे ही उसने यह कहा उसी समय सीडर का एक पेड़ फटा और उसमें से सफेद लम्बी पोशाक पहने सफेद परदा लगाये एक परी वहाँ प्रगट हुई और बोली — "मुझे मालूम है सुलतान सऊद कि तू मेरे पास क्यों आया है। तेरी इच्छा ठीक है इसलिये मैं तेरी सहायता जरूर करूँगी।

ले ये दो सन्दूकचियाँ ले जा और उन दोनों लड़कों को दे देना जो अपने को तेरा बेटा कहते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि तेरा बेटा गलत सन्दूकची नहीं चुनेगा।"

कह कर परी ने उसको हाथी दाँत की बनी हुई दो छोटी छोटी सन्दूकचियाँ दीं जिन पर बहुत सारा सोने और मोती का काम हो रखा था। सुलतान ने उनके ढक्कन खोलने की कोशिश की पर बेकार। उन ढक्कनों पर हीरों से कुछ लिखा हुआ था।

सुलतान उन सन्दूकचियों को ले कर महल लौट पड़ा। उसने यह जानने की बहुत कोशिश की कि उन सन्दूकचियों में क्या है पर वह मालूम न कर सका। उनके ऊपर जो कुछ लिखा हुआ था सुलतान उससे भी कुछ पता न लगा सका।

एक सन्दूकची पर लिखा था "इज़्ज़त और प्रसिद्धि" और दूसरी सन्दूकची के ढक्कन पर लिखा था "किस्मत और सम्पत्ति"[101]।

---

[101] "Honor and Fame" and "Fortune and Wealth"

सऊद ने सोचा कि इनमें से किसी एक सन्दूकची को चुनना तो बहुत ही मुश्किल काम है क्योंकि वे सन्दूकचियॉ दोनों बहुत सुन्दर थीं दोनों बहुत आकर्षक थीं।

यही सब सोचते सोचते वह महल पहुँच गया। महल पहुँच कर उसने अपनी पत्नी को बुलाया और परी ने उससे जो कुछ भी कहा था वह सब उसको बताया।

परी की बात ने उसके मन में एक आशा जगा दी कि हो सकता है कि जिसको उसका दिल कहता था कि वह उसका बेटा है वह सही सन्दूकची चुन ले और उससे उसके शाही जन्म का पता चल जाये।

सुलतान के सिंहासन के सामने दो मेजें लायी गयीं। सुलतान ने अपने हाथों से उनके ऊपर दोनों सन्दूकचियॉ रख दीं। फिर उसने अपने एक दास से कहा कि वह कमरे का दरवाजा खोल दे। दरवाजे के खुलते ही उसमें से कई बाशौ और अमीर लोग अन्दर आ गये। अन्दर आ कर वे सब अपनी अपनी सीटों पर बैठ गये जो दीवार के सहारे सहारे लगी थीं।

जब यह सब हो गया तो सऊद ने एक दूसरा इशारा किया और लाबेकन को सबको दिखाया गया। वह भारी कदमों से कमरे में दाखिल हुआ और यह कहते हुए सुलतान को जमीन पर लेटते हुए आदाब किया — “मेरे लौर्ड और पिता का क्या हुकुम है?”

सुलतान अपने सिंहासन से उठा और बोला — "मेरे बेटे जैसा कि तुम कहते हो कि तुम मेरे बेटे हो पर तुम्हारे मेरे बेटे होने पर बहुत सारे शक उठते हैं। इन दोनों सन्दूकचियों में से एक सन्दूकची में तुम्हारे जन्म के बारे में सूचना बन्द है।

तुम इनमें से एक सन्दूकची चुन लो। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम ठीक सन्दूकची ही चुनोगे।"

लाबाकन उठा और मेजों की तरफ बढ़ चला। काफी देर तक वह यही सोचता रहा कि वह कौन सी सन्दूकची उठाये। आखिर वह बोला — "पिता जी इससे ज़्यादा बड़ी चीज़ मेरे लिये क्या होगी कि मैं आपका बेटा हूँ। आपका बेटा होने से ज़्यादा मेरे लिये और क्या सम्पत्ति हो सकती है। सो मैं "किस्मत और सम्पत्ति" वाली सन्दूकची चुनता हूँ।"

सुलतान फिर से अपने दासों को इशारा करते हुए बोला — "अभी पता चल जायेगा कि तुमने ठीक सन्दूकची चुनी कि नहीं। इस बीच तुम वहाँ जा कर बैठो मदीना के बाशौ के पास।"

अब उमर को अन्दर लाया गया। उसकी आँखें दुखी थीं। जो लोग वहाँ बैठे हुए थे उन सबकी आँखों में उसके लिये सहानुभूति थी। वह अन्दर आया और दोनों सन्दूकचियों पर लिखा हुआ पढ़ा और बोला —

"पिछले कुछ दिनों में मुझे यह पता चला कि किस्मत कितनी असुरक्षित है और सम्पत्ति कितनी आनी जानी है पर उन्होंने मुझे यह

भी सिखा दिया कि एक चीज़ वह भी है जो नष्ट नहीं हो सकती और वह है एक बहादुर आदमी की छाती में रखी उसकी इज़्ज़त।

इसके अलावा किस्मत के सितारे के डूबने के साथ साथ उसकी प्रसिद्धि का सितारा कभी नहीं डूबता।"

खॉचा बन चुका था। वह आगे बोला — "मैं ताज को ठुकराता हूँ। इज़्ज़त और प्रसिद्धि ही मेरा चुनाव है।"

कह कर उसने अपना हाथ उस सन्दूकची पर रख दिया जिसको उसने चुना था। पर सुलतान ने उससे कहा कि वह उसे अभी न खोले। उसने लाबाकन को अपनी मेज के सामने बुलाया तो वह आया। आते ही उसने अपनी सन्दूकची पकड़ ली।

सुलतान ने एक शराब का प्याला मॅगवा रखा था जिसमें ज़मज़म[102] का पानी था। उसने अपने हाथ साफ करने के लिये उस पानी से हाथ धोये और पूर्व की तरफ अपना मुँह घुमाते हुए प्रार्थना करने कि लिये जमीन पर लेट गया।

"ओ मेरे पुरखों के अल्लाह तू जिसने मेरे पुरखों की हमेशा सहायता की है कि हमारा परिवार हमेशा असली बना रहे और अबासिदे के नाम को कोई धब्बा न लगे अब तू इस मुसीबत की घड़ी में मेरे असली बेटे की सुरक्षा कर।"

सुलतान वहॉ से उठ कर फिर अपने सिंहासन पर जा बैठा। वहॉ सब आशा से बॅधे बैठे थे। वे सब सॉस रोके देख रहे थे। वहॉ

[102] Zemzem is the name of a well in Mecca whose water is sacred for Muslims.

इतनी शान्ति थी कि अगर कोई चूहा भी वहाँ से गुजरता तो उसकी आवाज भी सुनायी पड़ जाती।

जो सबसे पीछे बैठे हुए थे वे अपनी अपनी गरदन ऊँची कर करके आगे की तरफ देखने की कोशिश कर रहे थे।

सुलतान ने हुकुम दिया कि सन्दूकचियाँ खोली जायें तो उन सन्दूकचियों को तो हाथ से खोलने की जरूरत ही नहीं पड़ी वे अपने आप ही खुल गयीं।

जो सन्दूकची उमर के हाथ में थी उसमें मखमल का एक तकिया रखा था एक ताज रखा था और उसके साथ में एक राज दंड रखा हुआ था। लाबाकन की सन्दूकची में एक बड़ी सी सुई और लिनन का धागा रखा हुआ था।

सुलतान ने दोनों से कहा कि वे अपनी अपनी सन्दूकचियाँ उसके पास ले कर आयें। उसने सन्दूकची में से छोटा सा ताज निकाला और उसको अपने हाथ में ले कर देखा तो वह एक छोटा सा बड़ा सुन्दर ताज था।

उसके हाथ में आ कर वह ताज बड़ा होना शुरू हो गया और वह तब तक बड़ा होता रहा जब तक कि वह एक सामान्य ताज के बराबर नहीं हो गया।

सुलतान ने उस ताज को अपने बेटे उमर के सिर पर रख दिया। उमर ने सुलतान के सामने सिर झुकाया सुलतान ने उसका

माथा चूमा और उसको अपने साथ अपने दॉये हाथ पर बैठने के लिये कहा।

उसके बाद वह लाबाकन की तरफ घूमा और बोला — "एक पुरानी कहावत है "जूते बनाने वाले तुम अपना ही काम करो तो बेहतर है।" ऐसा लगता है कि तुम अपनी सुई ही इस्तेमाल करो।

तुमने मुझसे दया पाने का कोई काम तो किया नहीं है पर आज के दिन एक चीज़ ने मुझे इतना खुश किया है कि आज के दिन मैं किसी को कुछ मना नहीं कर सकता। इसलिये मैं तुम्हें तुम्हारी ज़िन्दगी वापस देता हूँ। अगर तुम मेरी सलाह मानो तो मेरा यह देश तुरन्त ही छोड़ दो।"

यह सुन कर दरजी को बहुत शरम आयी वह तो बिल्कुल नष्ट ही हो चुका था। वह राजकुमार के पैरों पर गिर पड़ा और उसकी ऑखों में ऑसू आ गये।

वह बोला — "राजकुमार क्या आप मुझे माफ कर सकते हैं?"

उमर ने उसे ऊपर उठाते हुए कहा — "दोस्त के लिये सच्चा होना और दुश्मन पर दयालु होना अबसीडे[103] के लिये गर्व की बात है। जाओ आराम से जाओ।"

बूढ़ा सुलतान चिल्लाया — "ओह तुम ही मेरे सच्चे बेटे हो।" वह उसकी बातों से बहुत प्रभावित था। वह उमर की छाती से लग गया।

---

[103] Abassidae – name of the Prince

सब अमीर बाशौ राज्य के दूसरे कुलीन लोग खुशी मनाते हुए नये राजकुमार का स्वागत करने अपनी अपनी सीटों से उठे। इस बीच लाबाकन अपनी सन्दूकची सँभाले हुए कमरे में से बाहर निकल गया।

वह सुलतान की घुड़साल में गया अपने घोड़े मूर्वा पर साज सजाया और उस पर सवार हो कर अलैक्ज़ैन्ड्रिया की तरफ चल दिया। राजकुमार की तरह से बिताये गये उसकी जिन्दगी के ये दिन उसको एक सपना सा लगे। और वह शानदार सन्दूकची जो हाथी दाँत की बनी हुई थी और जिस पर सोने और मोती का काम किया गया था केवल वही उसकी गवाह थी वे दिन सपना नहीं थे।

अलैक्ज़ैन्ड्रिया पहुँच कर वह अपने पुराने मालिक के पास पहुँचा। घोड़े से उतर कर उसने अपने घोड़े को दरवाजे से बाँधा और अपने काम करने की जगह गया।

मास्टर ने उसको पहचाना भी नहीं था उसको नीचे तक झुक कर आदाब किया और उससे पूछा कि वह क्या चाहता है। पर जब उसने अपने मेहमान को पास से देखा तब उसको पहचाना कि अरे वह तो उसका पुराना दरजी लाबाकन था।

उसने अपने सब प्रशिक्षित और सीखने वाले दरजियों को बुलाया तो सब वहाँ पागलों की तरह से दौड़े चले आये।

अब लाबाकन ने अपने ऐसे स्वागत की तो सपने में भी कल्पना नहीं की थी। वे लोग उसको अपनी इस्तरियों गजों आदि से मार रहे

थे सुइयों से बेध रहे थे कैंचियॉ चुभो रहे थे जब तक वह थक कर पुराने कपड़ों के ढेर पर नीचे नहीं गिर पड़ा।

जब वह वहॉ पड़ा हुआ था तभी मास्टर उसको मारते मारते एक पल के लिये रुक गया। उसने उससे पूछा कि उसकी दूकान से जो कपड़े चोरी हुए थे वे कहॉ थे। लाबेकन ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की कि वह तो इसी वजह से मास्टर के पास अकेला ही आया है।

उसने मास्टर को उसके नुकसान के हरजाने के तौर पर तीन गुना पैसे देने की भी कोशिश की पर सब बेकार। वे सब उसके ऊपर फिर टूट पड़े। उसको बुरी तरह से पीटा और दरवाजे में से बाहर निकाल दिया।

शरीर में दर्द और घायल हुआ लाबेकन अपने घोड़े मूर्वा पर चढ़ा और वहॉ से चल दिया। उस पर भी वह अपना सिर लटकाये ही पड़ा रहा। वहॉ से वह एक कारवॉ रुकने की जगह आ गया। वहॉ आ कर भी वह बहुत देर तक चुपचाप पड़ा रहा।

धरती पर रहने पर बहुत सारी समस्याऐं थीं किसी के साथ अच्छा करने पर भी उसका बदला अच्छा नहीं मिलता था। यह सब सोच कर उसने बड़े आदमी बनने के अपने सारे सपने देखने छोड़ दिये और सो गया।

अगले दिन भी उसने अपना इरादा नहीं बदला क्योंकि अपने मास्टर और दूसरे दरजियों के भारी हाथों ने उसके मन से अच्छाई के सब विचार निकाल दिये थे।

उसने अपनी सन्दूकची अच्छी कीमत पर बेच दी और अपने काम के लिये एक वर्कशाप खोल ली। जब उसने अपनी वर्कशाप में सब कुछ इकट्ठा कर लिया तब उसने अपनी खिड़की के सामने एक बोर्ड लगाया जिस पर लिखा था "लाबाकन सौदागर दरजी"।

वह वहाँ बैठ गया और अपनी सन्दूकची में उसको जो सुई धागा मिला था उससे काम करने लगा। सबसे पहले उसने अपना कोट सिला जिसे उसके मालिक ने उसे पीट पीट कर फाड़ दिया था।

उसको काम छोड़ कर कुछ देर के लिये जाना पड़ा पर लौट कर आ कर वह क्या ही आश्चर्यजनक दृश्य देखता है कि सुई बड़ी मेहनत से काम कर रही थी बिना किसी के छुए अपने आप। वह जो टाँके लगा रही थी वह बहुत सुन्दर और साफ थे। ऐसे टाँके तो लाबाकन अपने इतने होशियार हाथों से कभी भी नहीं लगा सकता था।

परी की यह छोटी सी भेंट सचमुच उसके लिये कितनी कीमती और फायदेमन्द थी। इनके अलावा भी इस भेंट में खास बात यह थी कि यह सुई बहुत सारा काम करती और उसका धागा भी कभी खत्म नहीं होता।

लाबाकन के पास अब बहुत सारे ग्राहक आने लगे और वह मीलों दूर तक प्रसिद्ध हो गया। अब वह कपड़े काटता और बस उसमें पहला टॉका भरता बस उसके बाद तो सुई अपना काम करती रहती बिना रुके हुए जब तक कि वह कपड़ा पूरा नहीं सिल जाता।

अब शहर के सारे लोग लाबाकन से ही कपड़े सिलवाते क्योंकि उसका काम सुन्दर होता उसकी कीमत भी सस्ती होती। पर अलैक्ज़ैन्ड्रिया के लोगों को एक परेशानी थी कि इतना सारा काम वह बिना साथी दरजियों के और बन्द कमरे में कैसे करता था।

इस तरह उस सन्दूकची से उसकी किस्मत बदल गयी और उसके पास बहुत सारी सम्पत्ति हो गयी। किस्मत और सम्पत्ति दोनों उसके हाथ आ गयी।

जब वह नौजवान सुलतान उमर की तारीफ सुनता जिसकी हर आदमी तारीफ करता वह जब भी यह सुनता कि इस आदमी को बहुत सारे लोग बहुत प्यार करते हैं यह दुश्मनों के लिये एक डर है तब भी वह यही सोचता कि अच्छा रहा कि मैं दरजी ही रहा क्योंकि इज़्ज़त और प्रसिद्धि में तो खतरा बहुत है।

इस तरह लाबेकन अपने आप से सन्तुष्ट रहा अपने साथियों से इज़्ज़त पाता रहा। और उसकी सुई ने अगर अपनी चालाकी न छोड़ दी हो तो वह अभी उस खत्म न होने वाले धागे से बराबर सिल रही होगी।

कहानी कहते सुनते रात हो आयी थी सो कारवाँ अपनी अगली यात्रा के लिये तैयार हो गया। जल्दी ही वह बिरकिट अल हद[104] यानी तीर्थ यात्रियों के फव्वारे पहुँच गया। वहाँ से कैरो का रास्ता केवल तीन लीग था।

लोग कारवाँ के इसी समय पहुँचने की आशा कर रहे थे। सौदागर लोग बहुत खुश थे कि वे अब अपने दोस्तों को उनसे मिलने के लिये शहर से आते हुए देखेंगे।

वे बेबैल फाल्च गेट[105] से अन्दर घुसे क्योंकि उस गेट से शहर में घुसना उनके लिये अच्छा शगुन माना जाता था जो मक्का की तरफ से यहाँ आते थे क्योंकि धर्मदूत मुहम्मद साहब खुद इसी गेट से घुसे थे।

बाजार में पहुँच कर चार तुर्क सौदागरों ने अजनबी और यूनानी सौदागर ज़ाल्यूकोस से विदा ली और अपने दोस्तों के साथ चले गये।

ज़ाल्यूकोस ने अपने साथी को एक अच्छी सी सराय दिखायी और अपने साथ खाना खाने के लिये बुलाया। अजनबी राजी हो गया और बोला कि वह अभी अपने कपड़े बदल कर आता है।

---

[104] Birkit-el-Had

[105] Bebel Falch Gate

यूनानी ने उसका मन बहलाने के लिये बहुत सारा इन्तजाम कर रखा था क्योंकि इस यात्रा में उसको अजनबी के लिये कुछ प्यार पैदा हो गया था।

जब मॉस और शराब तरीके से वहॉ लाये गये तो वह अपने मेहमान का स्वागत करने के लिये बैठ गया। तभी उसने गैलरी में से आती धीमे और भारी कदमों की आहट सुनी जो उसके कमरे की तरफ आ रही थी।

वह एक दोस्त की तरह से उससे मिलने के लिये कमरे की देहरी तक आगे बढ़ा पर आने वाले को देख कर तो वह डर के मारे जम सा गया। वह तो वही लाल शाल वाला आदमी अन्दर चला आ रहा था जिसकी वजह से उसने अपना हाथ खोया था।

पहले तो उसे देख कर उसे कुछ शक हुआ पर जब उसने दोबारा अपनी ऑखें फाड़ कर उसे देखा तो उसका शक दूर हो गया।

यह तो वही बड़ी सी शक्ल वही नकली चेहरा जिसमें से उसकी काली ऑखें चमक रही थीं सोने से कढ़ा हुआ लाल शाल – इन सबको तो वह बहुत अच्छी तरह जानता था। उसकी ज़िन्दगी के कई पल उसकी इस शक्ल से ढके हुए थे।

उसको देख कर ज़ाल्यूकोस की छाती तो बुरी तरह से धड़कने लगी। वह बहुत दिनों से इस बात को भूले हुए था और उसको

माफ भी कर दिया था पर उसके इस अचानक प्रगट होने ने उसके घावों को कुरेद कर फिर से हरा कर दिया।

उसको अपने दुख और गुस्से का हर पल याद आ गया था जिसने उसकी ज़िन्दगी के खिलते हुए फूल को मसल कर रख दिया था। एक पल को उसे उसकी वे सारी बातें याद आ गयीं।

यूनानी चिल्लाया — "अब तुम्हें क्या चाहिये।" आने वाला अभी भी दरवाजे पर ही खड़ा था। "चले जाओ तुम मेरी नजरों से दूर चले जाओ कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें कोई शाप दे दूँ।"

नकली चेहरे के पीछे से एक जानी पहचानी आवाज आयी — "ज़ाल्यूकोस। क्या तुम अपने मेहमान का इसी तरह स्वागत करते हो?"

कह कर आने वाले ने अपना नकली चेहरा हटाया अपना शाल पीछे फेंका तो ज़ाल्यूकोस ने देखा कि वह तो उसका दोस्त सलीम बरूच खड़ा था – वही अजनबी जो सारी यात्रा में उनका दिल बहलाता चला आ रहा था।

पर ज़ाल्यूकोस अभी भी अजनबी से खुश नहीं था क्योंकि उसको उसमें अभी भी पौन्टे वैचियो पुल[106] का अजनबी नजर आ रहा था। फिर भी उसकी अपनी मेहमानदारी की आदत जीत गयी। उसने चुपचाप उसको अपने साथ मेज पर बैठने का इशारा किया।

---

[106] Ponte Vechhio Bridge

जब वे मेज पर बैठ गये तो अजनबी बोला — “मैं तुम्हारे विचार अच्छी तरह समझ सकता हूँ। तुम्हारी ऑखें मुझसे कुछ पूछ रही हैं। मैं इस बारे में चुप भी रह सकता था और फिर तुम मुझे दोबारा कभी नहीं देख पाते पर मैं तुम्हें सफाई देने का जिम्मेदार हूँ इसी लिये मैंने तुमको अपना यह पुराना रूप दिखाने की हिम्मत की। यहॉ तक कि तुम्हारा शाप लेने का खतरा मोल लेने की भी हिम्मत की।

तुमने एक बार मुझसे कहा था “मेरे पुरखों का विश्वास मुझसे कहता है कि मैं उससे प्यार करूँ।” और शायद वह मुझसे ज़्यादा नाखुश हो जितना नाखुश कि मैं उससे हूँ। तुम इस बात का यकीन रखो मेरे दोस्त और मेरी सफाई सुन लो।

मैं यह बात बहुत पुराने समय से शुरू कर रहा हूँ ताकि तुम इस कहानी को ठीक से समझ सको। मैं एक ईसाई परिवार में अलैक्ज़ैन्ड्रिया में पैदा हुआ था। मेरे पिता एक बहुत बड़े फ्रांसीसी परिवार के सबसे छोटे बेटे थे। वह वहॉ की अलैक्ज़ैन्ड्रिया कौन्सुलेट में काम करते थे।

जब मैं 10 साल का हो गया तो मैं फ्रांस चला गया। वहॉ मेरी मॉ के एक भाई ने मुझे पाला पोसा। जब वहॉ क्रान्ति छिड़ी तो उसके कुछ साल बाद पहली बार अपने मामा के साथ मैंने फ्रांस भी छोड़ दिया क्योंकि वह अपनी पुरखों की जमीन पर सुरक्षित नहीं थे। हम मेरे माता पिता के पास समुद्र पार चले गये।

हम मेरे माता पिता के पास इस आशा से गये थे कि हम वहाँ शान्ति से रह पायेंगे जो हमें फ्रांस में नहीं मिल पायी थी। पर मेरे पिता के घर में वह सब नहीं मिला जो हमें मिलना चाहिये था।

यह तो ठीक है कि बाहरी तूफान उनके घर तक नहीं पहुँच पाये थे पर वहाँ मुझे अचानक ही एक ऐसी बदकिस्मती देखने को मिली जो हमारे दिलों में घर कर गयी थी।

मेरे भाई ने जो एक होशियार नौजवान था मेरे पिता का पहले नम्बर का सेक्रेटरी[107] था कुछ दिन पहले ही एक नौजवान लड़की से शादी कर ली थी। वह लड़की फ्लोरैन्स[108] के एक कुलीन आदमी की बेटी थी जो हमारे पड़ोस में ही रहता था।

हमारे आने से दो दिन पहले ही वह कहीं गायब हो गयी थी और न तो हमारा परिवार और न ही उसके पिता उसका कोई अता पता पा सके थे।

आखिर वे इस नतीजे पर पहुँचे कि शायद वह हिम्मत करके कहीं बहुत दूर घूमने चली गयी है और डाकुओं के चंगुल में फँस गयी है। मेरे भाई का भी यही ख्याल था जबकि जो कुछ सच था वह बहुत जल्दी ही सामने आ गया।

वह लड़की एक नपोली[109] के रहने वाले के साथ भाग गयी थी जिसको वह अपने पिता के घर से ही जानती थी। अपनी पत्नी के

---

[107] First Secretary

[108] Florence is a big city in Italy.

[109] Napoli is a coastal city on the South-West coast of Italy

यह कदम उठाने से मेरा भाई बहुत परेशान था। वह उस अपराधी को किसी भी कीमत पर लाने के लिये तैयार था ताकि वह उसे उस अपराध की सजा दे सके।

पर उसकी सब कोशिशें बेकार जा रही थीं। उसकी कोशिशों ने फ्लौरैन्स और नपोली दोनों में हलचल मचा रखी थी। इससे हमारी बदकिस्मती में बढ़ोत्तरी ही हो रही थी।

फ्लौरैन्स वाला आदमी यानी मेरे भाई की पत्नी का पिता यह बहाना बना कर फ्लौरैन्स लौटा कि वह मेरे भाई को न्याय दिलवायेगा पर सच में उसका इरादा था कि वह हम सबको नष्ट कर देगा।

उसने उन सब जॉचों को रुकवा दिया था जो मेरे भाई ने करवायी थीं या करवाने जा रहा था। वह काफी प्रभावशाली भी था और उसको अपना प्रभाव भी इस्तेमाल करना आता था जिसको उसने बहुत तरीकों से हासिल किया था।

उसने उनको इस तरह से इस्तेमाल किया कि मेरे पिता और भाई उसकी सरकार के शक के घेरे में आ गये। उनको शर्मनाक तरीके से पकड़ लिया गया और फिर फ्रांस ले जाया गया। वहॉ ले जा कर उनको उनके सजा देने वाले ने कुल्हाड़ी से मार दिया।

मेरी मॉ बेचारी तो अपना दिमाग ही खो बैठी। दस महीने के अन्दर अन्दर वह भी अपनी खराब परिस्थिति से आजाद हो कर चल

बसी। हालाँकि अपने आखिरी कुछ दिनों में वह पूरी तरह से होश में थी।

इस तरह अब मैं दुनियाँ में अकेला रह गया था। मेरे दिमाग में अब केवल एक विचार ही घूम रहा था और उस विचार की वजह से मैं अपने सारे दुख भूल गया था। यह वह आग थी जो मेरी माँ अपने अन्तिम समय में मेरे दिल में लगा गयी थी।

अपने आखिरी दिनों में जैसा कि मैंने तुम्हें बताया कि उसको याद आ गयी थी। उसने मुझे अपने पास बुलाया और मेरी किस्मत और अपनी मौत से समझौता करते हुए मुझसे कहा।

उसने सबको कमरे से बाहर भेज दिया और बिस्तर से उठते हुए कहा कि अगर जो कुछ भी वह मुझसे कहेगी वह मैं करूँगा तो वह मुझे हमेशा आशीर्वाद देती रहेगी।

मैं अपनी मरती हुई माँ के शब्द सुन कर चौंक गया। तब उसने मुझे उस फ्लोरैन्स वाले आदमी और उसकी बेटी के बारे में बताया और कहा कि अगर मैं अपने परिवार पर आयी हुई बदकिस्मती का बदला उससे नहीं लूँगा तो मुझे उसका बहुत बुरा शाप लगेगा। और वह मेरी बाँहों में मर गयी।

बदला लेने का यह विचार मेरी आत्मा पर बहुत दिनों तक सोता रहा पर अब यह अपनी पूरी ताकत के साथ जाग गया था। जो कुछ भी पैसा मेरे पास बचा था वह और अपनी बदला लेने की

कसम को साथ ले कर, बजाय इसके कि मैं असफल होऊँ, मरने मारने के लिये निकल पड़ा।

मैं फ्लोरैन्स आया और वहाँ जितना हो सकता था उतना छिप कर रहने लगा। मुझे अपना प्लान काम में लाने के लिये बहुत मुश्किल उठानी पड़ी क्योंकि मेरे दुश्मन की हैसियत बहुत ऊँची थी।

वह बूढ़ा फ्लोरैन्स का आदमी अब गवर्नर बन चुका था और अगर उसको ज़रा सा भी शक हो जाता तो अब उसके पास मुझे मारने के सब साधन थे।

अचानक हुई एक घटना मेरे काम आयी। एक शाम को मैंने सड़क पर एक आदमी जाते देखा जिसकी यूनीफौर्म को मैं पहचानता था। उसकी बहकी बहकी सी चाल उसका उदासी भरा चेहरा उसके "सैन्टो सैक्रामैन्टो" और "मालेडिटो डाइवोलो"[110] बड़बड़ाने से मैं उसे जल्दी ही पहचान गया वह तो बूढ़ा पैट्रो[111] था।

पैट्रो फ्लोरैन्स के आदमी का नौकर था जिससे मैं अलैक्ज़ैन्ड्रिया में मिला था। इसमें कोई शक नहीं था कि वह अपने मालिक को बहुत प्यार करता था। मैंने सोच लिया कि मैं उसके इस भाव को अपने फायदे के लिये इस्तेमाल करूँगा।

मैं उसके पास तक गया तो वह मुझे वहाँ देख कर बहुत आश्चर्यचकित हो गया। उसने मुझसे अपना दुखड़ा रोया और बोला

---

[110] Santo Sacramento, and Maledetto Diavolo

[111] Pietro

कि उसका मालिक जबसे गवर्नर बना है तबसे वह उसके लिये कुछ भी ठीक से नहीं कर पा रहा है।

मेरा सोना और उसका गुस्सा दोनों ने मिल कर उसे मेरी तरफ कर दिया। अब मेरी बहुत सारी मुश्किलें खत्म हो गयी थीं। अब एक आदमी मेरी तरफ था जो मेरे दुश्मन के दरवाजे मेरे लिये कभी भी खोल सकता था। इस समय से अब मेरा प्लान ठीक से और ज़्यादा जल्दी जल्दी बनने लगा।

जब मैं अपने पूरे परिवार की मौत को उसकी मौत से तुलना करता तो फ्लोरैन्स के आदमी की ज़िन्दगी पर अब मुझे दया आने लगती। मैंने सोचा इससे पहले कि वह मरे मरने से पहले उसको उसकी सबसे प्रिय चीज़ जरूर दिखनी चाहिये – और वह थी उसकी बेटी बिआन्का[112]।

और यही वह थी जिसने बेशरमी के साथ मेरे भाई के साथ गलत काम किया था। यही वह थी जिसने हमारी बदकिस्मती लिखी थी। मेरा दिल उससे बदला लेने के लिये बहुत बेचैन हो रहा था। तभी मुझे पता चला कि बिआन्का अब दूसरी बार शादी करने जा रही थी। बस अब तो यह पक्का हो गया था कि अब तो उसको मरना ही है।

---

[112] Bianca – name of the daughter of Florence man.

पर जब मेरी आत्मा ने इस काम के बारे में सोचा तो मैंने पैट्रो को भी इस बारे में सोचने के लिये कहा। हम अपना यह काम पूरा करने के लिये एक आदमी को ढूँढ रहे थे।

अब मैं फ्लोरैन्स के किसी आदमी को तो किराये पर ले नहीं सकता था क्योंकि वहाँ पर ऐसा कोई नहीं था जो गवर्नर के खिलाफ ऐसा कोई काम कर सके। पैट्रो के दिमाग में इस काम के लिये एक प्लान आया जिसे मैंने बाद में अपना लिया।

उसने तुम्हारा नाम सुझाया क्योंकि तुम वहाँ विदेशी थे और साथ में डाक्टर भी थे इसलिये तुम ही ठीक आदमी थे जो मेरा यह काम ठीक से कर सकता था।

बाकी की कहानी तो तुमको मालूम ही है। केवल तुम्हारी अक्लमन्दी और ईमानदारी की वजह से मेरा यह काम मुझे बिगड़ता नजर आया इसी लिये मुझे शाल का दृश्य बनाना पड़ा।

पैट्रो ने हमारे लिये गवर्नर के महल का छोटा वाला दरवाजा खोला। अगर हम दरवाजे की झिरी में से वह भयानक दृश्य देख कर वहाँ से भाग नहीं गये होते तो वह हमको बाहर भी निकाल सकता था। डर के मारे मैं वहाँ से करीब **200** कदम दूर भाग गया और जा कर एक चर्च की सीढ़ियों पर ही आराम किया।

वहाँ पहुँच कर जब मैं कुछ सँभला तो मुझे सबसे पहले तुम्हारा ख्याल आया कि अगर तुमको किसी ने घर में देख लिया तो तुम पर क्या बीत रही होगी।

मैं तुरन्त ही महल की तरफ चल दिया पर वहॉ पहुॅचा तो न तो मुझे तुम दिखायी दिये और न पैट्रो। दरवाजा खुला पड़ा था। मैं बस यही मनाता रहा कि तुमने यहॉ से भाग जाने का यह मौका नहीं छोड़ा होगा।

पर जब अगले दिन सुबह हुई तो कुछ तो डर के मारे कुछ शरम के मारे मैं फ्लोरैन्स में रहने की हिम्मत नहीं कर सका। मैं वहॉ से रोम[113] भाग गया।

अब ज़रा मेरी चिन्ता का अन्दाज लगाओ जब कुछ दिन बाद ही मैंने यह कहानी हर जगह सुनी और साथ में यह भी कि एक यूनानी डाक्टर के रूप में कातिल का भी पता चल गया है।

मैं फिर डर गया और चिन्तित हो गया। मैं वहॉ से भाग कर फिर फ्लोरैन्स आ गया। मेरी बदले की भावना और बढ़ती जा रही थी। मैंने अपनी उस भावना को बहुत बुरा भला कहा क्योंकि तुम्हारी ज़िन्दगी दे कर तो यह मुझे बहुत ही मॅहगी पड़ रही थी। मैं उसी दिन वापस आया था जिस दिन तुम्हारा हाथ काटा गया था।

मैं तुम्हें यह नहीं बताऊॅगा कि मुझे उस समय कैसा लग रहा था जब मैंने तुम्हें यह सब बहादुरी के साथ सहते हुए देखा पर जब मैंने तुम्हारे हाथ से खून बहते देखा मैंने तभी सोच लिया था कि मैं और तकलीफ नहीं सहने दूॅगा। तुम्हारी ज़िन्दगी खुश कर दूॅगा।

[113] Rome – capital of Italy

उस दिन से आज तक जो कुछ हुआ है वह तुम जानते ही हो। बस अब तुमसे मुझे केवल यही कहना बाकी है कि मैंने तुम्हारे साथ यह यात्रा क्यों की।

मेरा यह सोचना कि तुम मुझे कभी माफ नहीं करोगे मेरे ऊपर एक बोझ बना हुआ था। मैंने निश्चय किया कि मैं कुछ दिन तुम्हारे साथ रह लूँ और फिर आखीर में मैं तुम्हें यह बता दूँगा कि यह सब मैंने क्यों किया।"

यूनानी डाक्टर चुपचाप बैठा अपने मेहमान की बातें सुनता रहा और उसकी तरफ दया की दृष्टि से देखता रहा। जैसे ही उसने अपनी कहानी सुनायी तो उसने उसकी तरफ अपना दायाँ हाथ बढ़ा दिया और बोला — "मुझे अच्छी तरह मालूम था कि मुझसे ज़्यादा तुम दुखी होगे क्योंकि उतना बुरा काम करने के बाद उसके काले बादल तुम्हारी ज़िन्दगी पर हमेशा छाये रहेंगे। मैं तुम्हें दिल से माफ करता हूँ।

पर मेरे एक सवाल का जवाब और दो कि तुम यहाँ इस वेश में इस जंगल में आये कैसे? कौन्स्टैन्टिनोपिल में मेरा मकान खरीदने के बाद तुमने क्या निश्चय किया।"

मेहमान अजनबी बोला — "वहाँ से फिर मैं अलैक्ज़ैन्ड्रिया लौट गया। मैं सारी मनुष्य जाति से नफरत करने लगा खास करके उन लोगों से जो अपने आपको सभ्य देश का कहते हैं। मेरा विश्वास करो मेरे मुस्लिम दोस्त मुझे ज़्यादा अच्छे लगते हैं।

मैं अलैक्ज़ैन्ड्रिया में केवल एक महीना ही था कि मेरे देश वालों ने वहाँ हमला कर दिया। मुझे उन सबमें केवल अपने पिता और भाई की मौत के हत्यारे ही दिखायी देते थे।

सो मैंने अपनी जान पहचान के कुछ लोग इकट्ठे किये जो मेरी तरह सोचते थे और उन मामेल्यूकों से जा कर मिल गया जो फ्रांसीसी लोगों के लिये एक डर थे।

जब कैम्पेन खत्म हो गया तो मैं यह निश्चय नहीं कर सका कि मैं शान्ति की तरफ लौट जाऊँ या क्या करूँ। मैं अपने थोड़े से दोस्तों के झुंड के साथ बहुत ही लापरवाही और बेचैनी की ज़िन्दगी जीने लगा।

मैं लोगों के पीछे भागता रहता। मैं उन लोगों के साथ सन्तुष्ट रहता हूँ जो मुझे अपना सरदार मानते हैं। हालाँकि मेरे एशिया वाले दोस्त इतने अच्छे व्यवहार वाले नहीं हैं जितने कि यूरोप के रहने वाले हैं पर फिर भी वे जलन स्वार्थ और ऊँची ऊँची इच्छाओं से दूर रहते हैं।

ज़ाल्यूकोस उसका यह हाल सुन कर बहुत खुश हुआ पर उसने उससे यह नहीं छिपाया कि अगर वह यूरोप की जमीन पर ईसाइयों के लिये काम करेगा तो वह जिस स्तर और शिक्षा का आदमी है उससे तो उसको बहुत अच्छे अच्छे काम मिल जायेंगे। यह सुन कर अजनबी ने ज़ाल्यूकोस की तरफ खुशी से देखा।

वह बोला — "यह जो अभी तुमने मुझसे कहा है इससे मुझे पता चल रहा कि तुमने मुझे बिल्कुल माफ कर दिया। कि तुम मुझे प्यार करते हो। मैं तुम्हें इसके लिये दिल से धन्यवाद देता हूँ।"

कह कर वह यूनानी के सामने तन कर खड़ा हो गया। इससे यूनानी को लगा जैसे वह लड़ने के मूड में हो उसकी काली काली ऑखें और गहरी आवाज से वह डर गया।

वह आगे बोला — "तुम्हारी इस सलाह को मैं तुम्हारी मेहरबानी समझ कर स्वीकार करता हूँ। किसी दूसरे को यह सलाह लुभा सकती है पर मैं इसको स्वीकार नहीं कर सकता।

मेरे घोड़े पर हमेशा जीन कसी रहती है मेरे नौकर हमेशा मेरे हुकुम के इन्तजार में रहते हैं। विदा ज़ाल्यूकोस।"

दो दोस्त जिनकी किस्मत ने एक दूसरे को एक दूसरे के साथ ला कर पटक दिया था विदा लेने पर एक दूसरे से गले मिले। ज़ाल्यूकोस बोला — "अच्छा मेरे दोस्त मुझे यह तो बताओ मैं तुम्हें किस नाम से पुकारूँ। मेरे मेहमान का नाम क्या है जो हमेशा मेरी यादों में रहेगा।"

अजनबी कुछ देर तक तो उसकी तरफ घूरता रहा फिर एक बार फिर से उसका हाथ दबाते हुए बोला — "लोग मुझे जंगलों का राजा[114] कहते हैं। मैं डाकू ओरबासन हूँ।

[114] Translated for the words "Lord of the Wilderness".

Published Books by Sushma Gupta

To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 रैवन की लोक कथाऐं — प्रभात प्रकाशन
7 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट
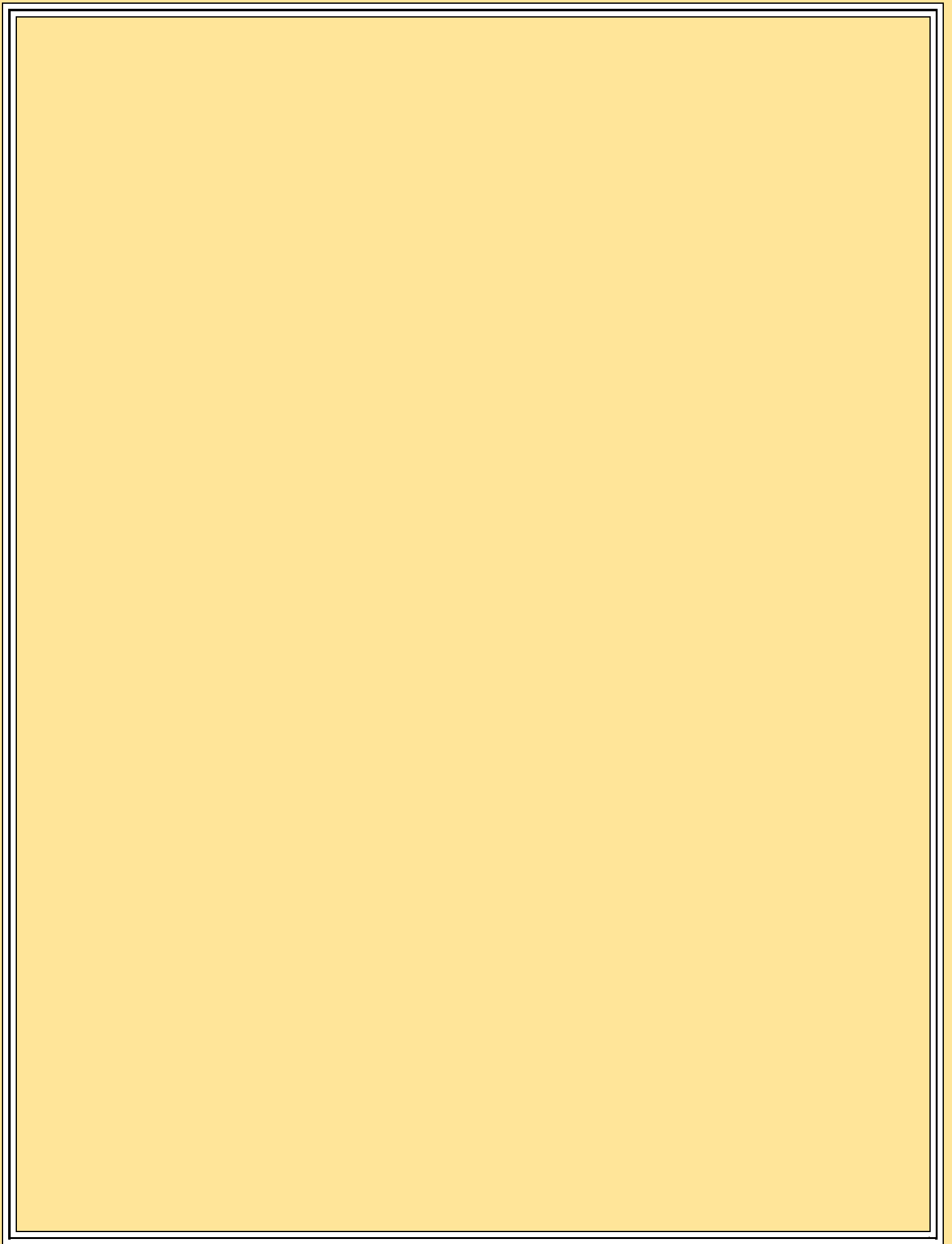
लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में —

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. 1901. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। 1901। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी 2019

2. Serbian Folklore. Tr by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. 1874. 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता।
जनवरी 2019

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी 2019

4. Folktales of Bengal. By Rev Lal Behari Dey. 1889. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं —1889। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। जनवरी 2019

5. Russian Folk-Tales. By Alexander Nikolayevich Afanasief. 1889. 64 tales.
Tr by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। 1916। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता।
जनवरी 2019। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian. By Verra de Blumenthal. 1903. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। 1903। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी 2019

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales. Collected and Edited by Nelson Mandela. 2002. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। 2002। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी 2019

8. Fourteen Hundred Cowries. By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फ़ूजा अबायोमी। 1962। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी 2019

9. Il Pentamerone. By Giovanni Battiste Basile. 1893. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियोवानी बतिस्ते बासिले। 1893। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी 2019

10. Tales of the Punjab. By Flora Annie Steel. 1894. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। 1894। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी 2019। दो भाग

11. Folk-tales of Kashmir. By James Hinton Knowles. 1887. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। 1887। हिन्दी अनुवाद — सुषमा गुप्ता। जून 2019। चार भाग

12. African Folktales. By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. 1998. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्द्रो सैनी। **1998**। हिन्दी अनुवाद — सुषमा गुप्ता। जून **2019**

13. Orphan Girl and Other Stories. By Offodile Buchi. 2001. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2001**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जून **2019**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories. By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. 1947. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **1947**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जून **2019**

15. Folktales of Southern Nigeria. By Elphinston Dayrell. London : Longmans. 1910. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **1910**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जून **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental. By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889. 13 tales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **1889**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जून **2019**

17. The Oriental Story Book. By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. 1855. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **1855**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जून **2019**

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on June, 2019

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2018** तक इनकी **2000** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
जून **2019**